कालिदास के प्रेमदूत

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

मोबाइल एसएमएस की गति व महिमा देख कर महाकवि कालिदास ने अपने सुस्त दूत मेघ को बदलने की ठान ही ली।

कालिदास ने अपने विरही संदेश ले जाने के लिए आकाश में घुमड़ रहे मेघों की ओर देखा। कालिदास ने ज्यों ही मेघ से दूत बनने का आग्रह किया, वह सविनय बोला, ''हे कविश्रेष्ठ, पेट्रोल, डीजल और फैक्टरी के धुएं के कारण मेरे नेत्र अनवरत बहते रहते हैं। आज मेरी गति और दिशा भी प्रकृति द्वारा निर्धारित नहीं होती। मेरे बूंद रूपी आंसुओं पर वर्तमान प्रेमी-प्रेमिका भरोसा करेंगे, यह भी नहीं कहा जा सकता। ऐसे में यदि आप मुझे अपनी विरह गाथा का दूत ना बनाएं, तो उचित है। ऐसा ना हो कि मेरे प्रेमदूत बनने से आपका महान ग्रंथ विवादों की श्रेणी में आ जाए।''

कालिदास ने वर्तमान परिस्थितियों का चिंतन किया और इस नतीजे पर पहुंचे कि इस युग में सफल होने के लिए जिस डाल पर आदमी बैठा हो, उसे काटने और ऊंट को उष्ट्र बोलने की आवश्यकता है।

उन्होंने नए दूत को ढूंढ़ने की लालसा में आसमान को निहारा। अचानक उन्हें अनेक सिगनल वायु प्रवाह की दिशा से बेखबर इधर-उधर तैरते नजर आए, वे आश्चर्यचकित हो पूछ बैठे, ''तुम किस माध्यम से इतनी तेज गति से संचरण कर रहे हो।''

कुछ सिगनल कालिदास की अवस्था पर द्रवित हो बोले, ''हे महाकवि, हम लोग वर्तमान युग के संदेशवाहक हैं और हमें *स म स* या *एसएमएस* के रूप में जाना जाता है, हमें संप्रेषित करनेवाले यंत्र का नाम मोबाइल है, जो विभिन्न सेवा प्रदाता कंपनियों के द्वारा उपलब्ध कराए गए सिगनल के आधार पर कार्य करता है। आज हमारे बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।'' कालिदास ने मोबाइल वंदना की और अनेक संदेशवाहक अपने ऑफर ले कर उपस्थित हो गए और कहने लगे, ''हे कविवर, आपकी नायिका की पीड़ा को विश्व के किसी भी कोने में पहुंचाना हमारे लिए गर्व व यश की बात होगी। हमें सेवा का अवसर तो दें, हम मेघों से अधिक प्रभावी ढंग से कार्य करेंगे।''

कालिदास उनके ऑफर से अभिभूत हुए। उन्होंने देशकाल, परिस्थिति के अनुसार मोबाइल को प्रेमदूत बनाया और कहा, ''हे मोंबाइल दूत, तुम मेरे प्रियतम तक यह संदेश ले कर जाओ कि उन्होंने पिछले वर्ष 14 फरवरी को अपना वेलेंटाइन चुना था, मुझसे प्रेमालिंगन किया था। उस अवसर पर पंचतारा होटल में पार्टी देने के बाद से अब तक उन्होंने मेरी खबर नहीं ली है। उनके वियोग में मैंने 15 दिनों से बर्गर नहीं खाया है, पिज्जा को हाथ लगाए मुझे 6 माह हो गए हैं। पिछली बार उन्होंने मेरी काया पर कमेंट किया था कि आज के युग में गजगामिनी होना सौंदर्य की पहचान नहीं है, सो उनसे कहना कि बिना जिम गए मात्र उनके वियोग की डाइटिंग में मेरा वेट 10 किलो कम हो गया है। यदि उन्हें मेरी स्मृति ना रहे, तो याद दिलाना कि किस तरह पिछली फरवरी में हम लोग लोदी गार्डन में एक-दूसरे का हाथ थामे विहार कर रहे थे और गार्ड से बचने के लिए उन्होंने पर्स से 50 का नोट निकाल कर दिया था। अंत में चलते समय वहीं की एक क्यारी, जिस पर फूल तोड़ना मना है कि तख्ती लगी थी, से एक गुलाब का फूल तोड़ कर उन्होंने मेरे बालों में लगाया था। वह फूल आज भी मेरे पर्स में सुरक्षित है।''

मोबाइल यंत्र से कालिदास की नायिका ने उपरोक्त एसएमएस भेजा ही था कि उसके यंत्र पर एक नए संदेश की सूचना हुई। उसका अपना पड़ोसी एमएमएस की वीडियो क्लिपिंग में उससे मुखातिब था—*हे मेरी प्रिया, तुम नित्य ही मेरे सपनों में आती हो, क्या प्रेम निवेदन स्वीकार करोगी।*

उसका हृदय रोमांच से भर गया, गाल सिहर उठे, यह तो उससे जूनियर है। उसने मन ही मन सोचा, 'यह मुझे प्रपोज कर रहा है। तो क्या वास्तव में मैं अपनी उम्र से कम दिखने लगी हूं?'

उधर कालिदास का नायक अपनी भूतपूर्व नायिका को भूल चुका था। मोबाइल संदेश और लोदी गार्डन में खर्च किए गए नोट, दिए गए गुलाब याद दिलाने के बाद भी वह उस नायिका को नहीं पहचान पा रहा था। कारण अब तक वह 20-25 गुलाब बांट चुका था और दरबान को देने के लिए हमेशा जेब में 50 के नोटों की नयी गड्डी रखता था। सो डेट और टाइम के अनुसार वह नायिका की पहचान अपने *एन सीरीज* के मोबाइल की एड्रेस बुक में खंगालने लगा। वह मोबाइल की एड्रेस बुक खंगाल ही रहा था कि उसने पाया उसके फोन पर कोई संदेश भेजने की कोशिश कर रहा है। उसने ब्लूटूथ ऑन किया। नए संदेश माध्यम से मोबाइल में फूलों का गुलदस्ता प्रवेश कर गया, नीचे संदेश बज रहा था—*फाइव स्टार जाएंगे, डीजे पर नाचेंगे, डिनर खाएंगे, बिल तुम चुका देना बस और क्या?*

नायक मुस्कराया संदेश स्वीकृत हुआ।

इसी तरह वर्तमान युग के अन्य प्रेमदूत मसलन ग्रीटिंग कार्ड, जोकर, शो पीस, वाल हैंगिंग्स, पेंटिंग, एमएमएस अनेक विरही और विरहणियों को मिलाने में लगे हैं। कालिदास नयी पीढ़ी के संदेशवाहकों की गति व सफलता देख अभिभूत हो उठे। उन्होंने *मेघदूतम* को नया रूप देने की ठान ली। ◆

रेखांकन : अर्चना

काहे को ब्याहे बिदेस

- मुरली मनोहर श्रीवास्तव

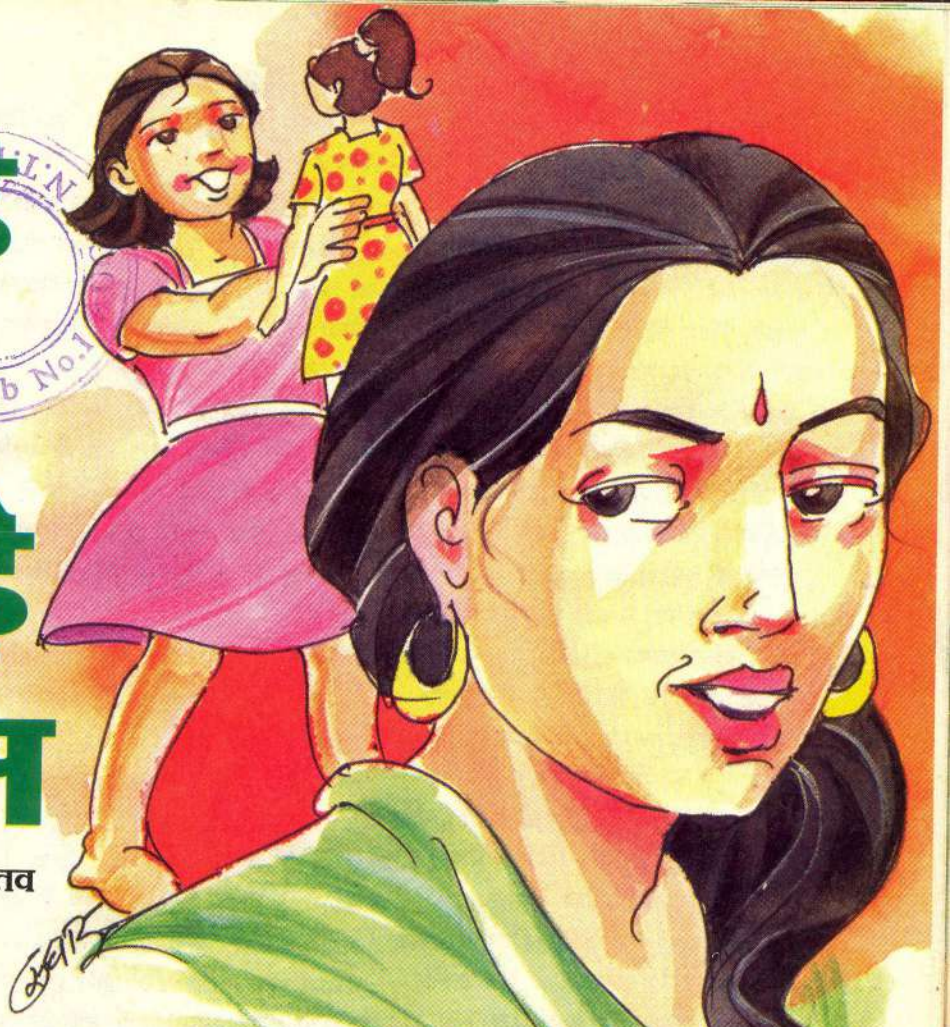

उसने खिड़की का पर्दा हटा कर देखा. नीचे बहुत से बच्चे खेल रहे थे. छोटी-सी पालकी सजी थी और नन्हें-नन्हें कंधे कहार बन उसे उठाए चले जा रहे थे. बच्चों की टोली ताली बजा-बजा कर गा रही थी- **लाली लाली डोलिया में लाली रे दुल्हनियां...**

उनके हंसने और खिलखिलाने की मीठी आवाज़ वातावरण में घुल कर उसे और मधुर बना रही थी. वह सोचने लगी, 'बचपन के दिन भी क्या दिन होते हैं और देखते ही देखते कब पंख लगा उड़ जाते हैं, पता ही नहीं लगता.'

वैसे भी किसी का बचपन उम्र बढ़ने के साथ भले ही गुज़र जाए, लेकिन उसके सीने में वह सदैव सांस लेता रहता है. ये दुनिया नहीं बदलती. धूप-छांव, चांद-सितारे, पेड़-पौधे जस के तस अपनी जग़ह खड़े रहते हैं और अपनी गति से चलते रहते हैं. वह तो हमारी उम्र कुछ इस तरह बढ़ जाती है कि बचपन की उमंग फिर जीवन में दिखाई नहीं पड़ती. तभी तो लड़खड़ा कर चलते हुए जिस तितली को देख बचपन में ताली बजाते थे या जिस लाल कीड़े को पकड़ कर उठाने को मचल उठते थे, बड़े होने पर उनके झुंड हमारे सामने से गुज़र जाते हैं और हमारी संवेदनाएं निर्विकार भाव से अपना काम करती रहती हैं. आजकल हमारी चेतना किसी ख़ास बड़ी घटना पर ही जागती है, वरना दिल में सात परतों में दफ़न रहती है.

अचानक नीचे शोर बढ़ गया. शायद बच्चों में लड़ाई हो गयी थी. वह हंसी, सचमुच लड़ाई बच्चों-सी ही होनी चाहिए. हम बड़े हो कर भी बच्चों की तरह लड़ते तो कम से कम कुछ देर के बाद गलबहियां डाल फिर से बातें तो करने लगते.

अचानक कॉलबेल बजी और उसने देखा, उसकी नन्हीं बिटिया पिंकी आंखें मलते और रोते हुए चली आ रही है. मां का स्पर्श सिर पर पाते ही उसकी हिचकी बंध गयी, "मम्मी

काहे को ब्याहे बिदेस अरे लखिया बाबुल होमे, हम तो बाबुल तोरे अंगना को बेलिया... अरे लखिया बाबुल मोहे... ईंट-गारे का मकान अपने साथ कौन ले कर जाएगा भला! शाहजहां भी ताजमहल यहीं छोड़ कर गया था. एक घर-आंगन में कोमल भावनाओं, स्मृतियों व अपनत्व की अनुभूति के सिवाय होता ही क्या है? उसकी आंखें झर-झर कर बहने लगीं. समाज के नियम बहुत क्रूर और कठोर होते हैं. उसे अनजाने ही बाबूजी याद आने लगे.

मैं मोहित को नहीं छोड़ूंगी.''

''क्या हुआ बेटा? क्या किया मोहित ने?'' उसने बेटी के बाल सहलाते हुए पूछा.

''मम्मी उसने मेरी गुड़िया ले ली और वापस नहीं दे रहा है. कह रहा है उसके गुड्डे ने मेरी गुड़िया की बिदाई करा ली है और वह उसी के घर रहेगी.''

वह हंसने लगी, ''ठीक ही तो कह रहा है मोहित, अगर उसने तुम्हारी गुड़िया की बिदाई करा ली, तो वह उसी के घर रहेगी. कोई बात नहीं बेटा, मैं तुम्हारे लिए दूसरी गुड़िया ला दूंगी.''

''नहीं मम्मी, मैं वही गुड़िया लूंगी और अगले हफ़्ते उसके गुड्डे को बिदा करा कर लाऊंगी, तब उसे पता चलेगा.''

वह और ज़ोर से हंसी, ''बेटा, गुड्डे की बिदाई करा कर घर में नहीं रखते.''

''क्यों मम्मी? अगर गुड़िया बिदा हो कर जा सकती है, तो गुड्डा क्यों नहीं? मैं गुड्डे को बिदा करा कर ही लाऊंगी.''

''बेटा, गुड्डे की बिदाई को अच्छा नहीं समझते.''

''क्यों अच्छा नहीं समझते?''

''अरे बाबा, इतनी-सी उमर और इतनी बड़ी-बड़ी बातें. जब तू बड़ी हो जाएगी, तब समझेगी.'' उसने फ्रिज से चॉकलेट निकाल कर बेटी को पकड़ाते हुए कहा.

पिंकी ताली पीट-पीट कर हंसने लगी और गाने लगी, ''हा, हा, गुड्डे की बिदाई नहीं होती.''

शाम को पापा घर लौटे तो उसने पापा के गले में बांहें डाल दीं, फिर बोली, ''पापा, आपकी बिदाई हुई थी.''

पापा हंसते हुए बोले, ''हां, हुई थी.''

वो बोली, ''पापा, आप झूठ बोलते हो! मम्मी कह रही थी कि गुड्डे की बिदाई नहीं होती.''

पापा हंसने लगे, ''बेटा, वो दूसरी बिदाई है.''

''पापा, ये दूसरी बिदाई क्या होती है?'' पिंकी ने पूछा.

''अच्छा देखो, मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूं.'' पापा ने हाथ में पकड़े हुए पैकेट से एक डिब्बा निकालते हुए कहा.

''ओ पापा, इतनी सुन्दर फ्रॉक. पापा, मेरी गुड़िया के लिए भी ऐसी ही फ्रॉक ला दोगे?''

''ला देंगे बेटा, लेकिन पहले हम अपनी गुड़िया को तो देख लें, कैसी लगती है इस फ्रॉक में?''

ऐसे ही खेलते-कूदते पिंकी थक कर सो गयी.

थोड़ी देर में सुकेश भी खर्राटे भरने लगे, मगर उसकी आंखों में नींद नहीं थी. भोलेपन में पूछा गया बेटी का सवाल उसके मस्तिष्क में हथौड़े-सा बज रहा था. गुड्डे की बिदाई क्यों नहीं होती? सदियां बीतने के बाद भी ज़माने के दस्तूर ज्यों के त्यों चले आ रहे हैं. पचास साल पहले और आज हुई शादी में रत्ती भर फ़र्क़ नहीं मिलेगा. वही बैंड-बाजा, घोड़ी, पंडित, मंगलाचार, गठबंधन और भोर में बिदाई. जिस घर में किसी वजह से बिदाई रुक गयी, वहां मानो मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है. दूर-दूर तक अनहोनी की ख़बर फैल जाती है.

उसे याद है, किस तरह पिताजी ने दीदी की बिदाई कर सबसे पहले गंगा स्नान किया था और तब जा कर अन्न का दाना ग्रहण किया था.

चलचित्र की तरह उसकी आंखों के सामने दृश्य तैर रहे थे. क्या दीदी इतना बड़ा बोझ थी पिताजी के ऊपर? उसकी बिदाई के बाद एक अजीब-सी शांति का अनुभव किया था उन्होंने. उनके चेहरे पर अपूर्व तेज के भाव उभरे थे और उस दिन दोपहर को बाबूजी ऐसे सोए जैसे घोड़े बेच कर सोए हों. और दीदी, दीदी जब बिदा हुई तो घर के पेड़-पौधों तक से लिपट कर रोई थी, उसे पता था कि एक बार ये क़दम ड्योढ़ी के पार हुए तो इन जड़ चीज़ों पर भी अपना अधिकार खो देंगे. एक ही छत के नीचे बिदाई सुख-दुख का अजीब-सा मिश्रित भाव पैदा करती है. यह किसी स्त्री के जीवन की त्रासदी नहीं तो और क्या है?

वह दृश्य भी उसे याद आया, जब कक्षा दस के लिए विषय चुनने की प्रक्रिया आरंभ हुई. दीदी विज्ञान पढ़ना चाहती थी, लेकिन पूरे कस्बे में एक भी गर्ल्स कॉलेज ऐसा नहीं था, जहां साइंस पढ़ाई जाती हो. घर से बीस मील दूर दीदी को-एज्युकेशन में कैसे पढ़ती? अंततः दीदी को आर्ट्स लेना पड़ा. उसे लगा जैसे विज्ञान की पढ़ाई पर लड़कों का अधिकार है. चौकीदार की सीटी सुनाई दी, जैसे मन के सन्नाटे को चीरती कोई आवाज़ हो. बगल में रखे मोबाइल का स्विच दबा उसने समय देखा, रात के दो बजे थे.

उसने आंख बंद कर एक बार फिर सो जाने का उपक्रम किया, क्योंकि सुबह पांच बजे का अलार्म लगा था. नींद आए न आए, उसे सुबह उठना ही था, वरना रोज़ के काम थम जाएंगे.

समय की धुरी पर चलता अतीत में खो मन कब निश्चेष्ट हो सो गया, पता ही न चला.

सुबह उसकी आंख तब खुली, जब मोबाइल का अलार्म तीसरी बार बजा. कुछ देर के लिए थमा हुआ जीवनचक्र भोर के साथ पुनः चल पड़ा. एक-एक कर सब अपनी हाज़िरी देते गए. पेपर टेबल पर

दीदी जब बिदा हुई तो घर के पेड़-पौधों तक से लिपट कर रोई थी, उसे पता था कि एक बार ये क़दम ड्योढ़ी के पार हुए तो इन जड़ चीज़ों पर भी अपना अधिकार खो देंगे. एक ही छत के नीचे बिदाई सुख-दुख का अजीब-सा मिश्रित भाव पैदा करती है. यह किसी स्त्री के जीवन की त्रासदी नहीं तो और क्या है?

पड़ा था, मिल्क बॉटल दरवाज़े से कामवाली उठा लाई थी और सुकेश सुबह ऑफ़िस जाने की तैयारी में लगे थे. नन्हीं बेटी पिंकी भी कसमसा कर उठने का उपक्रम कर रही थी.

''सुनो, आज दो-तीन स्कूलों में एडमिशन का पता करना और हो सके तो फॉर्म भी लेते आना. इस बार पिंकी का एडमिशन

वह पूरे समाज को तो नहीं बदल सकती थी, लेकिन उसे ख़ुशी थी कि उसने बेटी को दकियानूसी समाज की शर्तों से ऊपर उठाकर अपनी शर्तों पर जीना सिखा दिया था.

कराना है.'' उसने सुकेश को नाश्ता देते हुए कहा.

''हां, सो तो है, एक बड़ा ख़र्च आ रहा है.'' सुकेश ने गहरी सांस लेते हुए कहा.

''आप फॉर्म लेते आइए, फिर किसी अच्छे स्कूल में नाम लिखा देंगे.''

''मम्मी मैं स्कूल जाऊंगी?'' पीछे से पिंकी की आवाज़ सुनाई दी. पता नहीं, कब वह उठ कर चुपचाप उनके बीच शामिल हो गई थी.

सुकेश ने उसे गोद में उठाते हुए कहा, ''हां, मेरा बेटा अब स्कूल जाएगा.''

''पापा, आप स्कूल जाते थे?''

''लो भाई, अब ये शुरू हो गई.'' पापा ने हंसते हुए कहा.

''आपको स्कूल कौन ले जाता था? दादाजी?''

सुकेश भी कहीं खो गया. पहले क्या स्कूल ले जाना और नाम लिखाना? फिर भी पहली बार घर में स्लेट ला कर पट्टी पूजन हुआ था और उसकी शिक्षा-दीक्षा का क्रम प्रारंभ हो गया था. फिर एक दिन सरकारी स्कूल में उसका दाख़िला हो गया था, उस मोहल्ले के और बच्चों की तरह वह भी स्कूल जाने लगा था. ''हां, बेटा मैं भी स्कूल जाता था.'' सुकेश ने हंसते हुए कहा.

ज़िंदगी महीनों तक एक ही ढर्रे पर चलती रहती है. बस, बीच-बीच में कुछ बातें हो जाती हैं, जो जीवन के नीरस क्रम को तोड़ती हैं. वैसे ही सालों में कुछ घटनाएं होती हैं, जो मानस पटल पर अमिट छाप छोड़ जाती हैं... कभी-कभी ऐसी घटनाएं जीवन की दिशा ही बदल देती हैं.

आज पिंकी बड़ी हो गई है और मेडिकल के थर्ड ईयर में है. उसने बेटी की पढ़ाई के साथ समझौता न करने का फ़ैसला किया था. महंगे कॉन्वेंट में उसका दाख़िला कराने के लिए वह सुनार की दुकान पर अपना शादी का हार बेच आई थी. लेकिन आज बेटी के ईमेल ने उसे अपने बेचे हुए हार की पाई-पाई वसूल करा दी थी.

''मां, मैंने थर्ड ईयर में प्रथम स्थान प्राप्त किया है. देखो, तुम हमेशा कहती थी न कि मैं बूढ़ी हो जाऊंगी, तो मेरी देखभाल कौन करेगा? तो लो, मैंने फ़ैसला कर लिया है कि पढ़ाई पूरी कर मैं वहीं अपना क्लीनिक खोलूंगी और तुम्हारी देखभाल करूंगी और सुनो, तुम्हें मुझे डोली में बिठा कर बिदा भी नहीं करना होगा...'' इससे पहले कि वह मेल आगे पढ़ती, उसकी आंखों में वह घटना कौंध गयी.

एक दिन पिंकी दौड़ते हुए घर में घुसी. उसके चेहरे पर ख़ुशी की लाली दौड़ रही थी और मन में संतुष्टि का भाव था. उसने एक हाथ में गुड़िया और दूसरे हाथ में गुड्डा पकड़ रखा था.

''मम्मी-मम्मी, मैं मोहित का गुड्डा छीन लाई और यह रही मेरी गुड़िया. प्लीज़ इसे कहीं छुपा दो और मम्मी मोहित को मत देना. मोहित मेरी गुड़िया नहीं दे रहा था, तो मैं छीन कर ले आयी. अपनी चीज़ जब ईमानदारी से न मिले तो क्या उसे छीन कर नहीं ले सकते मम्मी? मैंने क्या ग़लत किया है?'' उसने देखा पीछे-पीछे मोहित रोता हुआ चला आ रहा है...

''आंटी, पिंकी मेरा गुड्डा ले आई है, प्लीज़ दिला दो. मैं प्रॉमिस करता हूं अब उसकी गुड़िया कभी नहीं छीनूंगा.'' वह हंसी. उसने मोहित को प्यार किया, उसे चॉकलेट दी और बोली, ''बेटा, ये सो जाएगी तो इससे ले कर गुड्डा तुम्हें वापस कर दूंगी.''

लेकिन उसने पिंकी से गुड्डा नहीं छीना और न ही उसे समझाकर शांत करना चाहा. उसे अपनी नन्हीं-सी बेटी की बात में दम नज़र आ रहा था. लड़की होने के नाते वह भी तो बस पूरी उम्र समझौता ही करती रही है. बार-बार उसके कानों में वे शब्द गूंज रहे थे कि 'जब अपना अधिकार ईमानदारी से न मिले तो उन्हें छीन कर लेना ग़लत तो नहीं है?'

वह कोमल मन की भावनाओं को हृदय की गहराई से महसूस कर रही थी. वह मार्केट गई और वैसा ही एक गुड्डा ख़रीद मोहित को दे दिया. मोहित को थोड़ा भ्रम तो हुआ, लेकिन वह नया गुड्डा पा कर ही ख़ुश था. लड़के शायद इतने भावुक नहीं होते. लेकिन उसने देखा पिंकी उस दिन के बाद से आत्मविश्वास से भर गयी थी.

भगवान की कुछ ऐसी मर्ज़ी रही कि उसे केवल एक बेटी का उपहार मिला. उसे इसका कोई दुख और अफ़सोस भी नहीं था, क्योंकि बेटों से उसका मोहभंग अपने पिताजी की स्थिति देख कर हो गया था.

उसके भाइयों ने शादी के बाद उसी शहर में अपना अलग-अलग ठिकाना बना लिया था. पिताजी सत्तर वर्ष की अवस्था में अकेले जीवन की समस्याओं से संघर्ष कर रहे थे. उसे दुख था तो बस इतना कि वह और उसकी दीदी चाह कर भी पिताजी के लिए कुछ नहीं कर सकती थीं. उसने कभी कुछ करने की कोशिश की भी तो भाइयों को कष्ट हो गया. पिताजी के अकेले रहने में उन्हें कष्ट नहीं था. हां, कोई उनके लिए कुछ करे तो उनकी इज़्ज़त जाने लगती थी. वे उस पर

आरोप लगा देते कि वह संपत्ति के लालच में पिताजी की सेवा कर रही हैं. एक-दो बार तो सुकेश ने उसे कुछ नहीं कहा, फिर एक दिन उन्होंने मान-मर्यादा और समाज की ऊंच-नीच उसे समझाई थी. शायद भाई ने ही उन्हें फ़ोन किया होगा उसके पिताजी की देखभाल करने पर.

उसका मन कसैला हो गया. वह उठ कर चल दी. इस मन से वह मेल नहीं पढ़ना चाहती थी. उसने कॉफ़ी बनाई और कम्प्यूटर में स्टोर ग़ज़ल के कलेक्शन से मन हल्का करने के लिए लाइट म्यूज़िक ऑन कर दिया. अनायास ही उसका माउस ट्रेडीशनल गाने पर क्लिक हो गया.

काहे को ब्याहे बिदेस अरे लखिया बाबुल होमे,

हम तो बाबुल तोरे अंगना को बेलिया... अरे लखिया बाबुल मोहे...

ईंट-गारे का मकान अपने साथ कौन ले कर जाएगा भला! शाहजहां भी ताजमहल यहीं छोड़ कर गया था.

एक घर-आंगन में कोमल भावनाओं, स्मृतियों व अपनत्व की अनुभूति के सिवाय होता ही क्या है? उसकी आंखें झर-झर कर बहने लगीं. समाज के नियम बहुत क्रूर और कठोर होते हैं. उसे अनजाने ही बाबूजी याद आने लगे. कैसे वह उसे गोद में उठाकर खिलाते थे. सचमुच सब कहने की बात है. उम्र भले ही पचास पार कर जाए, आदमी का बचपन कभी नहीं मरता.

अगली ग़ज़ल बजने लगी.

ये दौलत भी ले लो, ये शोहरत भी ले लो, भले छीन लो मुझसे मेरी जवानी, मगर मुझको लौटा दो बचपन का सावन, वो काग़ज़ की कश्ती, वो बारिश का पानी...

अचानक उसे मेल पढ़ने का ध्यान आया. बेटी ने लिखा था, 'मैं बिदा हो कर नहीं जाऊंगी. आकाश बहुत अच्छा है और मेरी भावनाओं का ध्यान भी रखता है. उसके मम्मी-पापा अमेरिका में हैं, लेकिन वह यहां मेरे साथ क्लीनिक खोलना चाहता है. उसे अपने देश से बहुत लगाव है. उसके मम्मी-पापा भी भारत लौटना चाहते हैं, वे कहते हैं कि 'जो सुख और मान-सम्मान अपने देश में है, वह विदेश में नहीं है. वैसे भी अब अपना देश बहुत बदल गया है.'

मां, क्लीनिक के लिए लोन मुझे अपने नाम से मिल जाएगा और आकाश को मेरे घर में रहने में कोई आपत्ति नहीं है.' उसकी आंखों में ख़ुशी के आंसू तैर गए.

वह पूरे समाज को तो नहीं बदल सकती थी, लेकिन उसे ख़ुशी थी कि उसने बेटी को दकियानूसी समाज की शर्तों से ऊपर उठाकर अपनी शर्तों पर जीना सिखा दिया था.

कैसे बनें ऑफ़िस में सभी के प्रिय

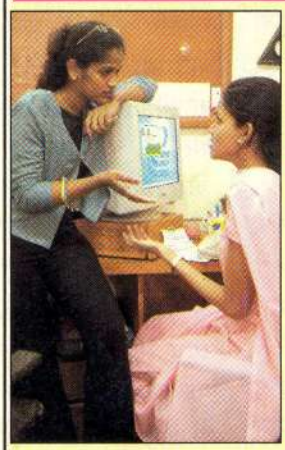

आइए, उन छोटी-छोटी बातों पर गौर करते हैं, जिन्हें अपनाकर आप ऑफ़िस में सभी के प्रिय बन सकते हैं.

- दिलकश मुस्कुराहट, जो हर काम को आसान कर देती है. ऑफ़िस में जब कभी किसी से बात करें तो मुस्कुराते हुए गर्मजोशी से बात करें. आपका यह व्यवहार दूसरों पर सकारात्मक प्रभाव छोड़ता है. शिकायत, नाराज़गी, चीखना-चिल्लाना- इन सभी बातों से भरसक परहेज़ करें.
- कुछ लोगों की आदत होती है कि वे अपनी ही बात कहे जाते हैं. एकबारगी वे यह भी नहीं देखते कि सुननेवाला भी कुछ कहना चाह रहा है. अतः बात करते समय श्रोता को भी पूरा-पूरा मौक़ा दें अपनी बात कहने-सुनने का. एक अच्छे वक्ता होने के साथ-साथ अच्छे श्रोता भी बनें.
- ऑफ़िस में बातचीत में नम्रता और सरलता हो, इस बात का विशेष ध्यान रखें. आप चाहे कितने भी क़ामयाब हों, पर अपने दिलोदिमाग़ में अहंकार को पनपने न दें. बातचीत में 'मैं' व 'तुम' की जगह 'हम' का अधिक इस्तेमाल करें. इससे सहकर्मियों के बीच सहजता बनी रहेगी. साथ ही टीम वर्क को मज़बूती भी मिलेगी.
- यदि कोई काम नहीं हो पा रहा हो तो स्पष्ट कह दें. अक्सर लोग सहयोगी को बुरा लग जाएगा, यह सोचकर दूसरों का काम भी अपने सर ले लेते हैं. सहयोग करना अच्छी बात है, लेकिन यदि आपके ख़ुद के अधिक काम की वजह से दूसरा काम न हो पाए, तो उसे न लें. जीवन में स्पष्टवादी बनें. स्पष्ट कह देने से कई मुश्किलें व ग़लतफ़हमियां दूर हो जाती हैं. स्पष्टवादिता एक ऐसा गुण है, जो क़ामयाबी के लिए बहुत ज़रूरी है.
- यदि किसी ने कोई अच्छा काम किया है तो उसकी प्रशंसा ज़रूर करें. इससे उसका उत्साह बढ़ेगा. अच्छे काम के लिए दूसरों को उत्साहित व प्रोत्साहित अवश्य करें.
- कभी किसी पर बेवजह छींटाकशी न करें. साथ ही ग़लत शब्दों के इस्तेमाल से बचें. बेवजह किसी को पागल, बेवकूफ़, गधे आदि शब्दों से न नवाजें. मौक़े की नज़ाकत को देखते हुए बात करें.
- यदि कोई सहयोगी आपको अपना समझकर अपनी मन की कोई बात बताए तो आप भले ही उसकी मदद न कर सकें, पर उसकी भावनाओं को समझें. उसका पीठ पीछे मज़ाक न उड़ाएं. उसकी बात अपने तक ही रखें.
- ऑफ़िस का माहौल ख़ुशगवार और हल्का बनाए रखें और हमेशा हंसती-हंसाती रहें.

हे सखी मीडिया गीत गा रहा है

बांके बिहारी का दुख लगातार बढ़ता जा रहा था, क्योंकि वे मीडिया के गीत क्या उसकी छवि तक से महरूम हो गए थे, जिसके चलते उन्हें लगने लगा था कि जीवन रसहीन हो गया है, क्योंकि आज के जमाने में आदमी का कोई सच्चा साथी है तो वह है टीवी।

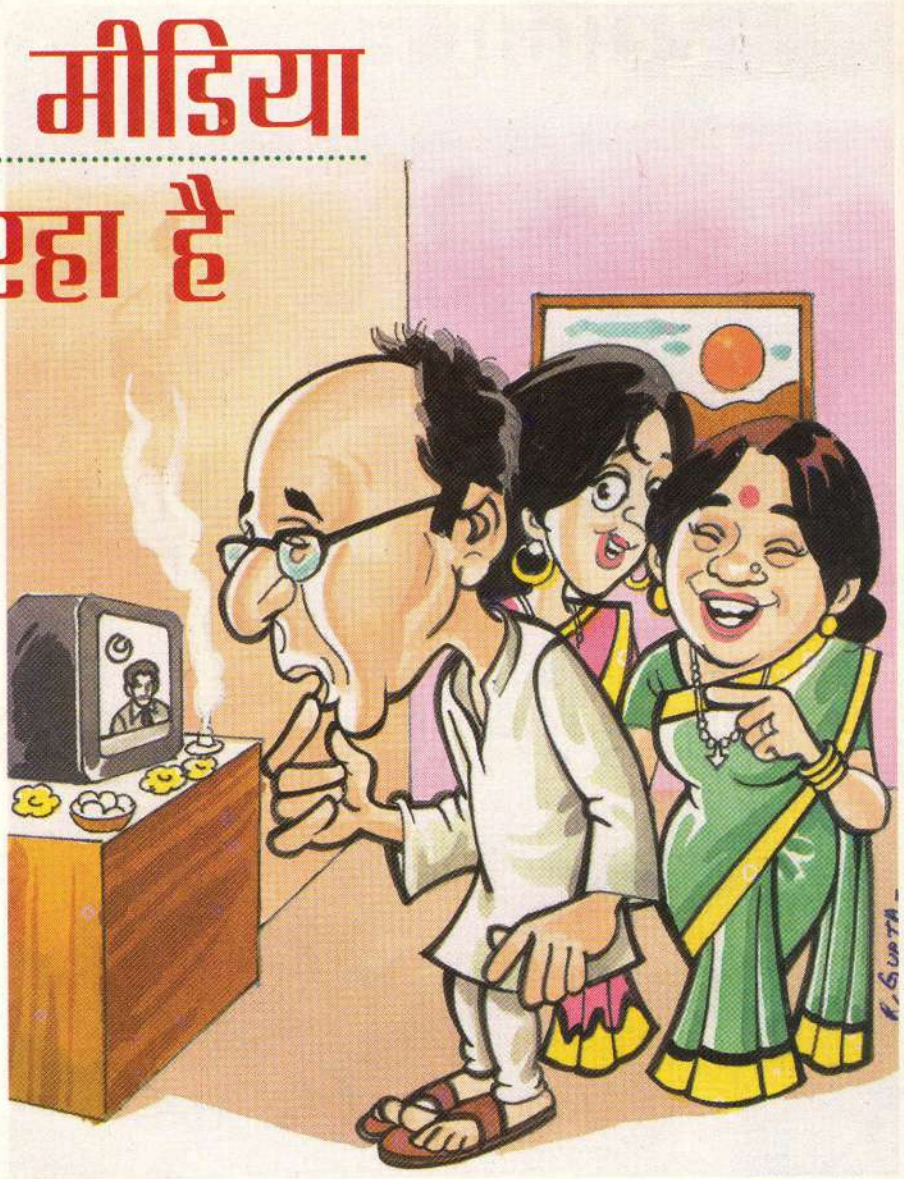

नई नवेली बहू ने टीवी का बटन ऑन किया और ससुर के बगल में कुर्सी डाल कर बैठ गई। यह दृश्य देखकर सास की भवें तन गईं, पर ससुर जी गद्‌गद् हो गए, चलो कोई तो आया इस घर में चल रहे एक छत्र राज्य को तोड़ने के लिए।

सास ने मौके की नजाकत को ताड़ा और विचार किया कि बेटा नई उमर की नई फसल है। बहू के त्रिया चरित्र से नहीं बच पाएगा, सो उन्होंने शतरंज की बिसात पर मुहरे बदल दी। कड़क आवाज को चाशनी में डुबो कर मधुर तान में बोलीं, 'हे सखी, मीडिया गीत गा रहा है, छोड़ो उसे तुम मेरे साथ किचन में चलो।'

आय हाय, मां के इस प्यार रूपी रूप को देखकर बेटे को लगा दैट्स माई माम, देखो बहू को कितने प्यार से घर-गृहस्थी सौंप रही हैं। आज किचन के डिब्बे दिखाए हैं, कल लॉकर की चाबी सौंप देंगी।

पर इधर ससुर जी सठिया चुके थे। मन ही मन सोच रहे थे कि आखिर मीडिया कौन-सा गीत गा रहा है। आखिरकर मन का भार उतारने के लिए उन्होंने पूछ ही लिया, 'सुनो भागवती, ये मीडिया कौन-सा गीत गा रहा है?'

'तुम चुप रहो जी, अगर तुम्हें सुरों की समझ होती तो तुम भी इंडियन आइडल में जाकर किस्मत आजमा रहे होते, मेरे पल्ले न पड़े होते और न ही मैं तुम्हारे पल्ले पड़ कर पूरी उम्र क्लर्क की बीवी कहलाती।'

गोपी चंद जासूस की तरह बांके बिहारी ने टीवी से नजरें हटा कर रामप्यारी पर फेंकी। सफेद बालों में भी राम प्यारी घायल होते हुए बचीं, मगर बांके बिहारी को मीडिया का गीत गाना अखर गया। उन्होंने रीजनल चैनल से नेशनल चैनल तक ओरीजनल सांग कलेक्शन से रीमिक्स तक और प्रादेशिक समाचार से वर्ल्ड न्यूज तक सब देख डाले, पर उन्हें मीडिया कहीं उस अंदाज में गीत गाता नजर नहीं आया, जिस अंदाज में रामप्यारी ने कहा था।

इधर सास-बहू ने सुर में सुर मिलाया और ससुर जी को ड्राइंग रूम से बेदखल कर दिया। उन्हें फिलिप्स का जवान (ट्रांजिस्टर) पकड़ा दिया गया कि एफएम पर रेडियो मिर्ची सुनो और आंख सेंकने का काम बंद करो। इधर ताल से ताल मिला के तर्ज पर सास-बहू और साजिश के नए एपीसोड नान स्टाप घर में चलने लगे। बांके बिहारी ड्राईंग रूम से तबेले नुमा स्टोर रूम में शिफ्ट हो गए। उधर सास-बहू मीडिया के गीत सुने लगीं और बांके बिहारी इस पहेली में उलझे रहे कि आखिर मीडिया कौन-सा गीत गा

रहा है। संक्षेप में कहें तो कह सकते हैं कि बांके बिहारी सोच रहे थे ये जीना भी कोई जीना है लल्लू।

अब उन्हें ब्लैक एंड व्हाइट हिन्दी अखबार का ही आसरा था। एक दिन उन्होंने अखबार में पढ़ा कि एक सुपर हिट आइटम गर्ल ने पंजाब पाप स्टार के साथ कोई किस गीत गाया, पर जब वही गीत स्टेप बाई स्टेप उस पाप स्टार ने गा दिया तो बवाल हो गया। अब पूरे फिजा में उस गीत के सुर सुनाई दे रहे थे। बांके बिहारी इस सीन का एक्शन रीप्ले टीवी पर देखने को तरस गए।

सास-बहू के सीरियल से मुक्ति मिले तो खबरिया चैनल का नंबर आए। अब कर भी क्या सकते थे, उन्हें मीडिया का गीत सुनाई देना बंद हो चुका था। अब काले सफेद अक्षरों वाला वह बासी खबर उक्त न्यूज पेपर ही उनका एक सहारा था। आजकल वे कत्ल की वारदात से ले कर जादू टोने के विज्ञापन तक सब पढ़ जाते थे, पर मजा ही नहीं आता था। हिन्दी पेपर में छपी फोटो बिना चश्मे के पहचान ही नहीं आती थी कि हीरो की है या हीरोइन की।

मॉर्निंग वाक पर निकलें या शाम को चहल कदमी करने दोस्तों के बीच हमेशा उल्लू बन जाते। खेल हो या किसी फिल्म की रिलीज पर हुआ बवाल, वे बहस करते समय मात खा ही जाते। जब वे बताते कि फिल्म के रिलीज की कंट्रोवर्सी क्या है या फुटबाल में पहला गोल किसने मारा या कल के खेल में किस क्रिकेट खिलाड़ी ने छक्कों का रिकार्ड तोड़ते समय कैप्टन से विवाद हुआ तो लोग हंसते। बाद में पता चला कि उनकी खबर न्यूज पेपर में पढ़ी होने के कारण बासी हो गई है। टीवी देखने वाले तो इस विषय पर कल ही डिस्कस कर चुके हैं।

वे घोर निराशा में जी रहे थे, अचानक एक दिन एक छोटा पोर्टेबल टीवी उन्हें अपने कमरे में आता दिखाई दिया। उन्होंने एक्सचेंज ऑफर के साथ पोर्टेबल टीवी की फ्री स्कीम वाला विज्ञापन छापने के लिए अपने न्यूज पेपर को मन ही मन बधाई दी। अब वे भी बेसब्री से मीडिया के गीत सुनने की प्रतीक्षा करने लगे।

शाम तक चली लंबी कवायद करने के बाद केबिल का तार उनके कमरे में रखे पोर्टेबल टीवी से आखिर जुड़ ही गया। रेडियो मिर्ची के श्रव्य काव्य से बोर हो चुके बांके बिहारी को आज कुछ राहत महसूस हुई। बहुत दिनों से विज्ञापन के तड़के नहीं देखे थे, सोचा चलो कुछ तो मनोरंजन होगा। स्क्रीन छोटी सही तो क्या हुआ।

बांके बिहारी ने टीवी के आगे नारियल फोड़ बताशे का प्रसाद चढ़ा धूपबत्ती जला कर स्विच ऑन किया। जैसे ही ग्लैमर विहीन स्क्रीन में कलर सेट करते तभी बहू ने बताया, 'बाऊजी एक्सचेंज ऑफर में ब्लैक एंड व्हाइट टीवी फ्री था क्या।' उन्हें लगा रंगे हाथों पकड़े गए हैं और उन्हें आज के न्यूज पेपर ने नकली विज्ञापन छाप कर ठग लिया है। वे सकपकाते हुए बोले, 'नहीं-नहीं, कलर की कोई बात नहीं है।' तभी पीछे से रामप्यारी मुस्कराते हुए बोलीं, 'क्योंजी, अभी तुम्हारी आंखों में कलर सेंस बचा है क्या? मैं तो समझती थी कि तुम तो बस मीडिया के गीत सुनते हो, पर आज पता चला विज्ञापन भी देखते हो। अरे, तुम्हें कलर का क्या करना है, टीवी ऑन करो और मीडिया के गीत सुनो।'

बांके बिहारी ने टीवी ऑन किया, एक-एक कर बारह चैनल बदले। सभी पर न्यूज आ रही थी, आधे से अधिक हालात के लाइव टेलीकास्ट दिखा रहे थे। कुछ सहवाग की ओपनिंग को ले कर जनता की राय जान रहे थे तो कुछ किस एपीसोड और अश्लीलता पर बहस कर रहे थे। बांके बिहारी सुन रहे थे, लाभ के पद पर संशोधित विधेयक किसानों को आत्महत्या से बचाने के लिए कृषि नीति की समीक्षा, अमरीका के साथ परमाणु मसले पर प्रगति, भारत-पाक सचिव स्तर की वार्ता, विदेश मंत्री की स्वदेश यात्रा का हाल और ब्रेकिंग न्यूज में अमरीका के भारत संबंधी बयान।

उधर रेडियो मिर्ची चीख रहा था, जब तक आईटीओ पर ट्रैफिक जाम है तब तक हम आपको सुनवाते हैं, *आशिक बनाया आपने...* न्यूज पेपर के बीच के पन्ने, हत्या, अपहरण और बलात्कार से भरे हैं, पर फ्रंट पेज वही है, जो मीडिया दिखा रहा है। लाभ के पद पर संशोधित विधेयक पास होने की पूर्ण संभावना।

यह सब देखने के बाद बांके बिहारी अब शायद मीडिया का गीत सुन पा रहे थे।

■ मुरली मनोहर श्रीवास्तव

व्यंग्य प्रतियोगिता जीतिए रु. 500 का नोट

उदासी और वैराग्य के माहौल में सार्थक और श्रेष्ठ व्यंग्य लिखना आसान बात नहीं। आपकी कलम में एक धार होनी चाहिए, पैनापन होना चाहिए। यदि आप भी व्यंग्य लिखने में महारत रखते हैं तो इस प्रतियोगिता में जरूर भाग लीजिए। यदि आपका लिखा व्यंग्य चुना गया और पत्रिका में छपा तो आप पाएंगे रुपये 500 का नकद इनाम। व्यंग्य 1000 से 1200 शब्दों के बीच हो। अपना नाम, पता व फोन नंबर जरूर लिखें, तभी आपकी रचना पर विचार किया जाएगा।

हमारा पता है- **गृहलक्ष्मी**

X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज- II, नई दिल्ली- 110020

श्री

नीला सोना

एक होती है नील, एक होती है अशोक नील,
जो दे सादा सफेद से ज्यादा सफेद.

अशोक नील पाउडर एवं लिक्वीड में 30 मिली. से 1 लीटर / किलो के पैक में उपलब्ध है.
इतना ही नहीं अशोक नील के बचे हुए पानी से फर्श भी साफ कर सकते हैं जिससे फर्श की चमक भी बढ़ जाती है.

अशोक नील®

अशोक नील मेन्युफेक्चरर्स प्रा.लि. फोन : 0731-2383443, फैक्स : 2787068

deepakadvertising.com

काहे को ब्याहे बिदेस

- मुरली मनोहर श्रीवास्तव

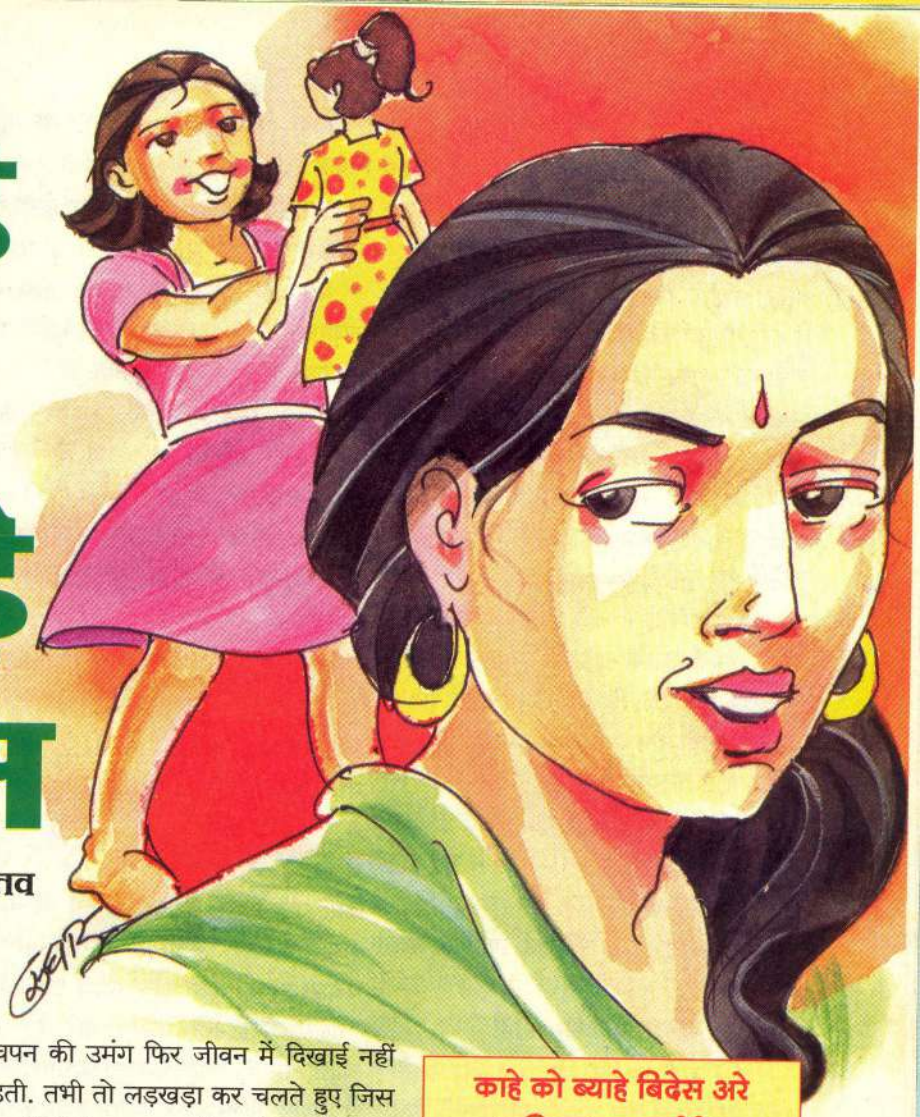

उसने खिड़की का पर्दा हटा कर देखा. नीचे बहुत से बच्चे खेल रहे थे. छोटी-सी पालकी सजी थी और नन्हें-नन्हें कंधे कहार बन उसे उठाए चले जा रहे थे. बच्चों की टोली ताली बजा-बजा कर गा रही थी- **लाली लाली डोलिया में लाली रे दुल्हनियां...**

उनके हंसने और खिलखिलाने की मीठी आवाज़ वातावरण में घुल कर उसे और मधुर बना रही थी. वह सोचने लगी, 'बचपन के दिन भी क्या दिन होते हैं और देखते ही देखते कब पंख लगा उड़ जाते हैं, पता ही नहीं लगता.'

वैसे भी किसी का बचपन उम्र बढ़ने के साथ भले ही गुज़र जाए, लेकिन उसके सीने में वह सदैव सांस लेता रहता है. ये दुनिया नहीं बदलती. धूप-छांव, चांद-सितारे, पेड़-पौधे जस के तस अपनी जगह खड़े रहते हैं और अपनी गति से चलते रहते हैं. वह तो हमारी उम्र कुछ इस तरह बढ़ जाती है कि बचपन की उमंग फिर जीवन में दिखाई नहीं पड़ती. तभी तो लड़खड़ा कर चलते हुए जिस तितली को देख बचपन में ताली बजाते थे या जिस लाल कीड़े को पकड़ कर उठाने को मचल उठते थे, बड़े होने पर उनके झुंड हमारे सामने से गुज़र जाते हैं और हमारी संवेदनाएं निर्विकार भाव से अपना काम करती रहती हैं. आजकल हमारी चेतना किसी ख़ास बड़ी घटना पर ही जागती है, वरना दिल में सात परतों में दफ़न रहती है.

अचानक नीचे शोर बढ़ गया. शायद बच्चों में लड़ाई हो गयी थी. वह हंसी, सचमुच लड़ाई बच्चों-सी ही होनी चाहिए. हम बड़े हो कर भी बच्चों की तरह लड़ते तो कम से कम कुछ देर के बाद गलबहियां डाल फिर से बातें तो करने लगते.

अचानक कॉलबेल बजी और उसने देखा, उसकी नन्हीं बिटिया पिंकी आंखें मलते और रोते हुए चली आ रही है. मां का स्पर्श सिर पर पाते ही उसकी हिचकी बंध गयी, "मम्मी

काहे को ब्याहे बिदेस अरे लखिया बाबुल होमे,
हम तो बाबुल तोरे अंगना को बेलिया...
अरे लखिया बाबुल मोहे...
ईंट-गारे का मकान अपने साथ कौन ले कर जाएगा भला! शाहजहां भी ताजमहल यहीं छोड़ कर गया था.
एक घर-आंगन में कोमल भावनाओं, स्मृतियों व अपनत्व की अनुभूति के सिवाय होता ही क्या है? उसकी आंखें झर-झर कर बहने लगीं. समाज के नियम बहुत क्रूर और कठोर होते हैं. उसे अनजाने ही बाबूजी याद आने लगे.

मैं मोहित को नहीं छोड़ूंगी.''

''क्या हुआ बेटा? क्या किया मोहित ने?'' उसने बेटी के बाल सहलाते हुए पूछा.

''मम्मी उसने मेरी गुड़िया ले ली और वापस नहीं दे रहा है. कह रहा है उसके गुड्डे ने मेरी गुड़िया की बिदाई करा ली है और वह उसी के घर रहेगी.''

वह हंसने लगी, ''ठीक ही तो कह रहा है मोहित, अगर उसने तुम्हारी गुड़िया की बिदाई करा ली, तो वह उसी के घर रहेगी. कोई बात नहीं बेटा, मैं तुम्हारे लिए दूसरी गुड़िया ला दूंगी.''

''नहीं मम्मी, मैं वही गुड़िया लूंगी और अगले हफ़्ते उसके गुड्डे को बिदा करा कर लाऊंगी, तब उसे पता चलेगा.''

वह और ज़ोर से हंसी, ''बेटा, गुड्डे की बिदाई करा कर घर में नहीं रखते.''

''क्यों मम्मी? अगर गुड़िया बिदा हो कर जा सकती है, तो गुड्डा क्यों नहीं? मैं गुड्डे को बिदा करा कर ही लाऊंगी.''

''बेटा, गुड्डे की बिदाई को अच्छा नहीं समझते.''

''क्यों अच्छा नहीं समझते?''

''अरे बाबा, इतनी-सी उमर और इतनी बड़ी-बड़ी बातें. जब तू बड़ी हो जाएगी, तब समझेगी.'' उसने फ्रिज से चॉकलेट निकाल कर बेटी को पकड़ाते हुए कहा.

पिंकी ताली पीट-पीट कर हंसने लगी और गाने लगी, ''हा, हा, गुड्डे की बिदाई नहीं होती.''

शाम को पापा घर लौटे तो उसने पापा के गले में बांहें डाल दीं, फिर बोली, ''पापा, आपकी बिदाई हुई थी.''

पापा हंसते हुए बोले, ''हां, हुई थी.''

वो बोली, ''पापा, आप झूठ बोलते हो! मम्मी कह रही थी कि गुड्डे की बिदाई नहीं होती.''

पापा हंसने लगे, ''बेटा, वो दूसरी बिदाई है.''

''पापा, ये दूसरी बिदाई क्या होती है?'' पिंकी ने पूछा.

''अच्छा देखो, मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूं.'' पापा ने हाथ में पकड़े हुए पैकेट से एक डिब्बा निकालते हुए कहा.

''ओ पापा, इतनी सुन्दर फ्रॉक. पापा, मेरी गुड़िया के लिए भी ऐसी ही फ्रॉक ला दोगे?''

''ला देंगे बेटा, लेकिन पहले हम अपनी गुड़िया को तो देख लें, कैसी लगती है इस फ्रॉक में?''

ऐसे ही खेलते-कूदते पिंकी थक कर सो गयी.

थोड़ी देर में सुकेश भी खर्राटे भरने लगे, मगर उसकी आंखों में नींद नहीं थी. भोलेपन में पूछा गया बेटी का सवाल उसके मस्तिष्क में हथौड़े-सा बज रहा था. गुड्डे की बिदाई क्यों नहीं होती? सदियां बीतने के बाद भी ज़माने के दस्तूर ज्यों के त्यों चले आ रहे हैं. पचास साल पहले और आज हुई शादी में रत्ती भर फ़र्क़ नहीं मिलेगा. वही बैंड-बाजा, घोड़ी, पंडित, मंगलाचार, गठबंधन और भोर में बिदाई. जिस घर में किसी वजह से बिदाई रुक गयी, वहां मानो मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है. दूर-दूर तक अनहोनी की ख़बर फैल जाती है.

उसे याद है, किस तरह पिताजी ने दीदी की बिदाई कर सबसे पहले गंगा स्नान किया था और तब जा कर अन्न का दाना ग्रहण किया था.

चलचित्र की तरह उसकी आंखों के सामने दृश्य तैर रहे थे. क्या दीदी इतना बड़ा बोझ थी पिताजी के ऊपर? उसकी बिदाई के बाद एक अजीब-सी शांति का अनुभव किया था उन्होंने. उनके चेहरे पर अपूर्व तेज के भाव उभरे थे और उस दिन दोपहर को बाबूजी ऐसे सोए जैसे घोड़े बेच कर सोए हों. और दीदी, दीदी जब बिदा हुई तो घर के पेड़-पौधों तक से लिपट कर रोई थी, उसे पता था कि एक बार ये क़दम ड्योढ़ी के पार हुए तो इन जड़ चीज़ों पर भी अपना अधिकार खो देंगे. एक ही छत के नीचे बिदाई सुख-दुख का अजीब-सा मिश्रित भाव पैदा करती है. यह किसी स्त्री के जीवन की त्रासदी नहीं तो और क्या है?

वह दृश्य भी उसे याद आया, जब कक्षा दस के लिए विषय चुनने की प्रक्रिया आरंभ हुई. दीदी विज्ञान पढ़ना चाहती थी, लेकिन पूरे कस्बे में एक भी गर्ल्स कॉलेज ऐसा नहीं था, जहां साइंस पढ़ाई जाती हो. घर से बीस मील दूर दीदी को-एज्युकेशन में कैसे पढ़ती? अंततः दीदी को आर्ट्स लेना पड़ा. उसे लगा जैसे विज्ञान की पढ़ाई पर लड़कों का अधिकार है. चौकीदार की सीटी सुनाई दी, जैसे मन के सन्नाटे को चीरती कोई आवाज़ हो. बगल में रखे मोबाइल का स्विच दबा उसने समय देखा, रात के दो बजे थे.

उसने आंख बंद कर एक बार फिर सो जाने का उपक्रम किया, क्योंकि सुबह पांच बजे का अलार्म लगा था. नींद आए न आए, उसे सुबह उठना ही था, वरना रोज़ के काम थम जाएंगे.

समय की धुरी पर चलता अतीत में खो मन कब निश्चेष्ट हो सो गया, पता ही न चला.

सुबह उसकी आंख तब खुली, जब मोबाइल का अलार्म तीसरी बार बजा. कुछ देर के लिए थमा हुआ जीवनचक्र भोर के साथ पुनः चल पड़ा. एक-एक कर सब अपनी हाज़िरी देते गए. पेपर टेबल पर

दीदी जब बिदा हुई तो घर के पेड़-पौधों तक से लिपट कर रोई थी, उसे पता था कि एक बार ये क़दम ड्योढ़ी के पार हुए तो इन जड़ चीज़ों पर भी अपना अधिकार खो देंगे. एक ही छत के नीचे बिदाई सुख-दुख का अजीब-सा मिश्रित भाव पैदा करती है. यह किसी स्त्री के जीवन की त्रासदी नहीं तो और क्या है?

पड़ा था, मिल्क बॉटल दरवाज़े से कामवाली उठा लाई थी और सुकेश सुबह ऑफ़िस जाने की तैयारी में लगे थे. नन्हीं बेटी पिंकी भी कसमसा कर उठने का उपक्रम कर रही थी.

''सुनो, आज दो-तीन स्कूलों में एडमिशन का पता करना और हो सके तो फॉर्म भी लेते आना. इस बार पिंकी का एडमिशन

वह पूरे समाज को तो नहीं बदल सकती थी, लेकिन उसे ख़ुशी थी कि उसने बेटी को दकियानूसी समाज की शर्तों से ऊपर उठाकर अपनी शर्तों पर जीना सिखा दिया था.

कराना है.'' उसने सुकेश को नाश्ता देते हुए कहा.

''हां, सो तो है, एक बड़ा ख़र्च आ रहा है.'' सुकेश ने गहरी सांस लेते हुए कहा.

''आप फॉर्म लेते आइए, फिर किसी अच्छे स्कूल में नाम लिखा देंगे.''

''मम्मी मैं स्कूल जाऊंगी?'' पीछे से पिंकी की आवाज़ सुनाई दी. पता नहीं, कब वह उठ कर चुपचाप उनके बीच शामिल हो गई थी.

सुकेश ने उसे गोद में उठाते हुए कहा, ''हां, मेरा बेटा अब स्कूल जाएगा.''

''पापा, आप स्कूल जाते थे?''

''लो भाई, अब ये शुरू हो गई.'' पापा ने हंसते हुए कहा.

''आपको स्कूल कौन ले जाता था? दादाजी?''

सुकेश भी कहीं खो गया. पहले क्या स्कूल ले जाना और नाम लिखाना? फिर भी पहली बार घर में स्लेट ला कर पट्टी पूजन हुआ था और उसकी शिक्षा-दीक्षा का क्रम प्रारंभ हो गया था. फिर एक दिन सरकारी स्कूल में उसका दाख़िला हो गया था, उस मोहल्ले के और बच्चों की तरह वह भी स्कूल जाने लगा था. ''हां, बेटा मैं भी स्कूल जाता था.'' सुकेश ने हंसते हुए कहा.

ज़िंदगी महीनों तक एक ही ढर्रे पर चलती रहती है. बस, बीच-बीच में कुछ बातें हो जाती हैं, जो जीवन के नीरस क्रम को तोड़ती हैं. वैसे ही सालों में कुछ घटनाएं होती हैं, जो मानस पटल पर अमिट छाप छोड़ जाती हैं... कभी-कभी ऐसी घटनाएं जीवन की दिशा ही बदल देती हैं.

आज पिंकी बड़ी हो गई है और मेडिकल के थर्ड ईयर में है. उसने बेटी की पढ़ाई के साथ समझौता न करने का फ़ैसला किया था. महंगे कॉन्वेंट में उसका दाख़िला कराने के लिए वह सुनार की दुकान पर अपना शादी का हार बेच आई थी. लेकिन आज बेटी के ईमेल ने उसे अपने बेचे हुए हार की पाई-पाई वसूल करा दी थी.

''मां, मैंने थर्ड ईयर में प्रथम स्थान प्राप्त किया है. देखो, तुम हमेशा कहती थी न कि मैं बूढ़ी हो जाऊंगी, तो मेरी देखभाल कौन करेगा? तो लो, मैंने फ़ैसला कर लिया है कि पढ़ाई पूरी कर मैं वहीं अपना क्लीनिक खोलूंगी और तुम्हारी देखभाल करूंगी और सुनो, तुम्हें मुझे डोली में बिठा कर बिदा भी नहीं करना होगा...'' इससे पहले कि वह मेल आगे पढ़ती, उसकी आंखों में वह घटना कौंध गयी.

एक दिन पिंकी दौड़ते हुए घर में घुसी. उसके चेहरे पर ख़ुशी की लाली दौड़ रही थी और मन में संतुष्टि का भाव था. उसने एक हाथ में गुड़िया और दूसरे हाथ में गुड्डा पकड़ रखा था.

''मम्मी-मम्मी, मैं मोहित का गुड्डा छीन लाई और यह रही मेरी गुड़िया. प्लीज़ इसे कहीं छुपा दो और मम्मी मोहित को मत देना. मोहित मेरी गुड़िया नहीं दे रहा था, तो मैं छीन कर ले आयी. अपनी चीज़ जब ईमानदारी से न मिले तो क्या उसे छीन कर नहीं ले सकते मम्मी? मैंने क्या ग़लत किया है?'' उसने देखा पीछे-पीछे मोहित रोता हुआ चला आ रहा है...

''आंटी, पिंकी मेरा गुड्डा ले आई है, प्लीज़ दिला दो. मैं प्रॉमिस करता हूं अब उसकी गुड़िया कभी नहीं छीनूंगा.'' वह हंसी. उसने मोहित को प्यार किया, उसे चॉकलेट दी और बोली, ''बेटा, ये सो जाएगी तो इससे ले कर गुड्डा तुम्हें वापस कर दूंगी.''

लेकिन उसने पिंकी से गुड्डा नहीं छीना और न ही उसे समझाकर शांत करना चाहा. उसे अपनी नन्हीं-सी बेटी की बात में दम नज़र आ रहा था. लड़की होने के नाते वह भी तो बस पूरी उम्र समझौता ही करती रही है. बार-बार उसके कानों में वे शब्द गूंज रहे थे कि 'जब अपना अधिकार ईमानदारी से न मिले तो उन्हें छीन कर लेना ग़लत तो नहीं है?'

वह कोमल मन की भावनाओं को हृदय की गहराई से महसूस कर रही थी. वह मार्केट गई और वैसा ही एक गुड्डा ख़रीद मोहित को दे दिया. मोहित को थोड़ा भ्रम तो हुआ, लेकिन वह नया गुड्डा पा कर ही ख़ुश था. लड़के शायद इतने भावुक नहीं होते. लेकिन उसने देखा पिंकी उस दिन के बाद से आत्मविश्वास से भर गयी थी.

भगवान की कुछ ऐसी मर्ज़ी रही कि उसे केवल एक बेटी का उपहार मिला. उसे इसका कोई दुख और अफ़सोस भी नहीं था, क्योंकि बेटों से उसका मोहभंग अपने पिताजी की स्थिति देख कर हो गया था.

उसके भाइयों ने शादी के बाद उसी शहर में अपना अलग-अलग ठिकाना बना लिया था. पिताजी सत्तर वर्ष की अवस्था में अकेले जीवन की समस्याओं से संघर्ष कर रहे थे. उसे दुख था तो बस इतना कि वह और उसकी दीदी चाह कर भी पिताजी के लिए कुछ नहीं कर सकती थीं. उसने कभी कुछ करने की कोशिश की भी तो भाइयों को कष्ट हो गया. पिताजी के अकेले रहने में उन्हें कष्ट नहीं था. हां, कोई उनके लिए कुछ करे तो उनकी इज़्ज़त जाने लगती थी. वे उस पर

आरोप लगा देते कि वह संपत्ति के लालच में पिताजी की सेवा कर रही हैं. एक-दो बार तो सुकेश ने उसे कुछ नहीं कहा, फिर एक दिन उन्होंने मान-मर्यादा और समाज की ऊंच-नीच उसे समझाई थी. शायद भाई ने ही उन्हें फ़ोन किया होगा उसके पिताजी की देखभाल करने पर.

उसका मन कसैला हो गया. वह उठ कर चल दी. इस मन से वह मेल नहीं पढ़ना चाहती थी. उसने कॉफ़ी बनाई और कम्प्यूटर में स्टोर ग़ज़ल के कलेक्शन से मन हल्का करने के लिए लाइट म्यूज़िक ऑन कर दिया. अनायास ही उसका माउस ट्रेडीशनल गाने पर क्लिक हो गया.

काहे को ब्याहे बिदेस अरे लखिया बाबुल होमे,

हम तो बाबुल तोरे अंगना को बेलिया... अरे लखिया बाबुल मोहे...

ईंट-गारे का मकान अपने साथ कौन ले कर जाएगा भला! शाहजहां भी ताजमहल यहीं छोड़ कर गया था.

एक घर-आंगन में कोमल भावनाओं, स्मृतियों व अपनत्व की अनुभूति के सिवाय होता ही क्या है? उसकी आंखें झर-झर कर बहने लगीं. समाज के नियम बहुत क्रूर और कठोर होते हैं. उसे अनजाने ही बाबूजी याद आने लगे. कैसे वह उसे गोद में उठाकर खिलाते थे. सचमुच सब कहने की बात है. उम्र भले ही पचास पार कर जाए, आदमी का बचपन कभी नहीं मरता.

अगली ग़ज़ल बजने लगी.

ये दौलत भी ले लो, ये शोहरत भी ले लो, भले छीन लो मुझसे मेरी जवानी, मगर मुझको लौटा दो बचपन का सावन, वो काग़ज़ की कश्ती, वो बारिश का पानी...

अचानक उसे मेल पढ़ने का ध्यान आया. बेटी ने लिखा था, 'मैं बिदा हो कर नहीं जाऊंगी. आकाश बहुत अच्छा है और मेरी भावनाओं का ध्यान भी रखता है. उसके मम्मी-पापा अमेरिका में हैं, लेकिन वह यहां मेरे साथ क्लीनिक खोलना चाहता है. उसे अपने देश से बहुत लगाव है. उसके मम्मी-पापा भी भारत लौटना चाहते हैं, वे कहते हैं कि 'जो सुख और मान-सम्मान अपने देश में है, वह विदेश में नहीं है. वैसे भी अब अपना देश बहुत बदल गया है.'

मां, क्लीनिक के लिए लोन मुझे अपने नाम से मिल जाएगा और आकाश को मेरे घर में रहने में कोई आपत्ति नहीं है.' उसकी आंखों में ख़ुशी के आंसू तैर गए.

वह पूरे समाज को तो नहीं बदल सकती थी, लेकिन उसे ख़ुशी थी कि उसने बेटी को दकियानूसी समाज की शर्तों से ऊपर उठाकर अपनी शर्तों पर जीना सिखा दिया था.

कैसे बनें ऑफ़िस में सभी के प्रिय

आइए, उन छोटी-छोटी बातों पर गौर करते हैं, जिन्हें अपनाकर आप ऑफ़िस में सभी के प्रिय बन सकते हैं.

- दिलकश मुस्कुराहट, जो हर काम को आसान कर देती है. ऑफ़िस में जब कभी किसी से बात करें तो मुस्कुराते हुए गर्मजोशी से बात करें. आपका यह व्यवहार दूसरों पर सकारात्मक प्रभाव छोड़ता है. शिकायत, नाराज़गी, चीखना-चिल्लाना- इन सभी बातों से भरसक परहेज़ करें.
- कुछ लोगों की आदत होती है कि वे अपनी ही बात कहे जाते हैं. एकबारगी वे यह भी नहीं देखते कि सुननेवाला भी कुछ कहना चाह रहा है. अतः बात करते समय श्रोता को भी पूरा-पूरा मौक़ा दें अपनी बात कहने-सुनने का. एक अच्छे वक्ता होने के साथ-साथ अच्छे श्रोता भी बनें.
- ऑफ़िस में बातचीत में नम्रता और सरलता हो, इस बात का विशेष ध्यान रखें. आप चाहे कितने भी क़ामयाब हों, पर अपने दिलोदिमाग़ में अहंकार को पनपने न दें. बातचीत में 'मैं' व 'तुम' की जगह 'हम' का अधिक इस्तेमाल करें. इससे सहकर्मियों के बीच सहजता बनी रहेगी. साथ ही टीम वर्क को मज़बूती भी मिलेगी.
- यदि कोई काम नहीं हो पा रहा हो तो स्पष्ट कह दें. अक्सर लोग सहयोगी को बुरा लग जाएगा, यह सोचकर दूसरों का काम भी अपने सर ले लेते हैं. सहयोग करना अच्छी बात है, लेकिन यदि आपके ख़ुद के अधिक काम की वजह से दूसरा काम न हो पाए, तो उसे न लें. जीवन में स्पष्टवादी बनें. स्पष्ट कह देने से कई मुश्किलें व ग़लतफ़हमियां दूर हो जाती हैं. स्पष्टवादिता एक ऐसा गुण है, जो क़ामयाबी के लिए बहुत ज़रूरी है.
- यदि किसी ने कोई अच्छा काम किया है तो उसकी प्रशंसा ज़रूर करें. इससे उसका उत्साह बढ़ेगा. अच्छे काम के लिए दूसरों को उत्साहित व प्रोत्साहित अवश्य करें.
- कभी किसी पर बेवजह छींटाकशी न करें. साथ ही ग़लत शब्दों के इस्तेमाल से बचें. बेवजह किसी को पागल, बेवकूफ़, गधे आदि शब्दों से न नवाजें. मौक़े की नज़ाकत को देखते हुए बात करें.
- यदि कोई सहयोगी आपको अपना समझकर अपनी मन की कोई बात बताए तो आप भले ही उसकी मदद न कर सकें, पर उसकी भावनाओं को समझें. उसका पीठ पीछे मज़ाक न उड़ाएं. उसकी बात अपने तक ही रखें.
- ऑफ़िस का माहौल ख़ुशगवार और हल्का बनाए रखें और हमेशा हंसती-हंसाती रहें.

सीरियल रस

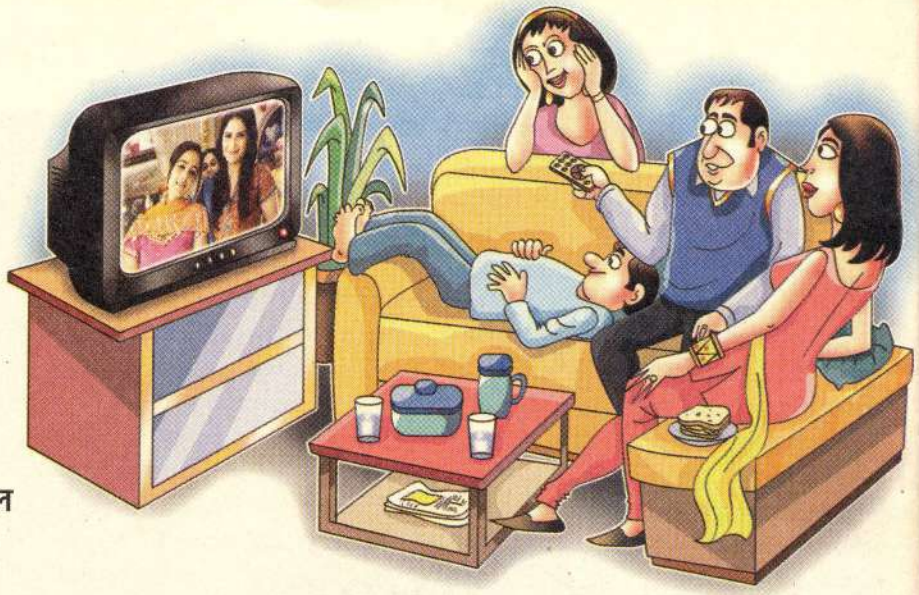

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

दूसरे रसों से इसकी तुलना कर इसकी तौहीन ना करें। आज सीरियल रस ने सबको आकंठ डुबो दिया है।

यदि आप सीरियल को रस मानने से इंकार करते हैं, तो निश्चय ही आपको साहित्य का ज्ञान नहीं है। आज समाज सीरियल के आईने से सब कुछ देखता है, दोस्ती-दुश्मनी, रिश्ते-नाते, फैशन, चालढाल, घर की साज-सजावट, व्रत-त्योहार और यहां तक कि खानपान, रहन-सहन सब सीरियलमय है। भाई से भाई का रिश्ता आज रामायण नहीं, सास-बहू सीरियल सिखाता है, रामायण, महाभारत के पात्र आज ग्रंथ से नहीं सीरियल के कलाकारों से जाने जाते हैं।

सीरियल रस का स्थायी भाव है सस्पेंस! सीरियल रस की उत्पत्ति के प्रभावस्वरूप आंखें फैल जाती हैं, हृदय विरक्ति से भर जाता है, उंगलियां रिमोट पर निरंतर चलने लगती हैं और विज्ञापन मस्तिष्क में हलचल मचाने लगते हैं। इसकी सीरियल ध्वनि निरंतर कानों में बजती रहती है और आगे क्या होगा यह जानने को मन बेचैन सा भटकता रहता है। इसके प्रभावस्वरूप खाने-पीने का स्वाद समाप्त हो जाता है। यह प्राइम टाइम और भोजन के बीच अकसर टकरा जाता है, जिससे दैनिक क्रियाकलाप रुक जाते हैं। हां, इसके कई विचित्र परिणाम भी देखने को मिलते हैं, जैसे घरों में लोग शाम को तहरी या खिचड़ी शौक से खाते हैं कि कहीं खाने-पीने के चक्कर में सीरियल का जिंगल ना निकल जाए। सच तो यह है कि ब्रेक ना मिले, तो रोज खिचड़ी भी ना बने। सीरियल रस का महत्व आप इसी से समझ सकते हैं कि जिस व्यक्ति के जीवन में यह रस नहीं होता, वह वर्तमान युग में असभ्य व देसी जीव समझा जाता है। उसे सभा-सोसायटी में कहीं स्थान नहीं मिलता और वह किसी से बात करने लायक नहीं रहता।

ड्रॉइंगरूम बेडरूम सीरियल विहीन, साक्षात पशु पुच्छ विषाण हीन अर्थात जिस घर के ड्रॉइंग और बेडरूम में सीरियल रस नहीं है, उस घर के प्राणी पूंछ और सींग रहित पशु के समान हैं। जिस तरह खाने में नमक ना हो, तो भोजन बेस्वाद लगता है, उसी तरह यदि जीवन में सीरियल ना हो, तो जीवन निस्सार लगता है।

ये सीरियल अपने-अपने प्रसारण समय के अनुसार दर्शकों पर प्रभाव उत्पन्न करते हैं। जैसे *सनसनी* का प्रसारण रात्रि के प्रथम पहर में, आइटम सॉन्ग का रात्रि के द्वितीय पहर में और योग का प्रसारण भोर में विशेष प्रभाव उत्पन्न करता है।

रसों की उत्पत्ति भी विशेष परिस्थितियों में होती है। सास-बहू में प्रवाहित हो रहे सीरियल रस का आनंद सपरिवार उठाना चाहिए, तो फैशन टीवी का रस एकांत वाच में मिलता है। इस रस में सराबोर व्यक्ति कुछ समय के लिए भगवान में लीन होने जैसा अपूर्व सुख प्राप्त करता है।

चलिए, मैं इस रस से उत्पन्न प्रभाव की एक झलक दिखलाता हूं... पुराने जमाने के सीरियल में कमरे में पंखा टंगा रहता था, घर में लालटेन होती थी, सीरियल की नायिका चूल्हा झोंकती और बरतन मांजती थी। मेकअप विहीन घर की महिलाएं सूती साड़ी पहनती थीं और आदमी कुरता-पाजामा। हां, घर में आदमी की चलती थी और महिला अकेले में बड़बड़ाती थी, 'मेरी तो कोई कुछ सुनता ही नहीं है।'

आज देखिए, घर में कोई काम ही नहीं है सिवाय उत्सव, पूजा या डांडिया रास-रंग के। पूरा घर सजा-संवरा नजर आता है। हर प्राणी मोबाइल युक्त है और कपड़े तो ऐसे जैसे कोई फैमिली डॉक्टर की तरह फैमिली ड्रेस डिजाइनर रखा हो। नौकर-चाकर तक खाना बनाते हैं, तो माइक्रोवेव में टीवी, डीवीडी पर पिक्चर देखते हुए। आज का इंडिया सीरियल में ऐसा ही नजर आता है। आज सीरियल रस टीवी का बटन ऑन करते ही प्रवाहित होने लगता है, कहीं किसी की प्रतीक्षा की आवश्यकता नहीं है। वाह, क्या सेट सजा होता है और चरित्रों के गहने, हीरे-मोती, घर का बेड रूम, ड्रॉइंगरूम सब कुछ तो देखने लायक होता है। बस यह समझ लीजिए कि इस रस को पीने के लिए आदमी की ज्ञानेंद्रियां कम हैं। कई बार लगता है कि सीरियल में इतना कुछ दिखाया जा रहा है कि 2 आंखें देखने के लिए कम पड़ जाएंगी। संगीत इतना मारक है कि 2 कान पूरा आनंद तक नहीं ले पा रहे हैं। आप माने या ना मानें, मैं तो इन सीरियलों के सूंघने तक में विश्वास रखता हूं। जब कोई पात्र हंसते और मुस्कराते समय आंख घूमाता है, तो मुझे अगले एपीसोड में साजिश की गंध आने लगती है। जब कोई सास अपनी नयी बहू को कोई टिप देती है, तो मुझे उसमें कभी उसके बहू होने की खुशबू आने लगती है। सिवाय सीरियल के भला अभी तक कोई ऐसा माध्यम बना है, जो घर के वातावरण को बिना धूप, हल्दी, चंदन या तुलसी के महका दे!

हां एक बात तो मैं कहना ही भूल गया। इस सीरियल में पुरुष चरित्र भी होते हैं। बड़े अधेड़ लोग शो पीस की तरह खड़े कर दिए जाते हैं, जो 3-4 एपीसोड में 1-2 डायलाग बोलते हैं, वरना सीरियल में बोलने का काम केवल स्त्रियों का हैं। यह पूर्णतया हमारे 21वीं सदी के समाज का आगाज है, जहां हर काम बस नारी शक्ति को करना है।

हे साहित्यकारो, इस शक्ति को पहचानो और अपने पुराने फंडे बदल लो। आज नारी ही गाड़ी चलाती है, चाहे घर में चलानी हो, सड़क पर या ऑफिस में।

विषय को ना बदलते हुए हम सीरियल रस पर अपनी चर्चा को केंद्रित करते हैं। आज युद्ध होता है, तो टीवी के परदे पर, स्टार बनता है, तो टीवी पर नाच-गा कर। लोग बच्चों को उदाहरण भी देते हैं, तो किसी इंडियन आइडल या सारेगामापा के सितारे का। अर्थात जीवन है, तो बस सीरियलमय, ऐसे में भला सीरियल रसपान के बिना जीवन रस हीन नहीं तो और क्या है। अत: अब समय आ गया है कि साहित्य में सीरियल रस को मान्यता प्रदान कर दी जाए। ◆

रेखांकन : अर्चना

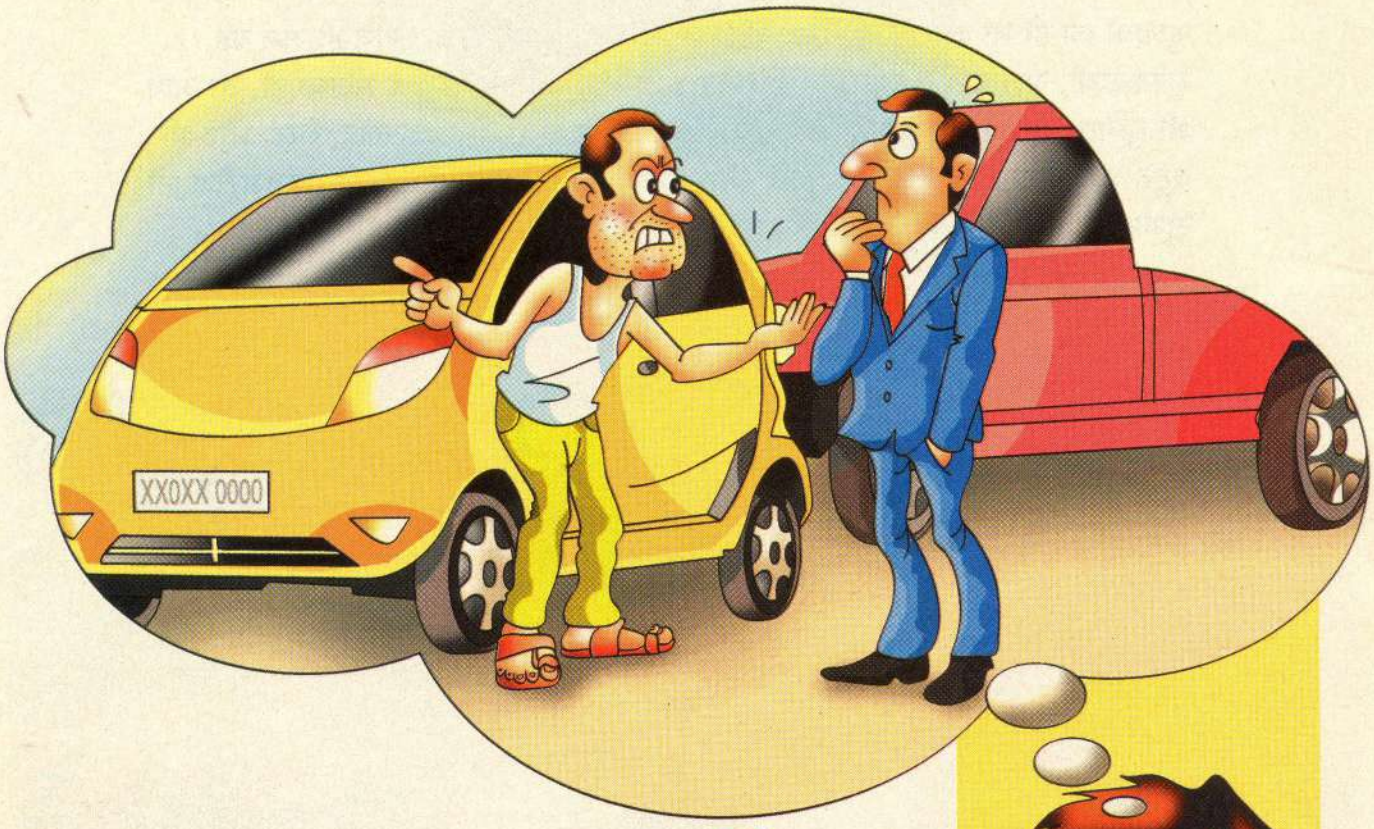

हाय अब भी कारपति ना हुए

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

लखटकिया कार ने आदमी की जिंदगी में वैसे ही उबाल ला दिया है, जैसे चुटकीभर नमक कोल्ड ड्रिंक की बोतल में ला देता है।

रेखांकन : अर्चना

हमारे पड़ोसी शर्मा जी से भाभी जी बोलीं, ''सुना है सोना महंगा हो गया है, हमारी शादी के जेवर रख कर क्या करना है बेच आओ, कोई 15-20 हजार रुपए तो मिल ही जाएंगे। थोड़ा पीएफ से निकाल लो, बाकी कहीं से लोन ले लो, पर अब कार बुक कर ही आओ। अब भी कारपति न बने, तो लोग क्या कहेंगे। हमें कोई ऐसे गए बीते बन कर नहीं रहना चाहते, जो लाख टके की कार ना खरीद पाए।''

सच है 1 लाख रुपए होते ही क्या हैं आज के जमाने में! अरे, आज 1 लाख में बच्चों का एडमिशन तक नहीं हो पाता। परिवार का पैकेज टूर भी लेना हो, तो इससे महंगा पड़ता है। भगवान ना करे कहीं सरदी-खांसी से बड़ी बीमारी निकल गयी, तो अस्पताल के चक्कर लगाने और टेस्ट कराने में ही लाखों चित्त हो जाते हैं। भाई साहब, अपने देश में कार का सपना कोई छोटा-मोटा सपना नहीं है।

किसी ने कहा कि लखटकिया कार कम पावर की है, तो दूसरा बोला यार पावर का क्या करना है, कार घर के दरवाजे खड़ी रहे यही बहुत है। जरूरत पड़ी, तो चलाने के लिए घोड़ा पाल लेंगे, नाम तो होगा कि कारवाले हैं। अरे यहां तो स्कूटर के इंजन पर कोई टीन की छत डाल कर कार बना दे, तो वह भी बिक जाएगी। वैसे देखनेवाली बात कुछ और भी है, कार तो 1 करोड़ की भी लांच हुई थी ऑटो एक्सपो में, पर चर्चा में है तो लखटकिया! जानते हैं क्यों?

क्योंकि इस देश में सपने बेचना एक बहुत बड़ा काम है। आज भले कोई कार ना खरीद पाए, इसे पाने का सपना तो देख ही सकता है। कहा भी गया है तरक्की करने के लिए सपना देखना जरूरी है। जरा सोचिए आदमी ने उड़ने का सपना ना देखा होता, तो

क्या हवाई जहाज बनता। आज से 10-20 साल पहले कोई कहता कि बिना कागज के पलक झपकते चिट्ठी पहुंच जाएगी, तो क्या कोई भरोसा करता? मगर नहीं सपने देखने का ही नतीजा है कि मिनटों में ई-मेल हजारों मील दूर पहुंच जाती है। कुछ लोगों ने सपने देखे, तभी तो वे चांद तक पहुंचे। अब तो वहां शहर बसाने की बात चल रही है।

ठीक है आदमी बड़ी कार के सपने नहीं देख सकता ना सही, आज छोटी कार का सपना तो देख ही सकता है।

मैं सीन देख रहा हूं—देश में मोबाइल शॉप की तरह लखटकिया कार की दुकानें खुली हैं। हर चौराहे पर बुकिंग सेंटर खुल गए हैं। आप पान खा रहे हैं और पनवाड़ी आपके टटपूंजिए पुराने स्कूटर को देख कर लखटकिया कार के गुण बता रहा है, लास्ट में यह कहना नहीं भूलता कि आपके स्कूटर पर एक्सचेंज ऑफर भी है कहिए तो बुक कर दूं।

उसके बाद अपनापन दिखाते हुए कहता है, ''सर, बेसिक मॉडल तो ले ही लीजिए। बच्चे भी क्या सोचते होंगे कि पापा पान में हजार रुपये बर्बाद कर देते हैं, लेकिन 800 की किस्त दे कर कार नहीं लाते। वैसे भी इसकी फ्री होम डिलीवरी है और ड्राइविंग लाइसेंस डिस्काउंट पर बन रहा है।''

परचूनिया तेल, चावल चीनी, पैक करने के बाद धीरे से कह रहा है, ''सर, लखटकिया के स्पेयर पार्ट्स भी रखने लगा हूं, जरूरत हो तो बताइएगा।''

कल हमारा दर्जी हिसाब लगा रहा था—कोई बात नहीं दूध बंद कर देंगे और लैंडलाइन कटा कर लाइफ टाइमवाला मोबाइल खरीद लेंगे। अरे कितनी किस्त आएगी यही कोई 2000 रुपए, पर इस बार कार ले कर रहेंगे। आदमी कमाता किसके लिए है और आज की डेट में जिंदा है, तो किसलिए? अरे भाई, कार के लिए ही तो, कहा भी गया है कार के बिना जीवन बेकार है।

अब आपसे क्या बताएं इस लखटकिया कार ने देश का क्या बुरा हाल किया है। अभी से रजिस्ट्रेशन एजेंट उत्साहित हैं। उनका मानना है रजिस्ट्रेशन अमाउंट कम है, तो क्या इस बार सेल इतनी होगी कि जम कर कमीशन आएगा। कुछ ने तो अभी से इस कमीशन के बल पर लखटकिया कार लेने का प्रोग्राम बना लिया है।

वैसे मार्केट में बाइकवाले इसका नेगेटिव पहलू भी देख रहे हैं। उन्हें लग रहा है कि इस कार के बाद उन्हें अपनी एजेंसी बदलनी पड़ेगी या ऑफर लाना पड़ेगा। निश्चय ही यह कार दुपहिया वाहन की बिक्री में आए उछाल पर ब्रेक लगा देगी।

मैं सीन देख रहा हूं कि आज कोई 10 लाख रुपए की गाड़ी से उतर कर भी शान नहीं दिखा पा रहा है। इतना ही नहीं सब्जी मार्केट, कबाड़ी बाजार आदि में साइकिल स्टैंड की जगह कार पार्किंग के बोर्ड लगे हैं।

अचानक कोई सैंडो बनियान में कार की पिछली सीट से निकल कर बड़ी गाड़ीवाले से लड़ रहा है—क्यों तुमने मेरी कार को डेंट मारा, निकालो 200 रुपए।

सड़क के किनारे स्कूटर और साइकिल मैकेनिक अपना बोर्ड बदल रहे हैं—*हमारे यहां लखटकिया कार की मरम्मत तसल्लीबख्श तरीके से की जाती है। रिपेअर के बाद 1 माह की गारंटी।* आप विश्वास मानिए इसके सड़क पर दौड़ने की कल्पना मात्र ने पैदल चलनेवालों में हलचल मचा दी है। वे सोचने लगे हैं अभी तक तो ब्लू लाइन से बचते थे, अब लखटकिया से भी बचना पड़ेगा।

वैसे ही बड़ी गाड़ीवाले सोच रहे हैं—इसके सड़क पर आने से पहले ही इसे फुटपाथ पर चलाने का ऑर्डर पास करा लें, वरना यह ना तो खुद तेज चलेगी और ना हमें आगे बढ़ने देगी।

सवाल यह है कि अब भी लोग देश में कारपति ना हुए, तो कब होंगे। क्योंकि यह कार लायी ही देश में उस तबके के लिए गयी है, जो खुद को *हैंड टु माउथ* कहता है। ◆

पावरफुल पोदीना

गरमियों में अकसर पेट की गड़बड़ी रहने की शिकायत होती है। विभिन्न तरह की गोलियों से पेट में गरमी महसूस होती, जी मिचलाने लगता है और मुंह की स्वाद ग्रंथियां मंद पड़ती जान है। ऐसी स्थिति में कुछ हल्का फ्लेवर का पानी या रस पीने का मन करता है। जब भी गरमियों में आपको पेट की गड़बड़ी महसूस हो, तो फौरन पोदीने से लाभ उठाएं।

- कम से कम 1/4 छोटा चम्मच पोदीने के बीज चबा कर खाएं और उसके बाद 1 गिलास गुनगुना पानी पी लें।
- अगर पोदीने के बीज नहीं हों, तो 1 चम्मच पोदीने के रस को 1 कप पानी में मिला कर पिएं।
- पोदीने का तेल बाजार में मिलता है। यह भी पेट संबंधी विकार को दूर करता है। पोदीने के तेल की 2 बूंदें एक कप चाय में मिला कर पिएं।

जी ना हो जब अच्छा : मौसम बदलने पर इसका सीधा प्रभाव आपके और आपके बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ता है। सूखी गरमी हो या उमस भरी, कई बार इस मौसम में जी मिचलता है और कुछ खाने की इच्छा नहीं होती।

- स्वाद ग्रंथियों को वापस जगाने के लिए 1 बड़े चम्मच सूखे पोदीने की पत्तियां और 1/2 छोटा चम्मच छोटी इलायची को 1 गिलास पानी में उबालें और पिएं।
- 1 बड़े चम्मच सूखे पोदीने की पत्तियां, 1 छोटा टुकड़ा अदरक, 1/2 छोटा चम्मच काली मिर्च, 1 बड़ा चम्मच चीनी और 1 कप पानी को एक साथ मिला कर उबालें और ठंडा होने के बाद पिएं।
- 3-4 दिनों से कुछ खाने की इच्छा नहीं हो रही हो, तो 1 चम्मच ताजी पोदीने की पत्तियों का रस, 1 चम्मच शहद और 1 चम्मच नीबू के रस को एक साथ मिला कर दिन में 3 बार 3 दिनों तक लें।

सांसें भी महकेंगी : दिनभर पानी पीने की मात्रा पर ध्यान देने के अतिरिक्त पोदीने से दोस्ती कीजिए। पोदीने की पत्तियों को सुखा का पाउडर बनाएं और इसे मंजन की तरह इस्तेमाल करें। समय-समय पर ताजी पत्तियों को भी चबा सकती हैं। दांतों में दर्द हो, तो सूखे पोदीने की पत्तियों के पाउडर में नमक मिला कर दांतों पर मलें।

और भी हैं फायदे : 1 कटोरी पोदीने को अच्छी तरह से धोएं, मसलें और 1/2 बड़ा चम्मच काली मिर्च व 1/2 बड़ा चम्मच सोंठ के पाउडर के साथ 2 कप पानी में तब तक उबालें, जब तक कि यह 1 कप ना रह जाए। इसे ठंडा करने के बाद छान कर 3 भागों में बांट लें और दिन में 3 बार लें।

- सिर दर्द हो रहा हो, तो 1 चम्मच ताजी पोदीने की पत्तियों का पेस्ट माथे पर मलें।
- मासिकधर्म समय पर नहीं हो, तो 1 बड़ा चम्मच पोदीने की सूखी पत्तियों को 1 बड़े चम्मच शहद के साथ मिलाएं और 2 दिन तक दिन में 3 बार लें।

खुश रहने के खतरे

जैसे कुछ लोगों को परमानेंट उदास रहने की आदत होती है वैसे ही कुछ लोग हमेशा खुश रहने की बीमारी से पीड़ित रहते हैं। मतलब यह कि भगवान भी धरती पर किस्म-किस्म के जीव बनाते हैं। मैंने एक-दो ऐसे लोगों को कुरेदा, 'भाई आप बिना बात के अकेले में कैसे हंस लेते हैं?' तो बोले, 'ऐसा कुछ नहीं है, दिमाग में चुटकुले चलते रहते हैं सो हंसी आती रहती है।'

भाई कमाल है, यहां तो दिमाग में बस नॉन स्टाप गृहस्थी की टेंशन चलती रहती है। दिमाग चुटकुला सोचने के लिए भी खाली हो सकता है, यह सोच कर ही तबीयत सिहर जाती है। क्या लोगों के पास इतना खाली दिमाग है? यहां तो कभी बच्चों के फीस की टेंशन तो कभी ऑफिस में टेबल पर अटकी फाइल की टेंशन दिमाग में चलती है। इससे फुर्सत मिली तो दिमाग बनिये के हिसाब पर जा कर टिक जाता है। कभी मौसम की मार सताने लगती है तो कभी कूलर और पंखे के जुगाड़ में दिमाग घूमने लगता है। अपने को तो कभी खुश रहने का कारण समझ में नहीं आता। मगर नहीं जिन्हें खुश रहने की बीमारी लग जाए वे सभी जी के जंजाल छोड़ कर दिल खोल कर आत्मा से हंसते हैं।

यकीन न मानिए मुन्ने की फीस जमा नहीं हुई, पेपर वाले का बिल नहीं चुकाया, उधार के जूते पर चल रहे हैं, मगर वे हैं कि हंसे जा रहे हैं और कुछ नहीं तो अपने आप पर हंस रहे हैं। जरा-सा छेड़ दीजिए, तो बोलेंगे, 'अब आपको क्या बताएं, इस महीने थोड़ा टाइट हो गए वो क्या है न बचपन का एक जिगरी दोस्त आ गया झुमरी तलैया से। अब कोई किसी के घर रोज-रोज तो आता नहीं। खातिर करना तो हमारा फर्ज है, उसी में कुछ बजट बिगड़ गया। कोई बात नहीं, चलता है। बच्चे की फीस लेट

कुछ लोगों के चेहरे पर हर समय हंसी झांकती मिलेगी। कोई बात भी कहेंगे तो आधी हंसी में उड़ा देंगे। आप समझ सकें तो ठीक वर्ना इन्हें क्या? और कहीं आपने इनके बे-वजह हंसने का राज पूछ लिया तो कहेंगे अरे, भई हंस ही तो रहे हैं कोई गुनाह तो नहीं कर रहे। अब इन्हें कोई कैसे समझाए कि बेबात हंसना बेवकूफी और पागलपन की निशानी है।

जमा कर देंगे, क्या है दस-बीस रुपये फाइन ही तो लगेंगे। मुझे याद है बचपन में एक बार मेरी फीस छः महीने बाद जमा हुई थी, बस नाम कटने ही वाला था कि बापू को पता चल गया। बोले, 'क्यों तुम फीस तो मुझसे हर महीने लेते हो जमा नहीं करते क्या?'

अब उन्हें क्या बताते कि पिछले चार महीने से फीस वाले दिन ही नई फिल्म रिलीज हो रही है और आप तो जानते ही हैं कि फर्स्ट शो देखने में कितना मजा आता है। बोल दिया गिर गए बापू और फटी जेब दिखा दी। थोड़ी डांट पड़ी, लेकिन उसके बाद उन्हें शक हो गया और फीस जमा करने के पैसे मिलने बंद हो गए। वे खुद जा कर फीस जमा करने लगे। हमने भी कुछ महीने बाद तरीका बदल दिया। अब कहता किताब खो गई, हो गया नई फिल्म का जुगाड़। फिर फर्स्ट डे, फर्स्ट शो चल पड़ा।

इसके बाद उन्होंने जोर का ठहाका मारा और बोले कि, 'अब वो जमाना कहां रहा, आज की फिल्में दो शो तक नहीं खींच पाती, हमारे जमाने में तो फिल्म लगी तो पच्चीस हफ्ते से पहले तो उतरती नहीं थी, जब तक दो-तीन दफा न देख लो फिल्म का मजा ही नहीं आता था और आज के हीरो हैं चूहे जैसे इन्हें पहचानना मुश्किल है, अरे पहले के हीरो को बच्चा-बच्चा स्टाइल से बता देता था पोस्टर देख कर।' देखा आपने आपको उनके बच्चे के फीस की टेंशन हो जाएगी और वे इस टेंशन में

भी अपने बचपन के जमाने को याद कर खुश हो रहे हैं।

मगर हम आपको बता दें, बेवजह खुश रहने के बड़े खतरे हैं। हमारे ऑफिस में दो लोग हैं एक हंसमुख और मनसुख लाल, हंसमुख बहुत बढ़िया काम करते हैं पर एक ही कमी है, हर समय हंसते रहते हैं इसके विपरीत मनसुख हर समय टेंशन में रहते हैं, लगता है सुबह-सुबह घर से पिट कर चले आ रहे हैं। नतीजा हंसमुख ज्यादा काम करके भी डांट खाते हैं और मनसुख केवल काम की चिंता करके प्रमोशन ले जाते हैं। यही हाल हमारे शर्मा जी का है। भगवान ने उन्हें भी एक नस फालतू दी है। हमेशा खुश रहने वाली। जब देखो तब बेहद खुश नजर आते हैं।

"कई बार खुश रहने में बड़े खतरे पैदा हो जाते हैं। कहीं आप पॉजिटिव थिंकिंग और लाफिंग थेरेपी वालों के चक्कर में खुश रहने की आदत पाल बैठे हैं तो समझो गए काम से।"

यह बात भाभी जी को खटक गई। उन्होंने सोचा जरूर इनका कोई चक्कर चल रहा है, वर्ना खुश रहने और हंसने की कोई बात तो है नहीं, घर में उन्होंने एक्सपेरिमेंट किया, मूंग की दाल बनाई, सब्जी में नमक डाला, रोटी जला दी, शर्मा जी तब भी खुश। कोई शिकायत नहीं। सब कुछ हंसते-हंसते झेल गए, बोले 'रोज एक ही काम से आदमी बोर हो जाता है, तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है, चलो आज बाहर चलते हैं। वहीं खाएंगे और आउटिंग भी हो जाएगी।' कमाल है यार, ऐसा भी क्या खुश रहना। शर्मा जी मस्ती में डूबे हैं और भाभी जी गुस्से में लाल-पीली हुई जा रही हैं।

उनका भरोसा शर्मा जी के अफेयर वाली कहानी पर बढ़ता जा रहा है और आज नहीं तो कल बस किसी भी दिन घर में विस्फोट होने वाला है। फिर देखें क्या करते हैं हमारे पड़ोसी शर्मा जी। इसकी उलट वर्मा जी पर बीती, उन्होंने चाल चली वे बाहर बेहद खुश रहते और घर में घुसते ही उदासी और चुप्पी की चादर ओढ़ लेते। अच्छी भली चैन से कट रही थी कि एक दिन उनके बेटे पप्पू ने ताड़ लिया और मम्मी से जड़ दिया मम्मी पापा बाहर से खूब हंसते हैं और घर आते ही सुन्न हो जाते हैं।

भाभी जी बोलीं, 'आने दे बेटा, आज ही खबर लेती हूं' और वर्मा जी के घर में घुसते ही सुनाई पड़ा, 'क्यों जी, क्या हुआ, घर में आते ही सांप सूंघ गया क्या?' वर्मा जी ऐसे सिटपिटाए जैसे रंगे हाथों पकड़े गए हों।

'देखो या तो बाहर मत हंसा करो या घर में खुल कर हंसा करो वर्ना लोग समझेंगे मैंने तुम्हारी हंसी पर पहरा लगा रखा है।' वर्मा भाभी जी की आवाज दरवाजा चीर कर बाहर सुनाई दी। ऐसे ही कई बार खुश रहने में बड़े खतरे पैदा हो जाते हैं। कहीं आप पॉजिटिव थिंकिंग और लाफिंग थेरेपी वालों के चक्कर में खुश रहने की आदत पाल बैठे हैं तो समझो गए काम से। लाफिंग थेरेपी वाले तो आदमी की नींद उड़ा देते हैं। सुबह पांच बजे पार्क में बुलाएंगे और कहेंगे जोर से हंसो। अब उसे तो नींद के मारे रोना आ रहा है, सुबह-सुबह उठ कर अगला हंसे क्या और जब वह बेवजह हंसता है तो लगता है गले से रोने की आवाज निकल रही है। पॉजिटिव थिंकिंग वाले और ग्रेट हैं। सूटकेस लुट जाए तो कहेंगे, शुक्र मनाओ कि एयर बैग बचा है।

अब जो लुटा है यह तो वही समझ सकता है कि दिल में किताना दर्द है। जरा सोचिए, इनकी बातों में आ कर कोई लुटने-पिटने वाला अपने घर अफसोस मनाने वाले को चाय नाश्ता कराए तो कैसा लगेगा। वैसे हमारे देश में खुश रहने वालों का यही हाल है, फटे हाल सड़क पर बैठे हैं और खुश हो रहे हैं। कुछ नहीं मिला तो चुन्नू इसी बात पर खुश है कि मुन्नु पांच बार से फेल हो रहा है, वह तो बस चौथी बार ही फेल हुआ है। हीरालाल को इस देश में अपने बेरोजगारी की पीड़ा इसलिए नहीं सताती कि पन्नालाल भी बेरोजगार है और जब देश में खुश रहने का ऐसा नेशनल कैरेक्टर डेवलप हो जाए तो कोई कर भी क्या सकता है।

■ मुरली मनोहर श्रीवास्तव

व्यंग्य प्रतियोगिता जीतिए रु. 500 का नोट

उदासी और वैराग्य के माहौल में सार्थक और श्रेष्ठ व्यंग्य लिखना आसान बात नहीं। आपकी कलम में एक धार होनी चाहिए, पैनापन होना चाहिए। यदि आप भी व्यंग्य लिखने में महारत रखते हैं तो इस प्रतियोगिता में जरूर भाग लीजिए। यदि आपका लिखा व्यंग्य चुना गया और पत्रिका में छपा तो आप पाएंगे रुपये 500 का नकद इनाम। व्यंग्य 1000 से 1200 शब्दों के बीच हो। अपना नाम, पता व फोन नंबर जरूर लिखें, तभी आपकी रचना पर विचार किया जाएगा।

हमारा पता है- **गृहलक्ष्मी**
X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज- II, नई दिल्ली- 110020

किसी आदमी की असली ज़िंदगी में दूसरी औरत कुछ और दे या न दे, पर टीवी सीरियल में वह जबर्दस्त टीआरपी की गारंटी तो देती ही है। पब्लिक की रुचि यह जानने में होती है कि स्टोरी का अंत क्या हुआ और धारावाहिक निर्माता कहानी को अंत तक कभी पहुंचने ही नहीं देते।

क्लाइमेक्स सीन में दूसरी औरत

अपनी पिटी हुई टीआरपी रेटिंग के कारण एक सीरियल दम तोड़ने वाला था। क्लाइमेक्स सीन में खलनायक को एक ट्रक के नीचे आ कर मरना था, वह भी तब, जब वह हीरोइन के बच्चे को किडनैप करने में लगा हो। डायरेक्टर को खलनायक के मरने का उतना दर्द नहीं था, जितना सीरियल के पिटने का। अचानक राइटर ने लास्ट सीन बदल दिया। उसने खलनायक को ट्रक के नीचे तो घुसाया पर मारा नहीं। बल्कि उसे एक प्राइवेट नर्सिंग होम में आईसीयू में दिखा दिया। सीन में वह ट्रक से भिड़ा तो ठीक-ठाक था, पर ऐन मौके पर ट्रक के पीछे आ रही एक बड़ी सी काली कार से एक लंबी सी औरत उसके गिरते ही उतरी और चेहरे पर रहस्यमयी मुस्कान फेरते हुए उसे गाड़ी की पिछली सीट पर डाल बचा ले गई। अस्पताल में उसकी बेचैनी भरी बातचीत से पता चला कि यह सीरियल के लीड रोल में चल रहे करैक्टर की दूसरी औरत है। इस सीन से सीरियल ऐसा पलटा कि अगले हफ़्ते टीआरपी में टॉप पर पहुंच गया। डायरेक्टर ने राइटर की पीठ ठोंकते हुए इस कामयाबी की पार्टी दे डाली। क्लाइमेक्स सीन में दूसरी औरत की इंट्री ने मरणासन्न सीरियल में जान फूंक दी और घर-घर से ख़बर आ रही थी कि सास बहू साथ बैठ कर दिल थामे इस सीरियल को देख रही हैं। हर कोई यह राज़ जानने को बेताब था कि यह काली गाड़ी वाली दूसरी औरत सीरियल के हीरो की पिछली ज़िंदगी के क्या-क्या सस्पेंस अपने भीतर छुपाए है। इस तरह दूसरी औरत की इंट्री भर से

एक पिटा हुआ सीरियल चल निकला था। यह बिल्कुल वही किस्सा हुआ, जो पिछले हफ़्ते हमारे ऑफ़िस के अटेंडेंट पियक्कड़ रामदीन के एक दुर्घटना में बुरी तरह घायल होने पर हुआ था। एक्चुअली रामदीन एक टॉप क्लास पियक्कड़ था और वर्षों से ऐसे ही पीकर सही-सलामत ऑफ़िस आ रहा था, पर होनी को कौन टाल सकता है। पिछले शनिवार को कुछ ज़्यादा लगा ली और घर से चला तो एक सफ़ारी से टकरा गया। चोट कोई ज़्यादा नहीं थी, क्योंकि सफ़ारी पर कोई डेंट नहीं आया था, पर रामदीन सड़क के बीचोबीच फ़्लैट हो गया। पहले तो कोई कुछ समझ नहीं पाया क्योंकि रामदीन के लिए खड़े-खड़े नशे में फ़्लैट हो जाना कोई नई बात नहीं थी। पर हालात नाज़ुक जान कुछ लोगों ने उसे टांग-टूग कर अस्पताल पहुंचाया। उधर उसके गांव में ख़बर पहुंच गई कि रामदीन गुज़र गया।
फिर क्या था, एक मैली-सी साड़ी में तीन बच्चों को कांख में दबाए एक स्त्री उसके घर टपक पड़ी। पता चला, वह ख़ुद को रामदीन को पत्नी बता रही है। इतना ही नहीं, उसके पीएफ़ और ग्रेच्युटी पर दावा ठोंक रही है। यहां दो बच्चों के साथ एक औरत पहले ही घर में मौजूद है, जिसे लोग रामदीन की पत्नी जानते हैं। क्लाइमेक्स यह कि जब गांव वाली औरत से पूछा गया कि क्या आप रामदीन की दूसरी पत्नी हैं तो वह भड़क गई। अरे दूसरी होगी ये, जो यहां बैठी है, मैं तो पहली हूं। भरोसा न हो तो यह फोटो देख लो। उसने अपने झोले में से दो-चार ब्लैक एंड व्हाइट तसवीरें निकाल कर सामने रख दीं और लगी दहाड़ मार कर रोने। उस ब्लैक एंड व्हाइट तसवीर में रामदीन तो क्या, वह वहां खड़े किसी का भी नाम ले लेती तो उसका कुछ न कुछ भाग उस फोटो से मिल ही जाता। नाक नहीं मिलती तो कान मिलते, होंठ न मिलते तो कंधे से मैच कर जाते। सो समझदार लोग दो कदम पीछे हट गए। सच क्या है, यह तो रामदीन बता सकता था या पुलिस छानबीन कर पता लगा सकती थी।
इस बीच कोई सिरफिरा पड़ोसी बोल पड़ा, अजीब बात है तुझे पंद्रह साल से रामदीन का होश नहीं आया। पिछले पंद्रह साल से ये बेचारी उस शराबी को झेल रही है, बच्चों को संभाल रही है और क्लाइमेक्स सीन में तुम टपक पड़ीं। असली बीवी का दावा लेकर पैसे बटोरने।

वह तो बदहवास-सी छाती पीटती भागी। हालत इतनी बुरी कि उसे कोई देखने वाला भी नहीं। हालत यह है कि अगर रामदीन को सिचुएशन का पता लग जाए तो वह तो होश आने के बाद भी आईसीयू में बेहोशी का नाटक कर पड़ जाएगा। वैसे मेरा दावा है कि सब कुछ जानने के बाद उसे होश में लाने के लिए दुगने डोज़ की ज़रूरत पड़ेगी। ठीक ऐसे ही हमारे ख़बरिया चैनल वाले क्लाइमेक्स सीन में दूसरी औरत

> **"जहां कोई सेलिब्रिटी कहीं किसी शहर में लाइव शो देने पहुंचे और उसकी पत्नी होने का दावा करने वाली वहां पहुंच जाए तो मीडिया की बांछें खिल जाएंगी। फिर तो वह बखेड़ा खड़ा होगा कि पूछिए मत"**

को प्लॉट कर देते हैं। जहां कोई सेलिब्रिटी कहीं किसी शहर में लाइव शो देने पहुंचे और उसकी पत्नी होने का दावा करने वाली वहां पहुंच जाए तो बस मीडिया की बांछें खिल जाएंगी। फिर तो वह बखेड़ा खड़ा होगा कि पूछिए मत। दरअसल पब्लिक की रुचि इस मामले में अंत देखने में रहती है। पर मीडिया कभी भी स्टोरी को द एंड तक पहुंचने नहीं देती।
दूसरी औरत के मामले में मेरा संदेह वीआईपी बंगलों की तरफ़ बहुत जाता है। बड़े-बड़े लोगों के साथ मेन गेट से बाहर आ रही सुंदरी उनकी कौन सी पत्नी है, यह जानना बड़ी टेढ़ी खीर होती है। ख़ैर, ये चैनल वाले भी अपनी रेटिंग बढ़ाए रखने के लिए हर जगह क्लाइमेक्स सीन में दूसरी औरत का जुगाड़ कर ही लेते हैं। कई बार लगता है कि दूसरी औरत का रोल नई एक्ट्रेस का स्क्रीन टेस्ट है। टीवी वाले न्यू कमर को न्यूज रूम में बुलाते हैं और उसे समझाते हैं, यह सीन जो तुम करने जा रही हो, तुम्हारा करियर बना सकता है। इसके लिए हमने लाइव स्क्रीन टेस्ट रखा है। अगर यह किरदार तुमने ठीक से निभा लिया तो समझो वारे-न्यारे हैं। अगर पब्लिक को तुम्हारी स्टोरी पर भरोसा हो गया तो इस समंदर में तुम्हारी गाड़ी चल निकलेगी। आजकल स्क्रीन पर दूसरी औरत से जबर्दस्त कोई किरदार नहीं है और बेकारी के इस ज़माने में इस रोल की ज़बर्दस्त मांग बनी हुई है। रोज़ कोई न कोई नया निर्माता हमसे नए चेहरे की मांग करता है इस रोल के लिए। इस चक्कर में कई बार तो इस रोल का प्रेजेंटेशन बेहद स्ट्रांग होता है। मन करता है टीवी वालों से पूछ लें कि आपकी राय में असली बीवी कौन सी है या फिर उनसे कहें कि आप दोनों औरतों को आमने-सामने बैठा कर बहस करा दें। फिर एसएमएस से पब्लिक वोटिंग करा लें। जिसके पक्ष में जनता की राय जाए, उसे ही असली बीवी माना जाएगा। विश्वास मानिए ऐसे शो रिएलिटी शो को पीछे छोड़ देंगे और एसएमएस वोटिंग एक करोड़ का आंकड़ा पार कर जाएगी। आखिर एक महिला की ज़िंदगी का सवाल है, पब्लिक अपनी अहम राय देने से कैसे चूक सकती है? वह भी तब जब एसएमएस इतना सस्ता हो गया है। दो-चार केस भी इस तरह के हिट हो गए तो प्रायोजकों की तो बाढ़ लग जाएगी। विज्ञापन कुछ इस तरह के होंगे, हमारे सौंदर्य प्रसाधन अपनाएं और दूसरी बन कर दिखाएं। पहली को मात देने के लिए अचूक विधियों की बुकलेट क्रीम के साथ मुफ़्त पाएं।
वैसे यह विधि उस सीरियल निर्माता के लिए तो रामबाण है जो कन्फ़्यूज है कि क्लाइमेक्स में दूसरी औरत किसे दिखाने से टीआरपी बढ़ेगी और इस चक्कर में उसने सीरियल को कई हफ़्ते से एक्सीडेंट के बाद आने-जाने और हाल-चाल पूछने वालों के बीच लटका रखा है। बात एसएमएस और रिएलटी शो की चल रही है तो मैं भी रामदीन के रियल किस्से का क्लाइमेक्स बता दूं। हुआ कुछ यों कि जब गांव से आई पहली वाली को यह पता चला कि लोग उसे पैसे का लालची बता कर ताना मार रहे हैं तो उसने कीटनाशक पी लिया और अब अस्पताल में रामदीन के बगल में भर्ती है। ज़िंदगी और मौत से वह भी जूझ रही है। हम सब की सहानुभूति रामदीन के साथ है कि वह किसी तरह ठीक हो जाए और अपनी उलझी हुई ज़िंदगी की पहेली को हल करे।
एक्सपर्ट कमेंट : हमारे विशेषज्ञों की टीम इस घटना से इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि पूरे मामले में रामदीन सरासर दोषी है। आदमी को कभी भी अपने जीवन में क्लाइमेक्स सीन का टीआरपी बढ़ाने के चक्कर में दूसरी औरत को इंट्री नहीं देनी चाहिए, क्योंकि जीवन के रियेलिटी शो में उससे जुड़ी कई ज़िंदगियां दांव पर लगी होती हैं। रील लाइफ़ की दूसरी औरत जहां निर्माता की झोली भरती है, वहीं रियल लाइफ़ में यह एपीसोड मुहल्ले और जान-पहचान में उसे धोबी का कुत्ता बना देता है जिसके लिए फ़ेमस है न घर का न घाट का। ■

रचनाएं आमंत्रित हैं

इस स्तंभ के लिए आपकी मौलिक एवं अप्रकाशित हास्य-व्यंग्य रचनाएं आमंत्रित हैं। अपनी लिखी ऐसी रचना हमें भेजें जो लोगों पर तंज़ करे तो गुदगुदाए-हंसाए भी। श्रेष्ठ रचनाओं को पारिश्रमिक देकर प्रकाशित किया जाएगा। अपनी रचना निम्नलिखित पते पर भेजें -

खट्टी-मीठी
संपादक जागरण सखी, एफ-21, 22, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश

आदर्श दूल्हे की चाहत में लड़की के घरवालों को कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं, आएं जरा जानें-

तमाम अड़चनों के बाद भी शादी के सीजन में मैं बैंड बाजों के शोर से सो नहीं पाता, यहां तक कि खास मुहुर्त वाले दिन तो घोड़ी बैंडबाजों और बारातियों तक का अकाल पड़ जाता है। कई बार तो लंबी सी जड़ाऊ चादर उढ़ा कर कई दूल्हे घोड़े और गधे पर ही निपटा दिए जाते हैं। कुछ लोग तो बरातियों के अभाव में परमानेंट रैली वालों को बराती बना कर ले आते हैं। छोटे-मोटे उपहार और दावत के लालच में ये खुशी-खुशी आते हैं तथा नाच गाने और ताली से बारात की रौनक बढ़ाते हैं। ऐसे बाराती बड़ी आसानी से पहचान में आ जाते हैं। उन्हें ताली बजाने की ऐसी लत पड़ी होती है कि ये मंगलाचार जयमाल और बिदाई तक में ताली बजाने से नहीं चूकते। यहां तक कि जब शादी की रस्मों में लड़की के घर वाले गाली दे रहे होते हैं तो ये कोरस में ताली बजा रहे होते हैं। जरा सीन देखिए लड़के के चाचा ताऊ धुल रहे हैं और बाराती ताली पीट रहे हैं।

खैर छोड़िये शादी ब्याह में सब जायज माना जाता है। वैसे क्या कभी आपने सोचा है कि वर वधू के विज्ञापन में लड़की के

खोज आदर्श दूल्हे की

आज के जमाने में आदर्श दूल्हा ढूंढना इंडियन आईडल ढूंढने से भी कठिन काम है। एक सही दूल्हे की खोज क्या होती है, यह किसी बेटी के बाप से पूछिये। वह भी तब जब स्वयंवर प्रथा समाप्त हो गई है। स्वयंवर अर्थात जहां लड़की की कोई च्वाईस नहीं है। मां-बाप ने जो वर ढूंढ़ दिया, वही सर माथे पर। भला है बुरा है, जैसा भी है... आगे की लाईन अधूरी छोड़ देता हूं, एक दूसरे ऐंगल से देखने के लिए।

वैसे भारत भूमि वीरांगनाओं से खाली नहीं है और दहेज लोभियों को जेल की हवा खिलाने या लालची पति की बारात लौटाने की घटनाएं होती रहती हैं, परंतु ये घटनाएं सुर्खियों से आगे नहीं निकल पाती हैं। इतने ठोंक बजा कर हाथ पीले करने के बाद भी मां-बाप का दिल धड़कता ही रहता है कि कहीं किसी अनहोनी की खबर न आ जाए और कहीं दामाद एनआरआई हुआ तो बेटी का भगवान मालिक है।

वैसे इतनी निराशा की बात भी नहीं है, विवरण के साथ गृहकार्य में दक्ष, सुंदर, सुशील रंग गेहुआं आदि लिखा रहता है, परंतु दूल्हे के विज्ञापन में कुछ नहीं लिखा जाता, ऐसा क्यों? बहुत हुआ तो लिख देंगे आय पांच अंकों में अब यह भी बंद हो गया है, क्योंकि चार अंकों में आय रखने वाला आजकल महंगाई के मारे दूल्हा बनने के सपने नहीं देख सकता।

चलिए मैं बता देता हूं सीधी सी बात है कोई भी दूल्हा आदर्श पैमाने पर खरा उतरता ही नहीं तो उसका विवरण क्या

कुछ लोग तो बरातियों के अभाव में परमानेंट रैली वालों को बराती बना कर ले आते हैं। छोटे-मोटे उपहार और दावत के लालच में ये खुशी-खुशी आते हैं तथा नाच गाने और ताली से बारात की रौनक बढ़ाते हैं। ऐसे बाराती बड़ी आसानी से पहचान में आ जाते हैं। उन्हें ताली बजाने की ऐसी लत पड़ी होती है कि ये मंगलाचार जयमाल और विदाई तक में ताली बजाने से नहीं चूकते।

दिया जाए, तभी तो कहावत प्रसिद्ध हो गई कि घी का लड्डू टेढ़ा भी भला होता है। अब क्या कहा जाए दूल्हा सीधा बना ही नहीं तो टेढ़ा ही चलेगा। जरा गौर से देखिए हमारे देश में आदर्श दूल्हा मिल ही नहीं सकता, इस देश में डिफेक्टिव दूल्हे ही मिलते हैं, जब है ही नहीं सही पीस तो मिलेगा कहां से। आज तक इस क्षेत्र में कोई भी प्रॉडक्ट तैयार ही नहीं हुआ जिसे रख कर दूसरा पीस डिजाईन किया जा सके। कोई स्मार्ट होगा तो इंटेलिजेंट नहीं, इंटेलिजेंट होगा तो कद-काठी से मार खा जाएगा, कद-काठी सही निकली तो आवाज दम तोड़ देगी। खुदा न खास्ता भगवान ने सब गुण दे भी दिए तो कमाई ढंग की नहीं मिलेगी।

इसके बाद दूल्हे के मां-बाप का नंबर आता है, चलिए ले दे कर दूल्हा मिल भी गया तो जरूरी नहीं कि दूल्हे के मां-बाप भी मुआफिक मिल जाएं, कहीं दूल्हा स्मार्ट हुआ तो मां-बाप गांव के निकलेंगे, बाप ऊंची पोस्ट पर हुआ तो दूल्हे की मां के तेवर नहीं मिलेंगे, अगर मां सीधी-साधी हुई तो बाप खुर्राट निकलेगा और कहीं खानदान मिलान करने लगे तो हो लिया काम। चाचा-ताऊ, मामा, नाना-नानी सभी का मन पसंद मिलना सचमुच टेढ़ी खीर है।

इतने पापड़ बेलने के बाद कहीं कोई आदर्श दूल्हा मिल भी गया तो रिश्ता कराने के लिए पंडित जी का नंबर आता है और कहीं पंडित जी सही मूड में न हुए और कुंडली न मिलने का राग अलाप दें तो। अब पंडित जी को कौन समझाए कि हमारे देश में जिनकी कुंडली मिल गई है, उनका हाल ही कौन-सा अच्छा है सो कुंडली मिले न मिले क्या फर्क पड़ता है, पर नहीं शादी से पहले तो कुंडली मिलनी ही चाहिए, पंडित जी की रेपुटेशन का सवाल है शादी के बाद न भी मिले तो चलेगा।

मामला समझ पंडित जी ने शादी से पहले तो कुंडली मिला दी बाद में न मिले तो उनकी क्या गलती, उनकी जिम्मेदारी तो शादी से पहले की है शादी के बाद की नहीं।

वैसे आदर्श दूल्हा न मिलने के पीछे जो प्रमुख कारण मेरी निगाह में आए हैं वो कुछ इस प्रकार है, जरा सोचिए सैकड़ों साल लग गए एक पुरुष क्रीम फेयर एंड हेंडसम बनने में इसी से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि फेयर एंड हेंडसम दूल्हा बनना कितना मुश्किल काम है, आप क्या समझते हैं लोगों ने कोशिश नहीं की ऐसा मॉडल बनाने की, अरे बहुत कोशिशें हुई पर आज तक कोई सही मॉडल बन ही नहीं पाया, किसी फैक्ट्री में। यहां तक कि लोग अभी तक यह नहीं फैसला कर पाए हैं कि आदर्श दूल्हे में कौन-कौन से गुण होने चाहिए।

दूसरे आज तक कोई भी पुरुष पत्रिका ढंग से प्रकाशित ही नहीं हो पाई, इसलिए एक आईडल दूल्हे को सजा-धजा कर कैसे पेश करना है, यह तक लोगों को नहीं पता। ऐसे में भला बताइए बनाएं तो क्या बनाएं और पेश करें तो किसको, तीसरा लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण कारण लड़के बचपन से या तो हीरो बनने के सपने देखते हैं या डॉक्टर, इंजीनियर जब कि लड़कियों को बचपन से ही पता होता है कि उन्हें एक दिन डोली में बैठना है, लड़को को पता ही नहीं चलता और एक दिन मां-बाप उन्हें पकड़ कर उनके सिर पर पगड़ी बांध दूल्हे में बदल देते हैं, ऐसे में वह बाकी सब कुछ तो बन जाता है, पर आईडल दूल्हा नहीं बन पाता।

इतनी समस्याओं के बाद भी अगर किसी को कहीं आईडल दूल्हा नजर आए तो कृपया सूचित करने का कष्ट करें, हमारे देश के बहुत से म्यूजियम अनोखी चीज के इंतजार में जगंह खाली रख कर बैठे हैं।

■ मुरली मनोहर श्रीवास्तव

व्यंग्य प्रतियोगिता जीतिए रु. 500 का नोट

उदासी और वैराग्य के माहौल में सार्थक और श्रेष्ठ व्यंग्य लिखना आसान बात नहीं। आपकी कलम में एक धार होनी चाहिए, पैनापन होना चाहिए। यदि आप भी व्यंग्य लिखने में महारत रखते हैं तो इस प्रतियोगिता में जरूर भाग लीजिए। यदि आपका लिखा व्यंग्य चुना गया और पत्रिका में छपा तो आप पाएंगे रुपये 500 का नकद इनाम। व्यंग्य 1000 से 1200 शब्दों के बीच हो। अपना नाम, पता व फोन नंबर जरूर लिखें, तभी आपकी रचना पर विचार किया जाएगा।

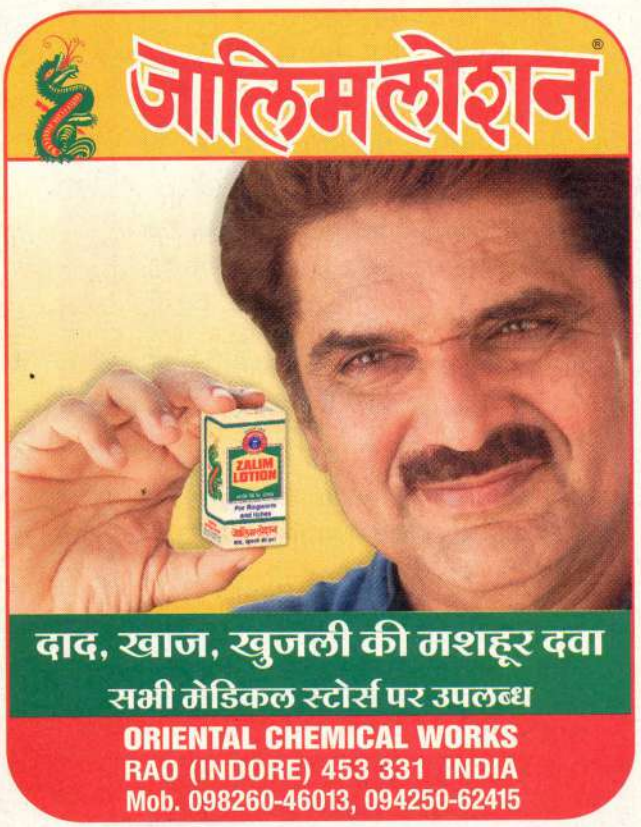

टूटे खिलौने

- मनोहर

भला खिलौनों के टूटने से कहीं आदमी टूटता है? खिलौने तो बस जज़्बात भर होते हैं और आदमी को जीने के लिए भावनाओं से अधिक ज़रूरत प्रैक्टिकल बनने की होती है. जज़्बात का बिखरना भी कहीं दिखाई देता है? वह तो एक अंदरूनी प्रक्रिया है.

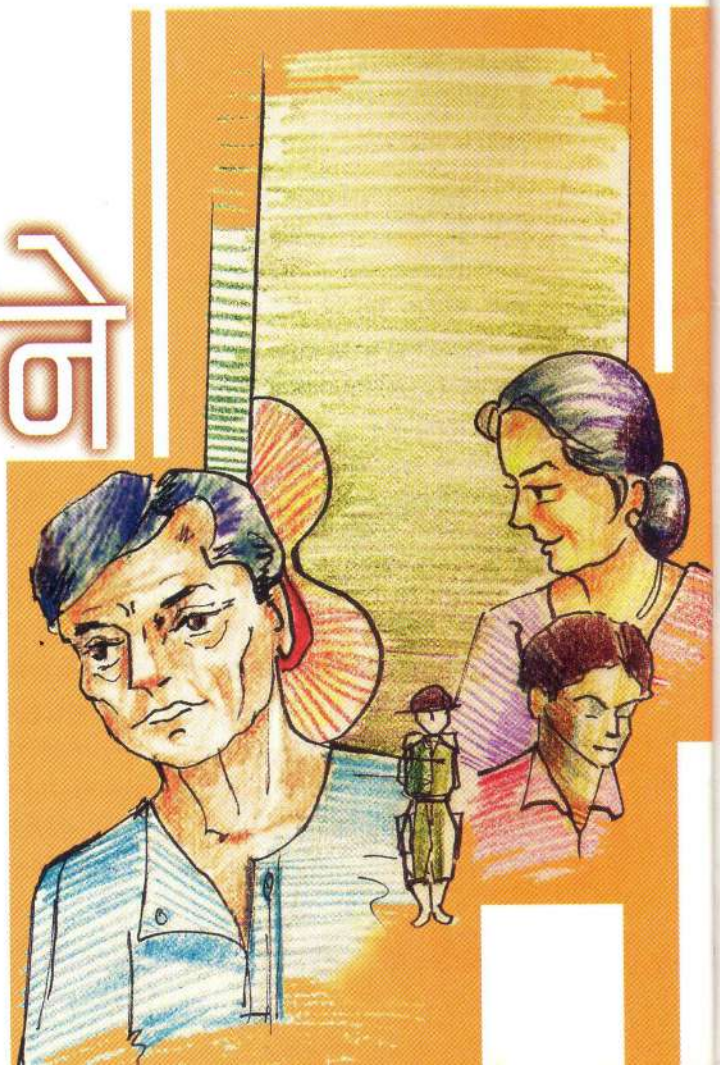

उसने कुर्सी का हत्था पकड़कर ख़ुद को संभाला. ऐसे लग रहा था कि चक्कर खाकर गिर पड़ेगा. आंखों के आगे अंधेरा छा रहा था. तभी भीतर से ज़ोर का अट्टहास सुनाई पड़ा, जैसे कोई कह रहा हो- बस, लड़ चुके अपने आप से? वह जवाब देना चाहता था उन बहुत से सवालों का, जो सालों से उसे घेरे हुए थे, लेकिन उसे लगा कहने के लिए वक़्त कम है. फिर वह कहे किससे? काश! कोई उसकी बात भी सुनता.

दर्द बढ़ रहा था कि तभी लगा कोई उससे कह रहा हो- बस, इतनी जल्दी हार मान गए. उसने आंखें फैलाकर और भीतर झांकने की कोशिश की, अरे यह तो उसके खिलौने की सेना के टैंक का सिपाही था. दर्द में भी वह मुस्कुरा दिया. 'हां दोस्त, तुम्हें तो मैं बचपन से जानता हूं और सचमुच तुम बहुत बहादुर हो.' सिपाही बोला, 'तुम्हें याद है मेरे हाथ टूटे हुए हैं और फिर भी मैंने हार नहीं मानी, जबकि तुम हो कि सब कुछ सही सलामत होते हुए भी टूट रहे हो. देखो, शरीर से टूटा आदमी नहीं हारता. हां, जिस दिन तुम दिल से टूट जाओगे, उस दिन सचमुच हार जाओगे. यह हार ज़िंदगी के जंग की हार होगी. उठो, तुम्हें अपनी बात कहने और अपना पक्ष रखने के लिए अभी और जीना है.' उसे लगा दिल का दर्द कम हो रहा है. कोई है जो उसे कह रहा है ज़िंदगी में इतनी जल्दी हार नहीं मानते. उसकी आंखों से झर-झर आंसू बह निकले.

उसने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई, गहरा अंधेरा था. बस बरामदे में नाइट बल्ब टिमटिमा रहा था. उसे अपना खिलौनेवाला सिपाही याद आया. बहुत प्यार करता था वह अपने इस सिपाही से. हर समय हाथ में दबाए पूरे घर में दौड़ता रहता और रात में सोता तो सिरहाने रखकर. उसे लगता जब तक यह सिपाही उसके साथ है, तब तक कोई उसे नहीं हरा सकता.

एक दिन छोटे भाई ने खेल-खेल में सिपाही को दीवार पर दे मारा. सिपाही के हाथ टूट गए. भाई जीतना चाहता था और सिपाही की बांह तोड़कर वह ख़ुद को विजयी समझ रहा था. तब उसने रोते हुए भाई की शिकायत पापा से की तो वे बोले, 'आपस में समझ लो. छोटा भाई है. उसे उत्पात करने का अधिकार है. हां, तुम बड़े हो, उसे क्षमा कर दो.' भाई को रोते देख वह बोला, 'भैया, आप भी मेरा खिलौना तोड़ दो, बात बराबर हो जाएगी.' और वह बोला, 'कोई बात नहीं भाई, मैं इसके हाथ जोड़ दूंगा, पर तुम्हारा खिलौना नहीं तोड़ूंगा. भला तुम्हारे खिलौने तोड़ने से मेरे सिपाही का हाथ थोड़ी जुड़ जाएगा. तुमने अपने कोर्स की क़िताब में वह कहानी नहीं पढ़ी,

जिसमें राजा ने तीर से घायल हंस उस राजकुमार को दिया, जिसने उसे चोट लगने पर बचाया था. उसे नहीं, जिसने उसे तीर मारकर धरती पर गिराया था. जानते हो क्यों? क्योंकि मारनेवाले से बचानेवाले का अधिकार ज़्यादा होता है.' आह! फिर एक टीस उठी. बड़े होने पर भाई को मकान चाहिए था और उसने रिश्तों को खिलौने की तरह ही तोड़ दिया. अजीब-सी बात है... उसके साथ वह तो सदैव ही सही रास्ते पर चलता है, नीति का ध्यान रखता है और सब के सब उसी से नाराज़ हो जाते हैं. और एक दिन दिल की दीवार पर भावनाओं का ख़ून बिखर जाता है. वह सिर से पांव तक लहूलुहान हो उठता है और फिर ऐसे ही कभी कोई सिपाही, तो कभी वायलिन उसे जीने की ताक़त दे देता है.

वायलिन का ध्यान आते ही एक पुरानी बात याद करके उसे हंसी आ गई. उस दिन वह ख़ुशी बांटने के लिए घर में वायलिन बजा रहा था कि भीतर से आवाज़ आई, 'प्लीज़, यह बाजा मत बजाया करो. तुम्हें भले ही इसके सुरों से ख़ुशी मिलती हो, पर आस-पड़ोस से लेकर घर के सभी सदस्य तुम्हारे इस वायलिन के बजने से डिस्टर्ब हो जाते हैं.' इतना सुनते ही उसका हाथ फिसला और वायलिन का तार टूट गया. उसके बाद वायलिन बजना बंद हो गया. ऐसी कितनी ही घटनाएं भरी पड़ी हैं ज़िंदगी के सुरों के बिखरने की, फिर भी वह सही सलामत है. भला खिलौनों के टूटने से कहीं आदमी टूटता है. खिलौने तो बस जज़्बात भर होते हैं और आदमी को जीने के लिए भावनाओं से अधिक ज़रूरत प्रैक्टिकल बनने की होती है. जज़्बात का बिखरना भी कहीं दिखाई देता है? वह तो एक अंदरूनी प्रक्रिया है.

उसने फ्रिज से पानी की बॉटल निकाली और ग्लास में पानी डाल पीने लगा. जैसे-जैसे पानी की घूंट गले के नीचे उतरती, उसे लगता तबियत बेहतर हो रही है. यह क्या है? कौन है? जो उसे अकेले में तंग करता है, उसके अपने ही विचार तो उसे मथ डालते हैं.

उसे लगा इस बार उसे शतरंज के मोहरे चुनौती दे रहे हैं. ज़िंदगी इतनी सरल होती तो आज साठ पार करने के बाद सभी ज़िम्मेदारियों को पूरा कर वह इतना बेचैन न होता. उसे लगा चौसर पर बिछा काला बादशाह हंस रहा है- देखो, तुम्हें सफ़ेद मोहरे से खेल रहे अपने ही लोगों को मात देनी है. तुम्हें अपने पैदल लड़ाने हैं, घोड़े और ऊंट कटाने हैं और हर हाल में मुझे बचाना है.

वह चौंका. यह खिलौने का बादशाह उसके दिल में बैठकर कैसा क़िरदार निभा रहा है. नहीं, असली ज़िंदगी कोई शतरंज की बिसात नहीं है जिस पर रिश्ते दांव पर लगा दिए जाएं. वह क्यों अहंकार के बादशाह को बचाने के लिए अपने हाथी-घोड़े बलिदान कर देता है?

इससे पहले कि वह कुछ और सोचता, भावनात्मक दौरा आगे बढ़ता तभी फ़ोन की घंटी बज उठी. इतनी रात गए कौन फ़ोन कर रहा है. उसका दिल धकड़ने लगा. कहीं यह भी कोई भ्रम न हो? अपने आप से बातचीत का ही हिस्सा. मगर नहीं फ़ोन की घंटी लगातार बज रही थी और उसके जगे होने का एहसास करा रही थी.

वह उठा. उसने रिसीवर उठाया और धीरे से बोला, "हैलो..."

उधर से आवाज़ आई, "हैलो पापा, आप सो तो नहीं रहे थे. हैप्पी बर्थडे पापा."

"कौन? कौन बेटा अरूप तुम..." उसकी आंखों से झर-झर आंसू बह निकले. "कैसे हो बेटा? पूरे तीन साल बाद तुम्हारी आवाज़ सुन रहा हूं."

"मैं ठीक हूं पापा. पहले सोचा रात में फ़ोन करूं कि न करूं, फिर दिल नहीं माना."

"बेटा, कब से तरस रहा था तुम्हारी आवाज़ सुनने को."

"तो पापा फ़ोन क्यों नहीं किया?"

"बेटा, तुमने भी तो फ़ोन नहीं किया मुझे."

"ओह, पापा आप मुझसे नाराज़ थे और मैं डर रहा था."

"बेटा, मैं नाराज़ था तो क्या? तुम माफ़ी मांग लेते या मुझे मना लेते."

"पापा, मैं आपको बचपन से जानता हूं. आप अपनी जगह सही होते हैं."

"बेटा, जब मैं सही हूं, तो तुम मेरी बात मान क्यों नहीं लेते?"

अरूप बोला, "पापा, बस यही डर तो सबको आपसे बात करने से रोक देता है. पापा, आप इतने ज़िद्दी क्यों हैं?"

अरूप को लगा उधर से रोने की आवाज़ आ रही है. "बेटा, मैं क्या करूं? अब इस उम्र में ख़ुद को बदल तो नहीं सकता. मैं सही हूं इतना तो जानता हूं, पर आज पता लगा कि मैं ज़िद्दी भी हूं. ज़िद्दी हूं तभी तो अकेला हूं."

तभी अरूप बोला, "पापा प्लीज़, आप रोइए मत. आप तो बहुत मज़बूत हैं और मैं आज आपका दिल नहीं दुखाना चाहता. आई एम सॉरी पापा. लीजिए, मम्मी से बात करिए."

"हैलो शेखर, ओ शेखर मेरी भी सुनोगे कि बस अकेले ही रोते रहोगे."

"हां बोलो, तुम्हारी बात नहीं सुनूंगा तो किसकी सुनूंगा."

"शेखर, मैंने बहू देखी है बहुत सुंदर और सुशील है. देखो, अरूप तुम्हारा बेटा है और उसका अपनी ज़िंदगी के बारे में फ़ैसला

लेने का कुछ हक़ तो बनता है.''

''बात उसकी पसंद की नहीं है, तुम तो जानती हो मैं उसे कितना प्यार करता हूं. क्या वह मेरी एक बात नहीं मान सकता था. भारतीय रीति से किसी हिंदुस्तानी लड़की से शादी कर लेता. अपने देश में क्या लड़कियों की कमी है.''

''शेखर, एक बार बहू को देख तो लो, मेरा तो दिल जीत लिया उसने. सुनो, अरूप का इंडिया आने का मन कर रहा है और बहू भी आना चाहती है. उसके पापा अमेरिकन हैं, पर उसकी मां केरल की है और पूरे भारतीय संस्कारवाली. उसके मामा भारत में रहते हैं और दोनों पूरे रीति-रिवाज़ से शादी करना चाहते हैं.''

उसे कुछ अच्छा महसूस हुआ. ''ठीक है, जैसा तुम लोग चाहो.''

अरूप बोला, ''पापा प्लीज़, मुझे माफ़ कर दो.''

शेखर बोला, ''बेटा, मुझसे अलग होकर तुम देश से दूर हो, दिल से नहीं.''

''पापा, मैं आ रहा हूं.''

अरूप को लगा अब पापा कुछ बोलने की स्थिति में नहीं हैं. वह धीरे-से बोला, ''पापा, अपना ख़याल रखना.''

उसके शरीर की तनी हुई नसें ढीली पड़ चुकी थीं और अपने आपसे वार्तालाप का स्वर कुछ स्पष्ट हो रहा था. इस समय उसे अपना वायलिन बेतरह याद आ रहा था. उसने आलमारी के ऊपर नज़र डाली. वायलिन वहीं था, कुछ धूल जम गई थी. उसने हिम्मत कर उसे उठा लिया. एक टूटा हुआ तार जैसे कुछ कह रहा हो. उसने बेस से तार ढीला किया और टूटे तार को जोड़ जैसे ही हाथ फेरा वायलिन से सुर फूट पड़े. उसका चेहरा मुस्कुरा उठा. एक, दो, तीन और वह धीरे-धीरे वायलिन के सुर साधने लगा. चेहरे से तनाव के बादल छंट रहे थे.

इससे पहले कि वह उन सुरों में खो जाता, फ़ोन फिर बज उठा.

इस बार वह शांत था, कोई बेचैनी नहीं और न ही रात का एहसास.

उसने आराम से फ़ोन उठाया. आज उसका बर्थडे है और ज़रूर यह भी किसी बहुत अपने की ही आवाज़ थी. ''भैया, जन्मदिन की बधाई.''

''कैसे हो सुधीर? बड़े सालों बाद तुम्हें भैया याद आए.''

''भैया, क्या करूं? अपनी ग़लती का जितना एहसास होता, उतना ही मैं संकोच के मारे तुम से बात नहीं कर पाता.''

''क्या सुधीर, कहीं अपनों से बात करने में भी संकोच होता है. आज पांच साल बाद बात भी कर रहा है, तो बड़े भाई को रुलाने के लिए.''

''भैया, मुझे घर पर कब्ज़ा करके कुछ भी हासिल नहीं हुआ. मैंने थोड़े-से ज़मीन के लिए जीते-जागते अपने लोगों को खो दिया. इसका एहसास मुझे तब हुआ, जब शादी के बाद पिंकी बेटी ने कहा कि पापा, यह घर मेरा नहीं है और मेरा मायका ताऊजी के घर में है. मैं इस घर में तभी क़दम रखूंगी जब आप ताऊजी को यहां लेकर आओगे. भैया, मुझे यह घर काटने को दौड़ता है. सच है भैया, ईंट और गारे से तो मकान बनता है, घर तो घरवालों से बनता है. भैया, आप यहां आ जाओ या फिर मुझे अपने पास बुला लो. रहना ही तो है, कहीं भी रह लूंगा. दीवारें हमारे जाने के बाद भी यहीं खड़ी रहेंगी. हां, दिल के बीच की दीवारें गिर गईं तो जीवन जीना आसान हो जाएगा. वह लगातार बोलता ही जा रहा था.

''भैया, तुम्हें याद है, जब हम बालू के टीले में घरौंदा बनाते थे तो एक तरफ़ से तुम अपना दरवाज़ा बनाते और दूसरे तरफ़ से मैं अपना और फिर जब हम अपने-अपने दरवाज़े में हाथ डालते, तो हमारे हाथ उस घरौंदे में एक-दूसरे को पकड़ लेते और हम कहते, हमारे दरवाज़े अलग हो सकते हैं; पर घर नहीं.''

''सुधीर, अब तू भी मुझे रुलाएगा क्या? अभी अरू का फ़ोन आया था, वह आ रहा है.''

''क्या कह रहे हो भैया? अरू आ रहा है? मेरी तो आंखें ही तरस गई थीं उसे देखने को.''

''हां सुधीर, अरू आ रहा है और बहू भी पसंद कर ली है उसने. उसकी शादी यहीं करनी है बड़ी धूमधाम से और सुनो, पिंकी बेटी को मेरे पास भेज देना. कह देना तुम्हारे ताऊजी और मुझमें कोई मतभेद नहीं है. अब बचे ही कितने दिन हैं हमारी ज़िंदगी के, जो गिले-शिकवे लेकर ऊपर जाएं.''

''ऐसा मत कहो भैया, भगवान तुम्हें लंबी उम्र दें.''

''सुधीर, देर मत करना, कल सुबह ही आ जाओ, सारी तैयारी तुम्हें ही करनी है.''

इस बार शेखर को लगा कि सुधीर रो रहा है. ''क्या हुआ सुधीर? तू रो क्यों रहा है?''

''भैया, यह सोचकर कि तुम्हें कितना ग़लत समझ बैठा? मुझे पता होता कि तुम इतनी आसानी से मुझे माफ़ कर दोगे, तो भला मैं माफ़ी मांगने में इतने साल क्यों लगाता?''

''सुधीर, इतनी उम्र बीत जाने पर भी अपने भाई को नहीं समझ पाए. अब तुम भी अरूप की तरह यह मत कह देना कि भैया, तुम ज़िद्दी हो.'' दोनों भाई हंस पड़े.

''और सुनो सुधीर, कल आना तो हीरा हलवाई की बालुशाही ज़रूर लाना. मुद्दत हो गई मुझे ऐसी बालुशाही खाए.'' इसके बाद अगर फ़ोन हाथ में रहता भी तो बात नहीं हो पाती.

फ़ोन रखते ही शेखर को लगा, कहीं ऐसा न हो ख़ुशी से हार्ट फेल हो जाए.

वह सोचने लगा- जब मिट्टी के टूटे और बेजान ख़िलौने फिर से जुड़ सकते हैं, तो हमारे टूटे रिश्ते, जिनमें एक-दूसरे की भावनाओं को समझने की ताक़त है, वे दुबारा क्यों नहीं जुड़ सकते? सचमुच उसे लगा, टूटे रिश्तों को जोड़कर वह ज़िंदगी की जंग जीत गया है.

कभी सात जन्मों का ख़ुशनुमा बंधन रही शादी, अब उमर क़ैद की सज़ा बन चुकी है। ज़ाहिर है, इसके पीछे समाज के साथ-साथ हालात और हमारे संस्कारों में आए बदलाव भी पूरे ज़िम्मेदार हैं। चाहें तो आप भी इनकी पड़ताल कर सकते हैं, अपने-अपने अनुभवों के बरक्स।

शादी का लड्डू वाया सात ख़ून माफ़

भाई साहब कहते हैं शादी का लड्डू खाने और न खाने वाले दोनों पछताते हैं। सवाल यह है कि खाकर पछताएं या ऐसे ही ललचा-ललचा कर पछताते रहें? इस विषय को गहराई से टटोलने के लिए मैंने कुछ मॉडर्न हथियार अपनाए। अभी एक ख़बर आई कि वेलेंटाइन डे पर मुंबई मैरेज ब्यूरो के दफ्तर में 14 जोड़ों ने शादी के लिए रजिस्ट्रेशन कराया। साथ ही यह ख़बर भी आई कि उसी दिन 40 जोड़ों ने तलाक़ की अर्जी लगाई। अब आप जो अर्थ निकालना चाहें, निकालें। मैं तो इसे शादी के लड्डू के आईने में देख रहा हूं।

ख़ैर, अगला वाक़या है फिल्म 'सात ख़ून माफ़' का। जबसे यह फिल्म आई, मर्दों को झुरझुरी हो रही है। शादीशुदा लोग तो इसके डायलाग से पत्ते की तरह कांप रहे हैं। कहा गया है – हर पत्नी ज़िंदगी में कम से कम एक बार तो ज़रूर सोचती है कि अपने पति का ख़ून कर दे। शर्मा भाभी जी ने शर्मा जी से कहा, 'सुनो, वो एक नई फिल्म आई है। मुझे दिखा लाओ।'

शर्मा जी बड़े ख़ुश हुए कि कितने दिन बाद श्रीमती जी फिल्म देखने की फ़रमाइश कर रही हैं। पर जैसे ही उन्होंने कहा 'सात ख़ून माफ़' शर्मा जी का ख़ून जम गया। वे बोले, 'बेग़म गोलमाल रिटर्न देख आते हैं।'

वे बोलीं, 'देखो फिल्म देखनी है तो सात ख़ून माफ़ डार्लिंग, वर्ना कोई नहीं।'

फिर भी शर्मा जी ने हिम्मत जुटाई और बोले, 'मुझसे क्या नाराज़गी हो गई बेग़म?'

वे छूटते ही बोलीं, 'क्या बताऊं, फिल्म का ट्रेलर देखकर तो लगता है कि जो सात ख़ून हुए हैं, वो सारे ही मरने लायक थे और तुम्हारे में तो वे सारी ख़ूबियां हैं जो उसके एक-एक कैरेक्टर में हैं। तुम्हारा तो सात बार ख़ून हो सकता है। पर मेरी समझ में नहीं आ रहा कि एक पति का ख़ून सात बार कैसे किया जा सकता है!'

अब शर्मा जी थोड़े गरम हुए, 'तुम फिल्मी बातों को रीअल लाइफ में ले आती हो। ज़रा सोचो मैंने कभी तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुंचाई?'

भाभी जी का कलेजा थोड़ा नर्म हुआ। बोलीं, 'तुम ग़लत समझ रहे हो। मैं तुम्हारे लिए थोड़ी कह रही थी। मेरा मतलब तो पति नामक प्रजाति से था। वह होती ही ऐसी है कि उसका सात क्या दस ख़ून कर दिया जाए तो भी कम है। बाई द वे, एक बात बताओ तुम सात ख़ून माफ़ से इतना डर क्यों रहे हो? यह कोई ड्रैकुला वाली फिल्म थोड़ी है! जब तुम दो गज ज़मीन के नीचे और कब क्यों और कहां देख कर नहीं डरे तो इस फिल्म में क्या है?'

शर्मा जी कैसे बताते कि हॉरर फिल्म और पति के मर्डर की फिल्म में बहुत फ़र्क़ होता है। अभी वे कुछ सोच पाते कि भाभी जी बोलीं, 'वह दिन भूल गए जब तुमने माई वाइफ्स मर्डर दिखा कर मेरा मेंटल टॉर्चर किया था?'

शर्मा जी क्या कहते कि उन्होंने दूर-दूर तक नहीं सोचा था कि इस पुरुषवादी मानसिकता में इतनी सशक्त कमर्शियली हिट महिला फिल्म बनेगी! अभी तक तो उसे ही सशक्त फिल्म मान लिया जाता था जिसमें महिला किसी सामाजिक कुरीति का विरोध करती या अपने ऊपर हो रहे

अत्याचार के ख़िलाफ़ उठ खड़ी होती। पर शादी जैसे नितांत पुरुषवादी विषय पर किसी स्त्री का चुनौती देना शर्मा जी को अखर गया था। ख़ैर, इस मामले को यहीं छोड़ते हैं और इस लड्डू को देखने के दूसरे ऐंगल पर नज़र डालते हैं। पुराने ज़माने की शादियां फेविकोल वाली होती थीं, जो सात जनम तक क़ायम रहती थीं। हीरो कहता था 'जनम-जनम का साथ है हमारा-तुम्हारा...' और जब रोमैंटिक सीन होता तो कहता '...क़ैद मांगी थी रिहाई तो नहीं मांगी थी' अर्थात शादी की क़ैद बड़ी प्यारी और ग्लैमरस क़ैद हुआ करती थी। फिर मिडिल एज आई, जिसमें शादी का वादा 'सजना साथ निभाना' तक सिमट गया अर्थात कमिटमेंट तो है, पर बस इस जनम की। अब जो मॉडर्न ज़माना है उसका तो कहना ही क्या! कोई नहीं कह सकता कि शादी कितने दिन, घंटे या मिनट तक टिकेगी। अब यह 'उमर क़ैद की सज़ा' बन गई है। गाना कहता है 'ज़ोर का झटका हाय जोरों से लगा, शादी बन गई उमर क़ैद की सज़ा'। शादी को सज़ा की तरह सोचने का सिलसिला चल पड़ा तो आप समझ सकते हैं कि इस लड्डू में मिठास कितनी बची होगी। मैंने कुछ और रिपोर्टें देखीं तो विदेशों में भारतीय शादी के प्रति बहुत क्रेज़ पाया गया। सबसे आकर्षक बात उन्हें यह लगी कि भारतीय शादी दुनिया में सबसे ज़्यादा टिकाऊ होती है। आप देखेंगे कि बहुत सी विदेशी हस्तियों में भारत आकर यहां के रीति-रिवाज़ से शादी करने का चलन बढ़ सा गया है।

वैसे मुझे भारतीय शादी के टिकाऊ होने का कारण कुछ और ही समझ में आया। ख़ासकर पहले की शादियों में। आजकल की शादियों में तो भारतीयता है ही नहीं। मामला शादी-ब्याह कम पार्टी का ज़्यादा हो गया है। हर कोई बस यह देखता है कि खाने-पीने में स्टॉल कौन-कौन सा लगा है। बारातियों का हाल यह है कि ढूंढ-ढांढ कर जुटाने पड़ते हैं। पहले यह मामला नहीं था। हल्दी लगने से कंगन टूटने तक हर रिश्तेदार को बराती के घर रहना पड़ता था और शादी का सीन फेरे पड़ने के सात दिन पहले से शुरू होकर तीन दिन बाद तक चलता था। ऐसे में दूल्हे की दो स्तर पर मानसिक कसरत होती। एक तो पर्सनल लाइफ नाम की कोई चीज़ नहीं बचती थी उसकी। हर नाता-रिश्ता सामाजिक ज़िम्मेदारी में बदलना शुरू होता इन रस्मों के साथ। दूसरे घुमक्कड़ प्रजाति के दोस्तों से नाता टूटना शुरू होता उसका। वह लाख तड़पता कि खिड़की से कोई ताज़ी हवा आ जाए या कोई दोस्त-यार उसे मार्केट टहला लाए, पर मजाल है कि हल्दी लगने के बाद कोई बेजा हरकत हो जाए। तब उसे एहसास होता कि भैया शादी केवल उसकी नहीं हो रही है। उसके घर आने वाली लड़की पर माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-ताऊ, नाना-नानी, मामा-मामी... सभी का हक़ है और जब उनके हक़ पूरे हो जाएंगे, तभी घर की बहू उस तक पहुंच पाएगी। इसके बाद उसे एहसास होता कि भाई यह जो शादी के मंडप में गांठ बंधी है उसे तोड़ना आसान नहीं है, क्योंकि इस गांठ को बांधने में सभी का हाथ लगा है। रिश्ता कोई ऐसा नहीं कि लड़के-लड़की ने पसंद किया और घर वालों को बता दिया। एक बहू फाइनल होने में पूरे खानदान का हाथ होता था और तब दूल्हे को एहसास होता था कि कहीं गठबंधन टूटने की नौबत आई तो किस-किस से बचते फिरेंगे और टूट का कारण क्या बताएंगे? क्योंकि अपनी लाई हुई बहू में कोई खोट निकाल ही नहीं सकता और तब उसे यह डर भी रहता कि कहीं कोई ग़लत क़दम उठ गया तो समाज से बाहर कर दिया जाऊंगा। वह गठबंधन बड़ा टिकाऊ बनता था। कई बातों को यह कह कर निपटा दिया जाता था कि जहां चार बरतन होंगे, खड़केंगे ही। उस ज़माने के शादी के लड्डू की मिठास जानने के लिए हमें फिर किसी पुराने गाने की शरण में जाना पड़ेगा। जैसे 'तुम रूठी रहो मैं मनाता रहूं/ इन अदाओं पे और प्यार आता है'। मिडिल एज की शादी लक्ष्मण झूले वाली शादी है। इस दौर में रिश्तेदार आने कुछ कम हो गए। नतीजा यह कि यह शादी हर समय हवा में झूलती रहती है। हां इसमें टूट-फूट का चांस नहीं होता। बस हर समय झूला एक से दूसरे कोने तक जाता-आता रहता है। यह लड्डू कुछ-कुछ मीठा टाइप का है, जिसमें पेरेंटल आज़ादी कुछ ज़्यादा मिल गई। पर नया लड्डू तो कुछ और बयां करता है जो कहता है, जी खाने की क्या ज़रूरत है? निभे न निभे? लिव-इन से टाई कर लो। सो आजकल सोशल नेटवर्किंग ने समां बांध रखा है। नई पीढ़ी शादी का लड्डू खाने से पहले उसके साइड इफेक्ट से ही घबरा जाती है। कहते हैं जो डर गया वो मर गया। नई पीढ़ी शादी के बाद के सीन की बड़ी जल्दी कल्पना कर लेती है। छोटे-छोटे बच्चों को कैसे नहलाना-धुलाना पड़ेगा, कैसे ऑफिस जाने से पहले उन्हें क्रेच छोड़ना और फिर बड़ा होते ही एडमिशन कराना पड़ेगा... और न जाने क्या-क्या...!

उसके लिए इस लड्डू का स्वाद मीठा कम और खट्टा ज़्यादा है। नई पीढ़ी के लिए कभी टीवी पर स्वयंवर आयोजित होता है तो कभी शादी तीन करोड़ की दिखाते हैं। कभी कहीं लिविंग टुगेदर वालों को लॉक किया जाता है तो कभी शादी के बाद ख़ुशहाल ज़िंदगी जीने वालों का ट्रेलर दिखाया जाता है। साफ़ है, आज शादी का बाज़ार बहुत बड़ा हो गया है।

जहां तक अपनी बात है तो भैया अपन तो बिग बी के कायल हैं जो कह गए हैं-

पराया धन पराई नारि पर नज़र मत डालो
ये आदत बुरी आदत है, अभी बदल डालो।

क्योंकि ये आदत तो वो आदत है जो एक दिन अपना घर फूंके-फूंके रे। शादी के लड्डू की मिठास बनी रहे, इसके लिए ज़रूरी है कि आदमी अपनी सीमा में रहे और नियम-संयम से जीवन जिए। शादी को जब ज़िम्मेदारी से जोड़ते हैं तो गठबंधन कहलाता है, वरना किसी भी बंधन में कुछ नहीं रखा। यह तो अपने स्वीकार करने की बात है और बंधन को गांठ बांध सगे-संबंधियों के सामने जब गठबंधन बना दिया जाता है तो फिर किंतु-परंतु नहीं बचता। बचता है तो बस एक मीठा एहसास जिसे बस महसूस करते रहिए और कहिए 'तेरी ज़ुल्फ़ों से जुदाई तो नहीं मांगी थी...'। वर्ना क्या है अपनी ही ज़िंदगी से शिकायत रखिए और गाते फिरिए 'शादी बन गई उमर क़ैद की सज़ा'। हमारे यहां शास्त्रों में कहा गया है 'जाकी रही भावना जैसी, हरि मूरत देखिय तिन तैसी'। ■

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

पेशे से इंजीनियर मुरली मनोहर श्रीवास्तव वैज्ञानिक दृष्टि संपन्न तो हैं ही। साहित्यिक स्वभाव के साथ वैज्ञानिक नज़रिये का तालमेल उन्हें व्यंग्य के लिए एक अलग धार देता है। एक किताब 'सत्य जीतता है' के अलावा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कई रचनाएं प्रकाशित।

आदाब अर्ज है

उस पार तो हो ही

मुल्ला नसरुद्दीन नदी के एक किनारे पर खड़े थे। दूसरी तरफ़ एक दूसरे सज्जन पहुंचे। उन्होंने वहीं से मुल्ला को आवाज़ दी, 'अरे भाई! एक बात तो बताओ, मैं उस पार कैसे आ सकता हूं?'

'उस पार तो तुम हो ही', मुल्ला ने अपनी तरफ़ से उनसे भी ऊंची आवाज़ में जवाब दिया, 'अब और तरीक़ा जान कर क्या करोगे?'

बिन मांगी सलाह का अर्थ

आप कुछ करने चलें और पहले ही किसी को बता दें तो विश्वास मानें, बुरी तरह कन्फ्यूज़ हो जाएंगे। आपसे अनुमति की प्रतीक्षा किए बिना हर जानने वाला उस पर अपने अथेंटिक विचार दे ही डालेगा। बड़े जालिम सीन उभरते हैं। कई बार शादी को लेकर कुंवारे ऐसी सलाह दे डालते हैं जैसे कबके शादीशुदा हों। वैसे ही शादीशुदा किसी की शादी की बात सुन मुस्कुराते हुए उसे यूं बधाई देते हैं कि बेचारा पहले ही सिहर उठे। बहरहाल कुछ करने से पहले ही उसे इतनी सलाह मिल जाती है कि बंदे का ओरिजिनल दिमाग़ ही चलना बंद हो जाता है। कुछ करने से पहले ही कुछ कर गुज़रने का इरादा गड्ढे में चला जाता है। इसका यह अर्थ भी नहीं कि हर काम बिना सलाह लिए कर डाला जाए। बिना उचित सलाह लिए काम करने में भी कम रिस्क नहीं है। ऐसे में ज़रा सा भी ऊंच-नीच होने पर दिल कचोट उठता है, यार किसी जानकार की सलाह ले लेते तो आज यह दिन न देखना पड़ता। कई बार यह फीलिंग भी पैदा होती है कि किसी की सलाह नहीं ले रहा हूं, कोई झमेला हुआ तो सारी डांट अकेले ही झेलनी पड़ेगी। ख़ासकर घरेलू और ऑफिस के मामलों में। आजकल आदमी की ज़िंदगी में ऑफिस और घरेलू मामलों को छोड़कर कोई और मामले होते भी नहीं हैं। जहां तक पर्सनल मामलों की बात है, उनमें सलाह न लेने का रिस्क कोई नहीं उठाता। कारण यह कि सलाह लेने के बाद लुटने-पिटने पर हम अपनी बर्बादी का दोष इस स्थिति में किसी और के सिर मढ़ तसल्ली तो कर सकते हैं। ज़रा ग़ौर से देखेंगे तो पाएंगे, कॉलेज लाइफ में हम अपनी बर्बादी के दोष का कितना प्रतिशत पेरेंट्स के सिर डाल कर हल्के हो जाते हैं। दोष देने का फिल्मी अंदाज़ तो और भी निराला है। जो कहता है, वैसे तो तुम्हीं ने हमें बर्बाद किया है, इल्जाम किसी और के सिर जाए तो अच्छा। इसमें बर्बादी का दोष देने में ख़ूबसूरती के कई एंगल विद्यमान हैं। जैसे कि नायक न चाहते हुए भी स्वीकार कर रहा है कि उसकी बर्बादी का दोष नायिका पर है, पर उसकी दरियादिली देखिए कि वह दिल से चाहता है कि यह दोष किसी और पर चला जाए। इसमें बेइंतहा प्यार छुपा हुआ है। साथ ही, किसी को दोषी ठहराने के बाद भी ख़ुद दोषी ठहराने के गुनाह से बचने का यह बेहद नायाब नमूना है। जिन साहबान ने यह फिल्म देखी है वे जानते हैं कि इसमें नायिका का गुनाह सिर्फ़ इतना था कि वह बिगड़े नायक को सुधारने की कोशिश करती है। वह उसे सही सलाह देने के बाद उसके न सुधरने पर उसके अंदाज़ में ढलने की कोशिश में मारी गई। मुफ़्त सलाह देने वाले जानते हैं कि जिसे वे सलाह दे रहे हैं, वह उनका अपना और बेहद दिलअज़ीज़ है उसे यूं ही ज़माने में भटकने के लिए नहीं छोड़ा जा सकता। ऐसा सोचने के बाद सलाह देना उन्हें अपनी मॉरल रिस्पांसिबिलिटी भी लगने लगती है।

आम तौर पर सलाह कड़वी लगती है। इसके बावजूद सलाह मांगनी हर किसी को पड़ती है और यही एक चीज भी है जो लोग देते भी ख़ुशी से हैं। यहां तक कि आप न मांगें, तो भी। हमारे देश में सलाह देना पुण्य का काम समझा जाता है और मांगना भी कोई हेय नहीं माना जाता। समझदार लोग इसे विनम्रता का लक्षण मानते हैं।

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

पेशे से इंजीनियर मुरली मनोहर श्रीवास्तव वैज्ञानिक दृष्टि संपन्न तो हैं ही। साहित्यिक स्वभाव के साथ वैज्ञानिक नजरिये का तालमेल उन्हें व्यंग्य के लिए एक अलग धार देता है। एक किताब 'सत्य जीतता है' के अलावा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कई रचनाएं प्रकाशित।

मान लीजिए, कोई बेचारा लू-वू लगने से डीहाइड्रेशन का शिकार हो जाए तो आपकी आत्मा आपको भीतर तक कचोटेगी कि इसे मैंने वक्त रहते जेब में प्याज रख कर घर से निकलने की सलाह क्यों नहीं दी! भले ही उसने कभी आपसे सलाह न मांगी हो, पर आपके भीतर गिल्ट कांशस ज़रूर पैदा हो जाएगा। जान-पहचान की तो बात छोड़ ही दीजिए, रोड पर कोई किसी से रास्ता पूछ रहा हो तो बगल से गुज़र रहे तीसरे आदमी का पेट तब तक दुखता रहेगा, जब तक वह उस अनजाने को बस और रूट का विस्तृत वर्णन न कर दे। इस बीच यदि वह जाम से निकलने का शॉर्टकट बताना भूल गया तो तड़प उठेगा। यह अलग बात है कि एक-दो मोड़ जाने के बाद पूछने वाला कन्फर्म होने के लिए फिर वही रूट दो-तीन लोगों से पूछेगा। कई बार तो सही राह बताने वाले दूसरे की यात्रा में इतना डूब जाते हैं कि उन्हें इजाजत मिल जाए तो वे पूछने वाले के साथ जाकर उसके गंतव्य तक पहुंचा कर ही दम लें। बिन मांगी सलाह देना हमारा नैतिक कर्तव्य ही नहीं, हमारे संस्कार का हिस्सा भी है। हम सुबह से शाम तक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय समस्या पर विचार ही तो व्यक्त करते रहते हैं।

कई बार लगता है सलाह न देने पर हम आउट आफ फोकस हो जाएंगे। जो लोग सलाह नहीं दे सकते वे रिश्ते-नातों में बेकार समझे जाते हैं। ऐसे लोगों से तो उसके घर वाले भी दुखी रहते हैं। विश्वास मानें, बिन मांगी सलाह देने वालों की बड़ी पूछ है। दूर-दराज के रिश्तों में भी कोई बात तब तक फाइनल नहीं होती जब तक ऐसे रिश्तेदार को चाय-पानी पर न बुला लिया जाए। ऐसे लोगों से सीधे सलाह नहीं मांगी जाती। इन्हें बाकायदा चाय-पकौड़ा पेश कर फेमिलियर माहौल में मतलब की बात छेड़ दी जाती है और ये रस ले-ले कर मेन मुद्दे पर अपने नायाब विचार देते चले जाते हैं। इनकी बातों को गति देने के लिए दादी-नानीनुमा प्राणी हूं-हां करते रहते हैं। बीच-बीच में थोड़ा खंडन-मंडन करते रहने से सलाह पर निखार आ जाता है। मतलब की बात छानने वाले ऐसे मौक़े पर कान खड़े रखते हैं और काम की बात कान में फिल्टर लगा कर दिल में उतार लेते हैं। ऐसे लोगों की सलाह मील का पत्थर बन जाती है। घर-परिवार में बड़े वज़न के साथ उनका नाम लेकर वही सलाह कोट की जाती है। फिर कोई ऊंच-नीच हो भी जाए तो उसे भाग्य का दोष समझा जाता है।

बिन मांगी सलाह का महत्व शादी-ब्याह और रिश्तों के जोड़-तोड़ के समय और बढ़ जाता है। कई बार अच्छे-ख़ासे जुड़ चुके रिश्ते दूर के रिश्तेदारों की बिन मांगी सलाह की वजह से टूट जाते हैं तो कई बार बिन मांगी सलाह टूटते रिश्ते जोड़ भी देती है और वक्त के साथ समझ में आता है कि सही वक्त पर वह फ़ोन न आता तो शायद यह हैपी लाइफ देखने को न मिलती। फिल्म और सीरियल देखते समय इस सलाह का प्रवाह बहुत बढ़ जाता है। जैसे कि फिल्म पिटने का कारण वह भी बता डालता है जो पाइरेटेड सीडी मांग कर फिल्म देखता है। सीरियल देखते समय लोग कमेंट करना नहीं भूलते कि इस सीरियल में ऐक्सिडेंट वाला प्लॉट किसी और चैनल पर चल रहे किसी सीरियल से कॉपी किया हुआ है और डायरेक्टर सुने न सुने आपस में एक-दूसरे को सलाह दे डालते हैं कि इससे तो बेहतर है लाफ्टर चैलेंज या रिअलटी शो देख लें। इस क्षेत्र में बहुत से एक्सपर्ट भी पाए जाते हैं जो वैसे ही हवा में बातें फेंकते रहते हैं, पर अंदाज इतना इफेक्टिव कि अनजान आदमी सुनने को खिंचा चला आए और एक बार इन्हें सुनना शुरू कर दे तो वे बातों को कई-कई घंटे खींचने का माद्दा रखते हैं। हां इनकी सलाह कॉमन होकर भी सुनने में नई सी लगती है जैसे कि सिर दर्द में लाल तेल लगा लो या बच्चे को डर लगे तो ताबीज पहना दो। ऐसे लोग अपने जीवन में बड़े सफल होते हैं और ऑफिस-वॉफिस में बिना काम किए हवाबाजी से ही काम चलाते रहते हैं। इन्हें बॉस क्या, बॉस का बॉस भी नहीं छू पाता क्योंकि इनकी बातों में हर दो-चार मिनट में किसी बड़ी हस्ती का जिक्र होता रहता है और सुनने वाला डरता रहता है कि क्या पता इसका लिंक दूर-दूर तक हो। मसलन वे ऑफिस में यहां तक फेंक देते हैं कि फलां बड़ा अफसर उनका लंगोटिया यार है और आज वह यहां तक पहुंचा है तो उनकी सलाह की बदौलत ही। बिन मांगी सलाह का वर्णन कहां तक बताऊं सच तो यह है कि जो इस कला में निपुण होते हैं उनकी पांचों उंगलियां घी और सिर कड़ाही में होता है।✦

आदाब अर्ज़ है

इस इलाके के नहीं

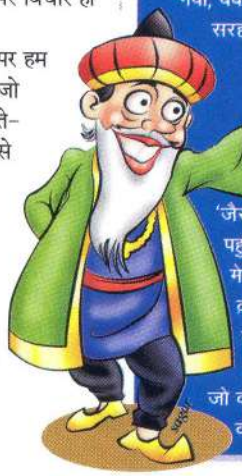

मुल्ला नसरुद्दीन उन दिनों क़ाजी थे। उनकी अदालत में एक व्यक्ति पहुंचा और रो-रोकर अपनी फ़रियाद सुनाने लगा, 'हुजूर मैं लुट गया, बर्बाद हो गया। मुझे आपके क़स्बे की सरहद पर पहुंचते ही लूट लिया गया। मैं इंसाफ़ चाहता हूं।'

'क्या हुआ आपके साथ? पूरी बात बताइए,' क़ाजी का हुक्म था।

'जैसे ही मैं इस क़स्बे की सरहद पर पहुंचा, हथियारों से लैस एक शख़्स मेरे सामने आया। पैसे, सामान और क़ीमती जेवर... सब ले लिए। यहां तक कि जो जूते मैंने पहने थे, वे भी उसने उतरवा लिए। केवल जो कपड़े मैंने पहने थे, वही छोड़े हैं। वह शख़्स इसी इलाके का है। इसलिए आप जांच कराएं और मुझे इंसाफ़ दें,' फ़रियादी ने कहा।

क़ाजी साहब बड़े ध्यान से पूरी बात सुनते रहे और फिर सिर इधर-उधर हिलाते हुए बोले, 'देखिए इस इलाके का तो वह नहीं हो सकता और इसीलिए हम आपके मामले में जांच भी नहीं करा सकते।'

'आप ऐसा कैसे कह सकते हैं,' बेचारा फ़रियादी अचकचा कर रह गया।

'हम कह सकते हैं। पूरे यक़ीन के साथ कह सकते हैं। इसलिए, क्योंकि इस इलाके के लोग जब भी कोई काम करते हैं तो वे पूरी तरह करते हैं। वे आधा-अधूरा कोई काम नहीं छोड़ते। इस इलाके के लुटेरों ने अगर आपको लूटा होता तो वे कुछ छोड़ते नहीं। यहां तक कि आपके कपड़े भी नहीं,' क़ाजी नसरुद्दीन ने अपना फ़ैसला सुनाया और उठ कर चले गए।

समय के साथ सब कुछ बदल जाता है। यहां तक कि संबंध, उसे निभाने के तौर-तरीक़े और उससे जुड़े गिले-शिकवे भी। जब सब कुछ इससे प्रभावित होता है, तो बेहद क़रीबी समझा जाने वाला पति-पत्नी का रिश्ता इससे बेअसर रहे, ऐसा कैसे हो सकता है!

पति-पत्नी और ऑफिस

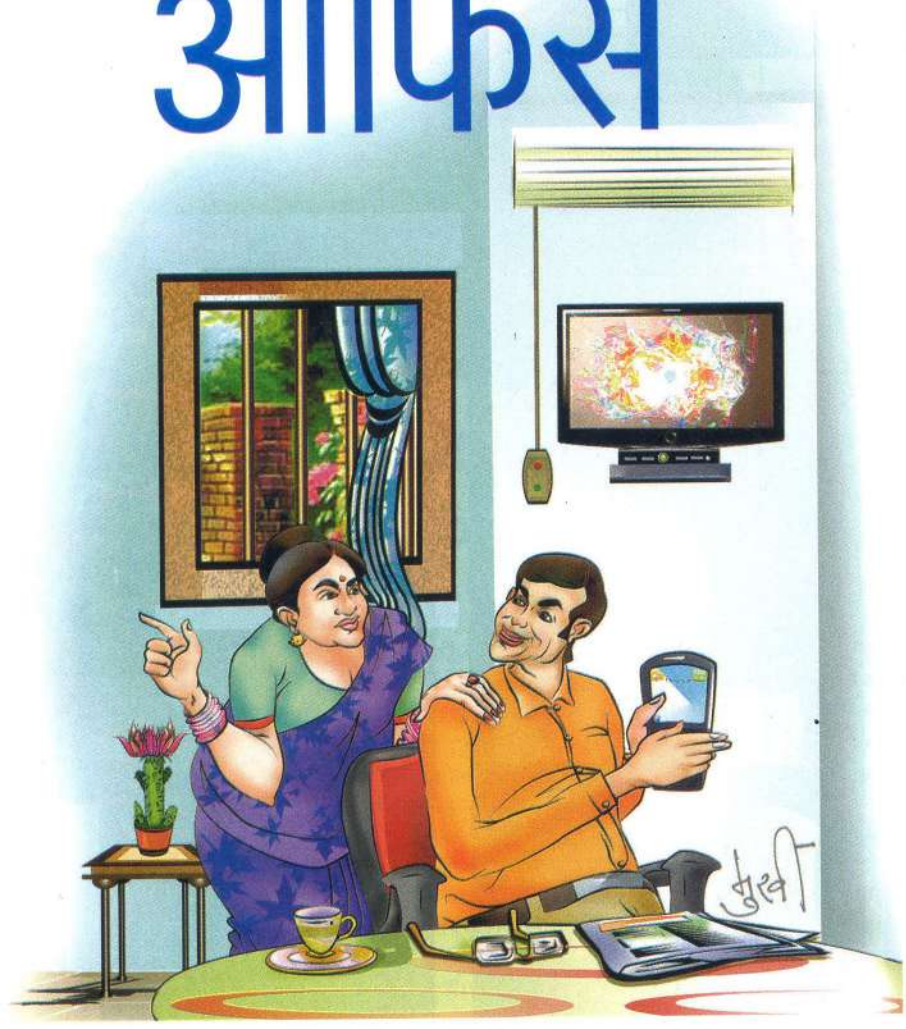

पति, पत्नी और वो का ज़माना अब नहीं रहा। महिला सशक्तीकरण के इस युग में पत्नी के अधिकार इतने सुरक्षित हो गए हैं कि कोई पति इधर-उधर ताक-झांक की हिमाकत भी नहीं कर सकता। पत्नी से पंगा ले कर बड़े-बड़े सुपरस्टार सड़क पर आ जाते हैं तो आम आदमी की क्या बिसात। सो, इस चलायमान युग में वो की जगह ऑफिस ने ले ली है। चलायमान युग इसलिए कि अब कोई भी स्थिर नज़र नहीं आता। पहले कहते थे सड़कें चलती हैं, पर अब तो पेड़-पौधे और यहां तक कि घर भी चलते-फिरते नज़र आते हैं। एक फ्लाईओवर बना और आपका फ्लैट अचानक कनाट प्लेस के क़रीब आ गया। ज़रा सोचिए, फ्लैट चला नहीं तो कनाट प्लेस के क़रीब आ कैसे गया? ख़ैर छोडिए, यह अपने-अपने नज़रिये की बात है। उदाहरण तो बस इसलिए दिया कि एक बार आप फ्लैट का चलना समझ गए तो ऑफिस के नए कंसेप्ट को समझते देर नहीं लगेगी। कई बार तो पति बॉस से इतने प्यार भरे लहजे में बात करता है कि पत्नी को रश्क होने लगता है। वैसे पति की हालत ऑफिस के मामले में कुछ ऐसी है कि 'देखें तो होश गुम हो, न देखें तो होश गुम...।' दरअसल इंटरनेट और मोबाइल युग में ऑफिस चलायमान हो गया है। नतीजा यह कि आदमी कहीं भी रहे, ऑफिस छूटता ही नहीं। पहले लोग सुबह दस बजे ऑफिस निकलते और शाम साढ़े पांच बजे घर आकर चारपाई पर पैर फैला थकान उतारते। उस ज़माने में छोटे-मोटे आदमी की भी अहमियत थी। आजकल तो बड़े अफ़सर को भी कोई नहीं पूछता। पेन ड्राइव और इंटरनेट ने मामला पेपरलेस करने के साथ ही वर्कलोड भी बढ़ा दिया है। काम दिखाई नहीं देता, पर ऑफिस है कि घर आकर भी नहीं छूटता। जिसे देखो, घर में घुसते ही 'बस एक मिनट प्लीज़' कह कर लैपटॉप उठा लेता है। इसके बाद घंटों बीत जाते हैं, पता ही नहीं चलता। रही-सही कसर मोबाइल पूरी कर देता है। माना आप पूरे हफ्ते खटने के बाद सैटर्डे इवनिंग एंजॉय कर रहे हैं। सूप डाइनिंग टेबल पर लगा कि साहब का नंबर चमक उठेगा। ताज़ा वाक़या हमारे कलीग मेहता जी का है। ऐसे ही सीन में रिंगटोन फुफकार उठी। ख़ैर, कॉल एक्सेप्ट करते ही आवाज़ आई, 'मेहता जी कैसे हैं, डिस्टर्ब तो नहीं किया आपको?'

मेहता जी ने 'आल इज़ वेल' वाले अंदाज़ में सीने पर हाथ रखा, 'इट्स माई प्लेज़र सर।'

'बिज़ी तो नहीं हैं?'

'आपने भी क्या बात कह दी सर, आपके लिए ऑलवेज़ फ्री।'

फिर धीरे से स्पीकर पर हाथ रख कर पत्नी जी से बोले, 'बड़े साहब हैं।'
उन्होंने मुंह बनाया, 'तो मैं क्या करूं?'
मेहता जी ने वक्त की नज़ाकत देखते हुए उस बात को इग्नोर किया। स्पीकर से हाथ हटाते हुए बोले, 'मेरे लायक कोई सेवा सर?'
उधर साहब ने बोलना शुरू किया और इधर मेहता जी ने फिर स्पीकर पर हाथ रखा।
'देखो मेहता यह काम सिर्फ़ तुम कर सकते हो। कहने को तो मैं चोपड़ा से भी कह सकता था, पर उस पर विश्वास नहीं जमता।'
'सर प्लीज़ आप बेझिझक बोलिए।'
'देखो अपने साहब की फेमिली दस बजे की फ्लाइट से आ रही है। बस उसे रिसीव कर के लोदी रोड वाले बंगले पर ड्रॉप कर देना। अभी नौ बजा है, तुम तुरंत मूव कर जाओ और अगर जाम में फंस जाओ तो मैडम को फ़ोन करना मत भूलना। और हां, रास्ते में एक बुके और कुछ स्नैक्स भी ले लेना। ख़र्चे की चिंता मत करना। एडजस्ट कर देंगे।'
इसके बाद फ़ोन ऐसा कटा कि फिर लगातार कॉलबैक करने पर भी आउट ऑफ रीच ही रहा। आप मेहता जी की हालत समझ सकते हैं। फिर उन्होंने चुपचाप तैयार होकर धीरे से कहा, 'प्लीज़ दरवाज़ा बंद कर लो। अर्जेंट काम है, ज़रा जल्दी निकलना है।'
'जल्दी मतलब क्या? यह कौन सा ऑफिस है तुम्हारा कि रात-दिन चलता रहता है। यह तो बता जाओ, कब लौटोगे?'
बेचारा क्या जवाब दे? यह तो उसे भी नहीं पता कि जिस काम से जा रहा है उसके पूरा होने का टाइम क्या है।
इससे बड़ा लफड़ा तब होता है जब किसी मीटिंग में मोबाइल साइलेंट मोड में पड़ा हो। तब आप पत्नी जी का फ़ोन भी मिस कर जाते हैं। इससे ज़ाहिर होता है कि आपके लिए ऑफिस का महत्व श्रीमती जी से ज़्यादा हो गया है। ज़ाहिर है, यह भूल नाक़ाबिले बर्दाश्त है? इस दिशा में डबल और ट्रिपल सिम ने कुछ समाधान ज़रूर दिया है, जिसमें एक सिम एक्सक्लूसिवली पत्नी जी के लिए लगा होता है। उनका नंबर ख़ास रिंगटोन के साथ फीड होता है और वाइब्रेशन होते ही बंदा किसी बहाने बाहर आ जाता है। यह सब तो चलायमान ऑफिस के साइड इफेक्ट्स के कुछ उदाहरण मात्र हैं। ध्यान से देखें तो पाएंगे कि इस चलायमान युग में गत्यात्मकता इतनी अधिक है कि आदमी जहां उपस्थित दिखता है, वहां वह होकर भी उपस्थित नहीं रहता। घर में रह कर भी निरंतर ऑफिस के चिंतन में डूबा रहता है। किसी ज़माने में यह स्थिति वो के लिए होती थी।
इधर उससे सामानों की लिस्ट तैयार करने को कहा जाता है और उधर वह दाल-चाय-चीनी की जगह नोटबुक में मीटिंग फॉलोअप कस्टमर सपोर्ट की रिपोर्ट लिखता है। उसे पता तब चलता है, जब लिखे हुए सामान न लाने पर शाम को घर में सुनना पड़ता है। वह किस मुंह से बताए कि लिस्ट तो उसके पास है ही नहीं, सामान वह अपनी मेमरी से लाया है। आदमी की मेमरी का तो आपको पता ही है! हालत तब और ख़राब होती है जब बेबी फूड की जगह पनीर और कॉफी की जगह कीटनाशक आ जाता है। ऐसे में कहीं उससे लिस्ट मांग ली जाए तो और मुसीबत। वह शुरू हो जाता है... कभी इस जेब में हाथ डालता है तो कभी उस जेब में, कभी पर्स में देखता है तो कभी बैग में। लिस्ट हो तो मिले और अंत में बिफर पड़ता है, 'नहीं मिल रही। लगता है कहीं गिर गई।'
हुआ यह कि श्रीमान जी न तो ऑफिस में प्रेज़ेंट थे और न ही मॉल में। वहां वे ट्रॉली ले कर हर कांउंटर से कुछ न कुछ सामान डाल रहे थे और चिंतन बॉस को खुश करने पर कर रहे थे। मन में बॉस और ऑफिस इस कदर घर कर गया है कि वह अपना घर भूल गए। अपने बच्चों की बर्थ डे और अपनी एनिवर्सरी याद हो न हो, बॉस के परिवार का पूरा बायोडाटा कंठस्थ है। वे अपने बच्चे के टॉप होने पर मंदिर जाना भूल सकते हैं, पर बॉस के बच्चे के पास होने पर उसे चॉकलेट देना नहीं।
वैसे ही, ऑफिस के शुरू के दिनों की नादानियां बाद की परेशानियां बन जाती हैं। अमित जी कुछ ज़्यादा ही हेल्पफुल हैं, उन्हें जब पता चला कि उनकी बॉस अनिद्रा से ग्रस्त हैं तो उन्हें नींद न आने पर चैटिंग का न्योता दे दिया। चैट में अमित उन्हें परीकथाएं सुना कर बोर करते और बॉस सो जातीं। लफड़ा तब हुआ, जब शादी के बाद उनकी नई-नवेली दुलहन को यह बात नागवार गुज़री। अब हालात ये हैं कि वे कन्फ्यूज़ हैं, शादी बचाएं या नौकरी?
आपको क्या बताएं कि ऑफिस किस तरह से पति-पत्नी के बीच आ जाता है। अरे, ऑफिस भी सोलह शृंगार करता है, कभी न्यू ईयर के मौक़े पर तो कभी वीआइपी विज़िट पर। वैसे ही ऑफिस में रखी प्रमोशन वाली कुर्सी तो बड़े-बड़ों को दीवाना बना देती है। ऐसा कौन है जिसका दिल इस कुर्सी को देख कर न डोलता हो। यह रातों की नींद और दिन का चैन वैसे ही उड़ा देती है जैसे वो। अब तो आप समझ ही गए होंगे कि ऑफिस कैसे पति-पत्नी के बीच वो की वास्तविक भूमिका में आ गया है। ✦

आदाब अर्ज़ है

बड़ी ख़ुशी हुई मिलकर

मुल्ला नसरुद्दीन का एक युवती से नया-नया प्रेम हुआ। युवती ने एक दिन कहा, कभी हमारे घर भी आइए।
नसरुद्दीन बोले, 'क्यों नहीं ज़रूर-ज़रूर।'
दूसरे दिन मुल्ला ने युवती का पता लेकर मकान की तलाश शुरू कर दी, लेकिन मकान कुछ ऐसा कि मिले ही नहीं। आख़िर एक वृद्ध व्यक्ति को रोककर मुल्ला ने पूछा, 'क्या आप बता सकते हैं कि मिस सलमा कहां रहती हैं?' बुज़ुर्ग ने ऊपर से नीचे तक मुल्ला को देखा और पूछा, 'क्या मैं जान सकता हूं कि आप कौन हैं?'
नसरुद्दीन बोले, 'जी मैं उनका भाई हूं।'
'आइए-आइए, बड़ी खुशी हुई आपसे मिलकर, मैं उसका पिता हूं,' वृद्ध ने बताया।

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

पेशे से इंजीनियर मुरली मनोहर श्रीवास्तव वैज्ञानिक दृष्टिसंपन्न तो हैं ही। साहित्यिक स्वभाव के साथ वैज्ञानिक नजरिये का तालमेल उन्हें व्यंग्य के लिए एक अलग धार देता है। एक किताब 'सत्य जीतता है' के अलावा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कई रचनाएं प्रकाशित।

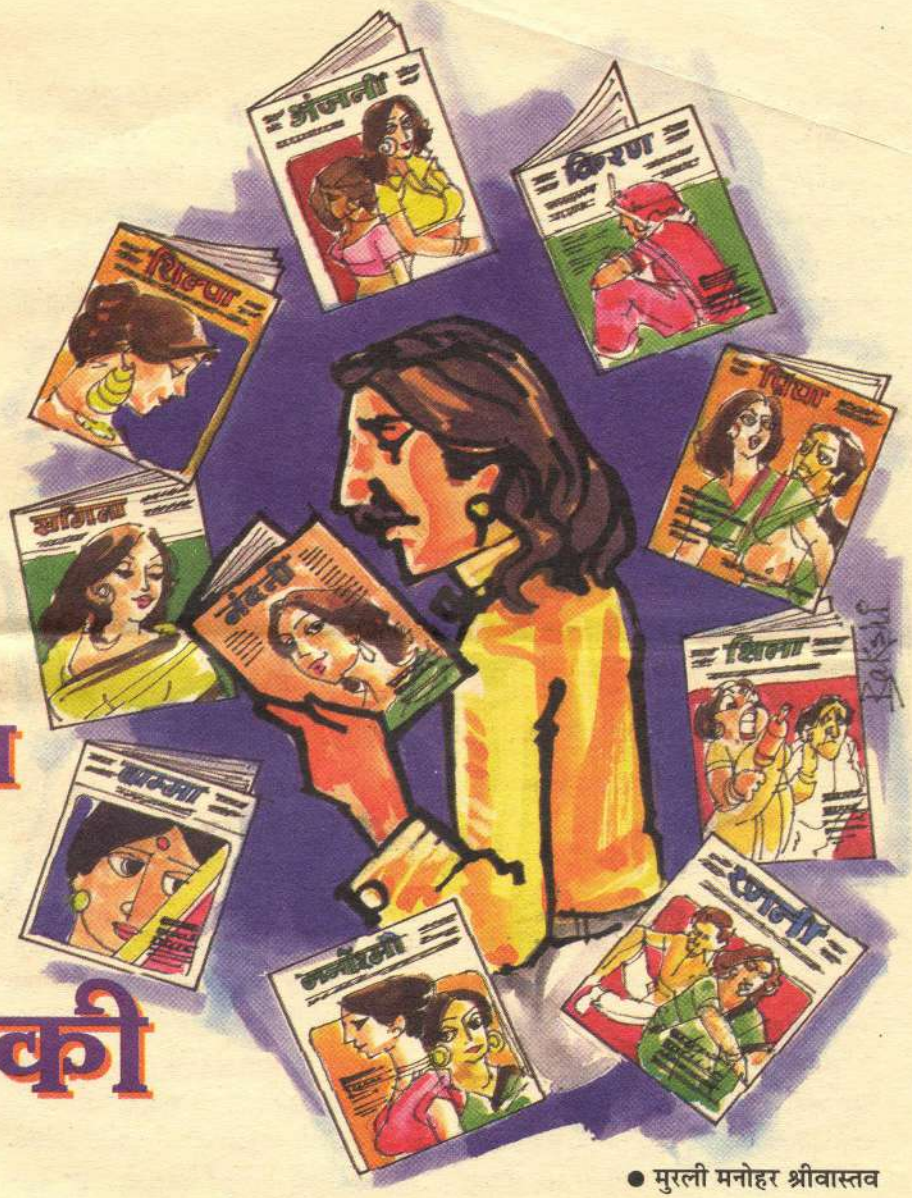

आवश्यकता पुरुष पत्रिका की

● मुरली मनोहर श्रीवास्तव

बहुत माथा-पच्ची करने के बाद आखिर मैंने पुरुषों के घर-गृहस्थी में पिछड़े रहने का कारण ढूँढ़ ही लिया. अब आप ही बताइए जब इतनी बड़ी पत्र-पत्रिकाओं की भीड़ में पुरुष का उचित मार्गदर्शन करने वाली कोई पत्रिका नहीं होगी तो वह पिछड़ेगा नहीं तो और क्या होगा?

महिलाओं के लिए एक से बढ़कर एक नायाब और बेहतरीन पत्रिकाएँ हैं. पत्रिकाएँ क्या हैं, बस बम हैं. हर पत्रिका ज्ञान-विज्ञान, कथा-कहानी, पाक-कला, बुनाई-कढ़ाई, सौंदर्य, समस्या-समाधान आदि-आदि से भरी-पूरी एक भानुमती का पिटारा लगती है. किसी भी महिला को कुछ भी जानना-समझना हो, पत्रिका खोले और उस विषय में भरपूर जानकारी प्राप्त कर ले. इतने से काम न चले तो उस विषय पर पूरा विशेषांक खरीद ले. इसीलिए महिलाओं को कभी कोई समस्या होती ही नहीं. वे किटी पार्टी से बर्थ डे पार्टी और मैरेज पार्टी से मातमपुरसी तक हर कदम पर विश्वास से भरी रहती हैं.

इसके विपरीत पुरुष बेचारा हर मामले में बगलें झाँकता नजर आता है. उसे पता ही नहीं होता, किस मौके पर कैसे कपड़े पहनने हैं, कैसे बाल काढ़ना है, कैसे बातें करनी हैं. इसीलिए बेचारा शादी की पार्टी हो या घर में हवन, बिल्कुल एक-सा नजर आता है. कहीं कोई परिवर्तन नहीं. यदि पुरुष पत्रिका निकल रही होती, तो पुरुषों में भी नारियों की तरह आवश्यक विकास हो गया होता. काश! कोई पत्रिका यह सिखाती कि पत्नी को वश में कैसे करें? छोटे-मोटे तनाव के क्षणों में विजय कैसे पाएँ? कैसे अपनी नई नवेली पत्नी को मायके जाने से रोकें? रोते हुए बच्चे को चुप कैसे कराएँ? रात में बाल कैसे सँवारें और दिन में कैसे? पुरुष सौंदर्य में वृद्धि कैसे हो सकती है? अत्यधिक कार्यालय के

तनाव व घर के कामकाज के बीच तालमेल कैसे बिठाएँ? पत्नी गाने सुनना चाहती हो, बच्चे कार्टून देखना चाहते हों तो आप न्यूज कैसे देखें? लेकिन नहीं, यहीं तो यह मान लिया गया है कि पुरुषों के लिए कोई समस्या ही नहीं है. यह सब तो वाहियात बाते हैं. पुरुषों के लिए तो बस राजनीति है, चटी-चटी खबरें हैं. इसके बाद कुछ समय मिला तो अपराध पुस्तकें. ऐसा प्रतीत होता है, वह कोई सामाजिक प्राणी ही नहीं है.

इस खालीपन के माहौल को पूरा करने के लिए कुछ पुरुष महिला पत्रिकाओं का सहारा लेते हैं. परिणामत: उनका चिंतन व कार्यशैली वैसी ही होती चली जाती है. इस नई पीढ़ी में लड़कों में बाले पहनने का फैशन वैसे ही नहीं आ गया. बाल बढ़ाना, चोटी बनाना, घाघरेनुमा पैंट पहनना, क्या बताता है?

आपने पत्रिकाओं के दुल्हन विशेषांक, मातृत्व स्पेशल, बुनाई-कढ़ाई विशेषांक, नव-दम्पत्ति विशेषांक देखे होंगे. चोरी-छिपे पुरुष इन्हें खरीदते और पढ़ते हैं, लेकिन उन्हें अपने मतलब का उपयुक्त मसाला पत्रिका में नहीं मिल पाता. वह बेचारा या तो दुल्हन स्पेशल में महिला के लिए लिखी बातों का विपरीत अपने लिए सोच लेता है या फिर सेकेंड हैंड मसाले से गुजारा चला लेता है. जैसे यदि दुल्हन के लिए कहा गया हो कि शादी में गहरा मेकअप होना चाहिए तो अपने लिए सोचता है कि पुरुष को मेकअपविहीन रहना चाहिए. यदि पत्रिका में लिखा हो कि साड़ी के पल्ले को खूबसूरत सेफ्टीपिन से जड़ दें, तो वह अर्थ निकालता है, कमीज के साथ टाई चिपका दें. कई बार इस चक्कर में अर्थ का अनर्थ हो जाता है. मसलन, 'यदि आपके पति देर से लौटें' या फिर 'महिला की मानसिक गुलामी और खयाली आजादी' से जुड़ी रचनाएँ पढ़कर. तब महिला पत्रिका पढ़नेवाले पुरुष बड़े भावुक हो उठते हैं. वे हर महिला के दर्द को अपना दर्द समझने लगते हैं, अनावश्यक रूप से कई बार वे स्वयं को महिला पर हो रही ज्यादती का जिम्मेदार भी मानने लगते हैं. कभी-कभी तो पूरी तरह घर-गृहस्थी में कैद पुरुष यह सोचने लगता है कि महिला स्वतंत्रता में वही एक बाधक व्यक्ति है. तब वह अधिकांश समय इधर-उधर भटकता फिरता है, अपने घर की महिलाओं को पड़ोस में बातचीत की आजादी देने के लिए. पहले तो वह मन ही मन प्रसन्न होता है कि आखिर हमने परंपरा तोड़कर महिला आजादी में भागीदारी निभाई है, लेकिन उसकी आँख तब खुलती है जब पड़ोसी उसे बताते हैं कि इस आजादी के चक्कर में तुम्हारे घर का सत्यानाश हो गया. दरअसल जिसे वह नारी मुक्ति समझ रहा था, वह पुरुष मुक्ति अभियान में बदल चुका है. हर कोई यह ताना देता नजर आता है कि फलाना अपने घर की कोई फिक्र नहीं करता. बस निखट्टू की तरह दिनभर इधर-उधर घूमता-फिरता है. दु:खी कर रखा है उस अकेले ने पूरे परिवार को. वह बेचारा अपनी मानसिक, शारीरिक या भावनात्मक समस्या तक के लिए किसी के पास सलाह लेने नहीं जा सकता. समस्याओं के कॉलम भी महिलाओं की सौंदर्य समस्या और मानसिक उलझनें सुलझाते हैं. दूसरे किसी महिला की समस्या पत्रिका में छपती है तो स्वाभाविक रूप से जानने वालों में उसके प्रति सहानुभूति उपजती है. यदि मान लीजिए कोई पुरुष अपनी समस्या पत्रिका को भेज भी दे तो वह छपने से रही और छप गई तो सबसे ज्यादा बदनामी भी उसी की होगी. दोस्त-यार कहेंगे हम मर गए थे, जो पत्रिका के मनोचिकित्सक को पत्र लिख दिया तुमने. फिर भाभीजी इतनी बुरी तो लगती नहीं, जितनी तुमने शिकायतें लिख डालीं. वह बेचारा तो न रो सकता है न हँस सकता है. सब जानते हैं हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और होते हैं, लेकिन मानता कोई नहीं. बंदूक चलाने के लिए दूसरे का कंधा मिलना चाहिए, चूकता कोई नहीं.

पुरुष पत्रिका की इतनी भीषण आवश्यकता के बाद भी, कोई संपादक और प्रकाशक, पुरुष स्पेशल पत्रिकाएँ निकालने का काम क्यों नहीं करता? पुरुष पत्रिका के 'दाढ़ी-मूँछ स्पेशल विशेषांक', 'सास-बहू में सुलह विशेषांक', 'साली-सालों से तालमेल विशेषांक' हाथोंहाथ बिक जाएँगे. लेकिन समस्या यह है कि पहल कौन करे. एक-दो लेखकों और प्रकाशकों ने कोशिश भी की तो घर में बैठी महिलाओं ने छपने से पहले ही रचनाएँ फाड़ कर चूल्हे में डाल दीं, अपने एकाधिकार पर हमला समझकर. यदि पत्रिकाएँ पढ़कर पुरुष भी हर क्षेत्र में निपुण हो गए तो बात-बात में महिलाओं की सलाह का क्या होगा?

लेकिन आप देखिएगा, इक्कीसवीं सदी में पुरुष पत्रिकाओं की बाढ़ आने वाली है. तब आज़ के नए-नवेले युवक हर पारिवारिक कार्य में निपुण होने का दावा करते नजर आएँगे. आप बुरा मत मानिएगा, इसके लिए वही महिलाएँ दोषी हैं जो पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चलने की बात करती हैं, क्योंकि इसी नारे से प्रेरणा लेकर नई पीढ़ी के कुछ पुरुष, हर क्षेत्र में नारी के कंधे से कंधा मिलाकर चलने का हर संभव प्रयास कर रहे हैं. ■

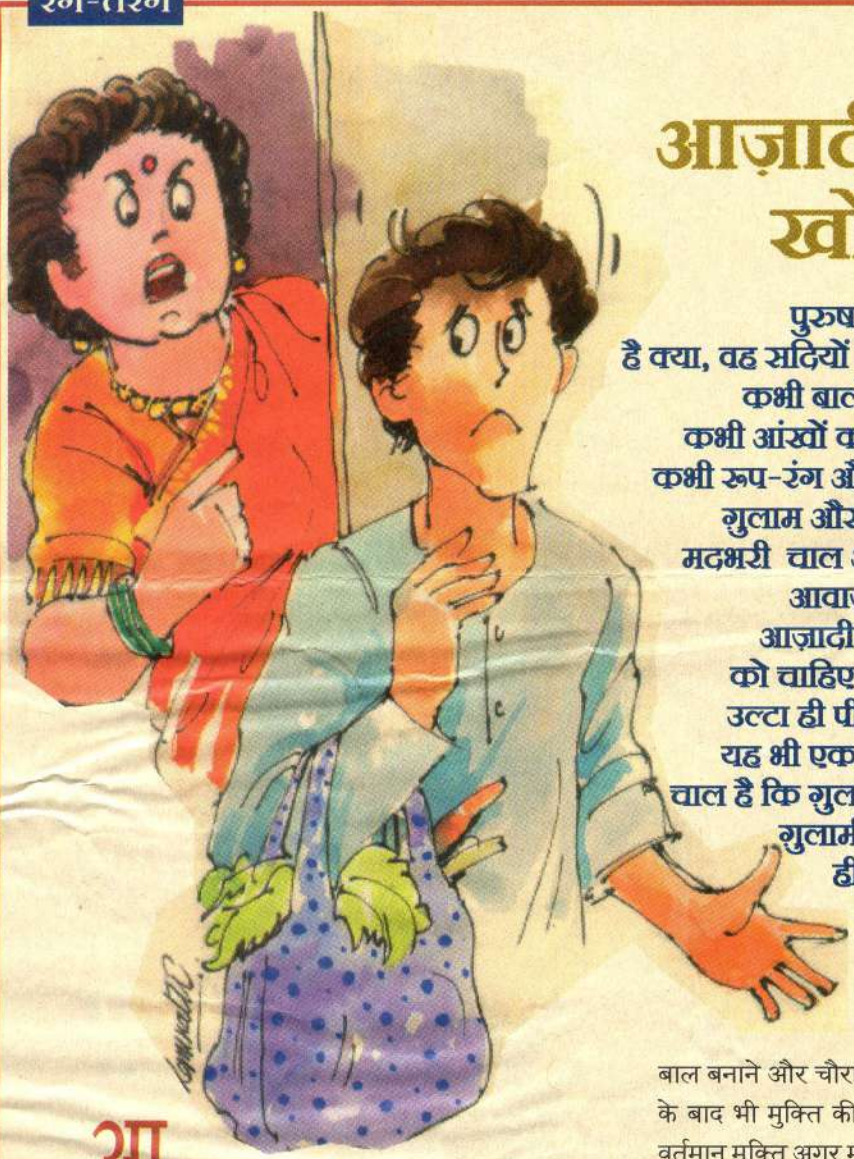

आज़ादी की खोज में बेचारा पुरुष

पुरुष तो ग़ुलाम है. है क्या, वह सदियों से ग़ुलाम था. कभी बालों का ग़ुलाम, कभी आंखों का ग़ुलाम और कभी रूप-रंग और अदाओं का ग़ुलाम और कुछ नहीं तो मदभरी चाल और लोच भरी आवाज़ का ग़ुलाम. आज़ादी तो उस बेचारे को चाहिए, जबकि ढोल उल्टा ही पीटा जा रहा है. यह भी एक सोची समझी चाल है कि ग़ुलाम को अपनी ग़ुलामी का एहसास ही मत होने दो.

- मुरली मनोहर श्रीवास्तव

आप तो अच्छी तरह जानते हैं कि हमारा राष्ट्र आज़ादी की पचासवीं वर्षगांठ मना रहा है. इस अवसर पर आज़ादी का सही एहसास दिलाने के लिए ही पशु-पक्षियों की आज़ादी के लिए भी क़ानून बन गया है. अब कोई व्यक्ति कानूनन तोता-मैना, कबूतर को क़ैद कर के नहीं रख सकता. मदारी बंदर, भालुओं को नहीं नचा सकता. स्वर्ण जयंती के इस शुभ अवसर पर अच्छे आचरण वाले क़ैदियों की सज़ा कम करने और उन्हें आज़ाद करने पर विचार चल रहा है. किंतु यह बेचारा पुरुष है कि दिन-ब-दिन और अधिक शिंकजे में कसता जा रहा है.

इधर नारी मुक्ति की बात चलती है, उधर पुरुष की सांस घुटती है. नारी मुक्ति आंदोलन में नारा लगाने वाली महिलाओं को अपने घर के पुरुषों की आज़ादी-स्ती भर बर्दाश्त नहीं. जबकि उन्हें पूरी आज़ादी चाहिए, घूमने-फिरने, गप्पे मारने, मनचाहे कपड़े पहनने, बाल बनाने और चौराहे पर नारा लगाने की. उनकी इतनी आज़ादी के बाद भी मुक्ति की बात सुन बेचारा पुरुष घबरा जाता है कि, वर्तमान मुक्ति अगर मुक्ति नहीं है तो जिसकी कल्पना महिलाएं कर रही हैं वह आज़ादी कौन-सी होगी.

आप जरा ग़ौर से देखिए पुरुष पिछड़ा हुआ है, महिलाएं आगे हैं. पुरुष तो ग़ुलाम है. है क्या, वह सदियों से ग़ुलाम था. कभी बालों का ग़ुलाम, कभी आंखों का ग़ुलाम और कभी रूप-रंग और अदाओं का ग़ुलाम और कुछ नहीं तो मदभरी चाल और लोच भरी आवाज़ का ग़ुलाम. आज़ादी तो उस बेचारे को चाहिए, जबकि ढोल उल्टा ही पीटा जा रहा है. यह भी एक सोची समझी चाल है कि ग़ुलाम को अपनी ग़ुलामी का एहसास ही मत होने दो. उस निरीह प्राणी को बस भ्रम में ज़िंदा रखो. लच्छेदार भाषा में बांधो, गजरे और कजरे में बांधो. आंसू में लपेटो, पायल और बुंदे में समेटो, कंगन में फंसा लो, गले के हार और करधनी में उलझा लो. बच कर जायेगा कहां, गोया, यहां से निकल भी गया तो, छप्पन व्यंजनों में अटका लो. आख़िरी हथियार उलाहनों और तानों का है, उससे आगे तो भैया

कोई पत्थर दिल ही जा सकता है. भगवान ने इन्सान का दिल चाहे जैसा बनाया हो, आदमी का दिल औरत के लिए तो बिल्कुल मोम सा बनाया है. ज़रा सा उसने आंखें लाल दिखाई नहीं कि वह पिघला नहीं. आप आफ़िस में ज़रा लाल आंखे दिखा कर तो देखिये, बनता हुआ काम बिगड़ जायेगा. यही लाल आंखें देख आदमी भीतर तो खुंदक खायेगा और ऊपर लल्लो-चप्पो करता नज़र आयेगा.

ख़ैर यह तो अंदर की बात है, आप खुलेआम देख लिजिए कौन आगे चल रहा है, पचास वर्षों से आज़ादी की दौड़ में. आप मानें या न मानें मेरा तो यह पूर्ण विश्वास है, ग़ुलामी के बाद जो औरतों की पीढ़ी आयी उसके पास बस एक काम था, अपने अधिकारों की मांग चिल्ला-चिल्ला कर दुहराते रहना, इसके विपरीत आज़ादी मिलते ही आदमी मस्त और भ्रष्ट हो गये. वे सभी चैन की बंसी बजा सोने लगे या फिर दिन रात जाग कर पैसे बटोरने लगे. पैसे बटोरने पर मुझे ध्यान आया, बुद्धिमान लोग कह गये हैं कि पूत सपूत तो क्यों धन संचय और पूत कपूत तो क्यों धन संचय. पुत्र की बात तो रहने दीजिये, इसे स्त्री के संदर्भ में समझिए, वह यह कि समझदार स्त्री के लिए धन की क्या आवश्यकता है और इसके विपरीत बेवकूफ़ स्त्री के लिए भी धन की कोई आवश्यकता नहीं है. अर्थात् समझदार स्त्री धन के महत्व को अच्छी तरह समझती है वह स्वतः पुरुष के पास धन नहीं छोड़ेगी, संचित कर लेगी. बेवकूफ़ स्त्री भी धन के उपयोग को जानती है, सब अपने पर ख़र्च कर लेगी और पुरुष के पास धन नहीं छोड़ेगी. अतः धन को एकत्र करना पुरुषों की मूर्खता है. लेकिन यह तो नीति वाक्य है, पुरूष भला इसे कहां मानने वाले, वे तो निरंतर धन एकत्र कर उसे यूं ही लुटाते और बहाते रहेंगे, इसके बाद लुटे-पिटे से बे-बात के प्रसन्न नज़र आयेंगे. हमें क्या, कहना हमारा काम था, समझना आपका. ख़ैर, आज़ादी मिलने के बाद आदमी चैन से सोने में इसे गवां बैठे, इसके विपरीत औरतें आज़ाद भारत में भी आज़ादी-आज़ादी चिल्लाती रहीं और सोना बटोरती रहीं, रात दिन जाग कर. नतीज़ा देखिये, आदमी पचास वर्षों में ग़ुलामी की ओर बढ़ा है और औरतें भौतिक के बाद आर्थिक आज़ादी की ओर. आदमी मूर्ख है, वह समझ ही नहीं पा रहा कि आख़िर समाज में हो क्या रहा है. वह तो बस अपनी झूठी शान और हेकड़ी में डूबा, गड्ढे में गिरता जा रहा है. जबकि औरतें हैं कि बड़े सोचे-समझे तरीक़े से, आज़ादी हासिल करती जा रही हैं. आदमी को असलियत का जब पता चलेगा तो हाथ के तोते उड़ जायेंगे. आप देखते जाइये, यही हाल रहा तो इक्कीसवीं सदी में, ट्रेन में पुरुष स्पेशल डिब्बे लगेंगे, बसों में आदमियों की सीट आरक्षित होगी, राशन और टिकट की लाइन में पुरुषों का नम्बर जल्दी आयेगा. अभी आप मेरी बात को मज़ाक में ले सकते हैं, लेकिन समय आने पर आप मुझे याद करेंगे.

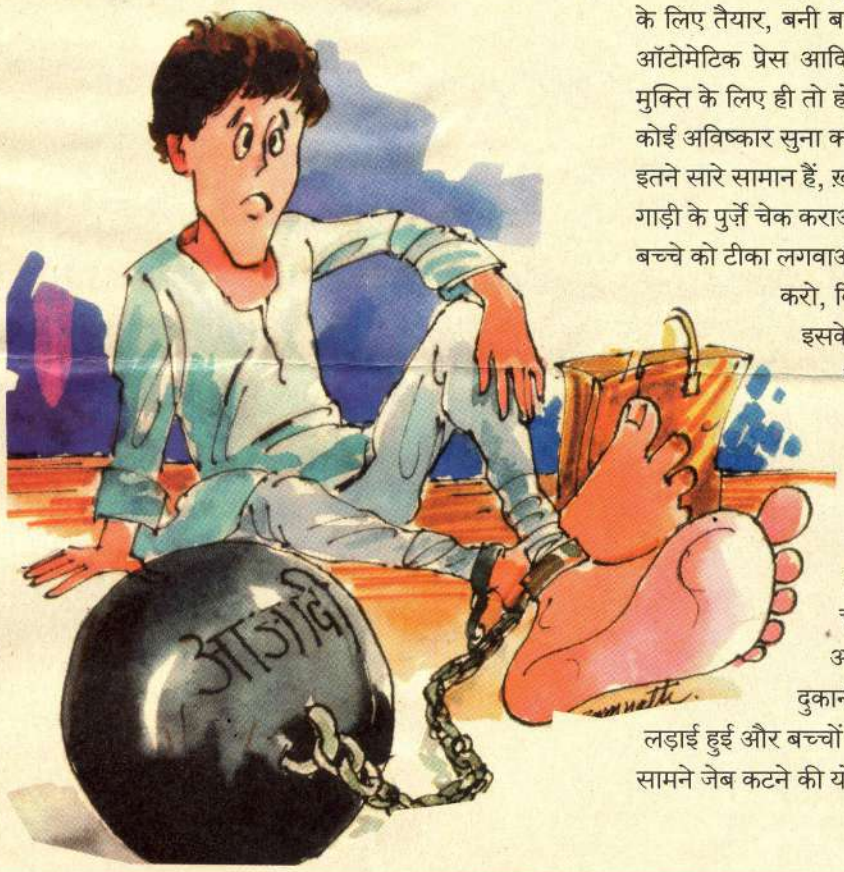

ज़रा ग़ौर से देखिये, गैस, प्रेशर कुकर, इलेक्ट्रिक व माइक्रोवेव ओवन, रोटी बनाने, कपड़े धोने, बर्तन धोने की मशीन, साफ़-सुथरा थैली का आटा, चुनी हुई दालें, बेसन, मैदा, सूजी सब तुरंत प्रयोग के लिए तैयार, बनी बनाई, भिन्न-भिन्न तरह की चटनी, अचार, ऑटोमेटिक प्रेस आदि, विभिन्न उपकरणों का आविष्कार नारी मुक्ति के लिए ही तो हो रहा है. आपने पुरुषों की आज़ादी से जुड़ा कोई अविष्कार सुना क्या? उसके लिए तो रोज ग़ुलामी बढ़ रही है. इतने सारे सामान हैं, ख़राब होंगे तो ठीक कौन करायेगा. आये दिन गाड़ी के पुर्ज़े चेक कराओ, मच्छर की दवा छिड़को, कूलर पेंट करो, बच्चे को टीका लगवाओ, सीवर ठीक कराओ, बच्चे की फ़ीस जमा करो, किताबे लाओ, ऑफ़िस में फ़ाइल निपटाओ, इसके बाद साहब की दस बातें सुनो और कम्प्यूटर सीखो. किस बे-सिर पैर के आदमी ने भारत जैसे देश में सारा काम कम्प्यूटर से करने की सलाह दी है. आजकल तो घर पहुंच कर आदमी का खिसियाना भी गुनाह है. ज़रा सा उसने ग़ुस्सा दिखाया नहीं कि शाम का चूल्हा गुल. चलो, अब लगाओ बाज़ार की दौड़. मुआ, आजकल हर गली मुहल्ले में फ़ास्ट फ़ूड के दुकानों की बाढ़ आ रखी है. मम्मी-पापा की लड़ाई हुई और बच्चों की मौज. ग़ुस्से में भरे आदमी की आंखों के सामने जेब कटने की योजना बनने लगती है. एक कहता है मैं चाऊ

मिन खाऊंगा, दूसरे को डोसा पसंद है. मम्मी छोले-भटूरे छोड़ कुछ खाती नहीं, पापा की पसंद ना पसंद का कोई अर्थ नहीं. वे तो वैसे ही देख-देख कर छक लेंगे. लास्ट आईटम आईसक्रीम है ही. मुहल्ले के इन दुकानदारों ने महिलाओं से सेटिंग न की होती तो, इतने ठाट से इनकी दुकानें चल ही नहीं सकती थीं. इतना ही नहीं, महिलाओं को पूर्ण आज़ादी देने के लिए आजकल क्रेच और नर्सरी घर-घर खुल गये हैं. यदि आप पुरुष हैं तो अब-तक तो आप महिला-आज़ादी से जल-भुन चुके होंगे? यदि नहीं, तो, कम-से-कम अपनी ग़ुलामी का एहसास तो ज़रूर हो गया होगा आपको.

यदि अभी भी आपको अपनी ग़ुलामी का एहसास न हुआ हो तो अब मैं एक बेजोड़ उदाहरण प्रस्तुत करने जा रहा हूं. उसे पढ़ने के बाद आप स्वयं को ग़ुलाम माने बिना नहीं रह सकेंगे. देखिये, पचास वर्षों में किसी भी भारतीय पुरुष की आप अंतरराष्ट्रीय उपलब्धि नहीं गिना सकते. इसके विपरीत हमारे देश की दो महिलाओं ने एक ही वर्ष में मिस वर्ल्ड और मिस युनिवर्स का ख़िताब जीत कर यह दिखा दिया है कि वे आज़ादी के मामले में दुनिया के किसी भी विकसित देश की बराबरी कर सकती हैं. जबकि भारतीय पुरुष आज़ादी के मामले में कहीं टिकते ही नहीं.

बहुत से पुरुष ऋणात्मक विचारधारा के होते हैं, वे अपनी आज़ादी को धोखे में जीते हैं. जैसे यदि उनकी पत्नी कहे कि घर जल्दी आना, तो वे देर से आयेंगे, यदि उन्हें घरवाली कहे कि काली पैंट पहनो, तो वे सफ़ेद पहनेंगे, यदि कहे कि गंदे पैर सोफ़े पर मत रखो तो वे बिस्तर पर रखेंगे. इसे ही वे अपनी आज़ादी समझते हैं.

जबकि समझदार पत्नी उल्टा बोल कर अपना काम निकालती रहती है और पति को मूर्ख समझती है. मसलन, जब पत्नी को अपनी सहेली के घर जाना होगा तो पति से कहेगी घर जल्दी आ जाना, जब अपनी साड़ी लानी होगी तो कहेगी तुम्हारे लिए कुर्ता-पायजामा लाना है. पति बेचारा लल्लू भी बनता है और इतराता भी है. आप ग़ौर से देखिये, हर क़दम पर इसी तरह के पुरुषों की ग़ुलामी के उदाहरण भरे पड़े हैं. जबकि वह अपनी झूठी शान में महिलाओं को 'ग़ुलाम' समझ रहा है.

अतः यदि आप पुरुष हैं तो अब भी चेतिये, उठिये और अपनी आज़ादी के लिए बिगुल बजाइये. अपने परिवार के पुरुष सदस्यों के साथ ही मुहल्ले के पुरुषों का भी एक संगठन बनाइये. उसमें पुरुष आज़ादी से जुड़े क्रांतिकारी भाषण दीजिये. महिलाओं की साजिश के ख़िलाफ़ पुरुषों को सावधान कीजिये. कहीं ऐसा न हो कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही नारी की ग़ुलामी के आप भी शिकार बन जायें.

बोलो, क्या है मेरी उम्र?

बीनाजी की उम्र का अंदाजा लगाना बड़ा मुश्किल हैं. उनके बाल बिल्कुल काले हैं और वे ख़ुदको हरदम सजा-संवरा और जवांउम्र रखती हैं. उनका मानना है कि उम्र तो सिर्फ़ एक सोचने की बात है और जहाँ तक काले बालों का सवाल है, सुपर वस्मोल ३३ केश काला को तो कोई मात नहीं दे सकता. कोई जान ही नहीं पाता कि आप इसका इस्तेमाल कर रहे हैं. और, आप भी जवां नज़र आ सकती हैं.

सुपर वस्मोल ३३ केश काला तेल. बाल काले करने का एक ऐसा तरीका जिसमें कोई झंझट नहीं, पदार्थों को मिलाने का बखेड़ा नहीं. दस्ताने नहीं. गंदगी नहीं. परऑक्साइड तो बिल्कुल भी नहीं. और हाँ, इसे पिछले ५० से भी अधिक वर्षों से सबका भरोसा मिलता आया है.

सुपर वस्मोल ३३ केश काला तेल.

बाल इतने कुदरती काले कि कोई जान ही न पाए.

सुपर वस्मोल ३३ केश काला तेल से संबंधी मुफ़्त जानकारी के लिए हमें इस पते पर लिखें : हायजिनिक रिसर्च इन्स्टिट्यूट, १३६ वी एस मार्ग, मुंबई ४०० ०२३.

VIRTUAL GRAPHICS

एक सीरियल लेखक की आत्मकथा

पैदा होते ही मैंने 'कहानी घर-घर की' देखी, और देखा मैंने सास को जो कभी बहू थी, अपना कंसंट्रेशन बढ़ाने के लिए कोर्स की किताब के बीच जेम्स हेडली चेज और शेरेलाक होम्स के उपन्यास रखकर पढ़ने शुरू कर दिए। गुलशन नंदा के उपन्यास तो मैं पूरी गर्मी की छुट्टी पढ़ता था।

मेरे प्रिय दर्शकों, आज मैं आपके सामने अपनी आत्मकथा लेकर उपस्थित हूं। आप लोग खिलाड़ियों की आत्मकथा चाव से पढ़ते हैं, सुना है आप लोगों ने सितारों की आत्मकथा भी खूब पढ़ी है। इतना ही नहीं अभी एक लेखक महोदय और अंग्रेजी लेखिका जी की भी आत्मकथा खूब बिकी। हमारे देश में तो एक विदेशी लेखिका अपनी आत्मकथा को ही अपना संपूर्ण रचना कर्म मानती है और उनके कलम उठाने मात्र से प्रकाशकों में उपन्यास छापने की होड़ लग जाती है, भाई वाह! राइटर का जलवा हो तो ऐसा। हां मैं एक बात तो कहना ही भूल गया, महापुरुषों की जीवनी या आत्मकथा पढ़ने का रिवाज खत्म-सा हो गया है। आजकल तो स्कूल के बच्चे भी मजबूरी में ऑटोबायोग्राफी पढ़ते हैं, चाहे वह शेक्सपियर की ही क्यों न हो। हां उन्हें आजकल फास्ट ट्रैक पर रईस बनने वालों की लाइफस्टाइल पढ़ने की चाहत जरूर रहती है। आप सोच रहे होंगे कि मैं क्यों अपनी आत्मकथा के बारे में सोच रहा हूं, तो बता दूं कि आजकल जिस तरह से मेरे लिखे सीरियल पर लोग रात-दिन चिपके रहते हैं, मुझे एहसास हो रहा है कि दर्शकों के मन में जरूर मेरे बारे में जानने की जिज्ञासा होती होगी।

सचमुच वे जानना चाहते होंगे कि मेरे कितने अफेयर हैं, मेरी जिंदगी कहां से शुरू होती है और मैंने अपनी जिंदगी में कितने हादसे देखे हैं। आगे मेरा अपनी मौत और उस पर होने वाले जलसे के बारे में क्या ख्याल है। क्या सचमुच मेरे पास भी कोई अदृश्य शक्ति है जो आने वाली घटनाओं को अपनी जिंदगी में मैं जान लेता हूं, क्या मेरे पास भी चमत्कार करने वाले किसी बाबा का पता है जो मुझे सीरियल शुरू करते ही उसके सफल होने के लिए अमोघ आशीर्वाद दे देते हैं, क्या मैं भी आम जिंदगी की समस्याओं से दो चार होता हूं या बड़े नामी राइटरों के बारे में की जाने वाली कल्पनाओं की तरह एक हाथ में जाम लेकर आधी रात के बाद सोचता हूं और पूरी तरह नशे में डूबने के बाद मेरे भीतर आइडिया का प्रवाह होता है। क्या सीरियल में दिखाए जाने वाले किसी कैरेक्टर में मेरा भी प्रतिबिम्ब मिलता है या ग्लैमरस लाइफ लीड करने वालों की तरह बूढ़े होने के बाद भी मैं जवानों को मात करने का नुस्खा जानता हूं। क्या मेरा आकर्षण पार्टी में सिर चढ़ कर बोलता है और क्या मेरे घर में सचमुच ऐसे ही चमत्कार होते रहते हैं जैसा में लिखता हूं।

आखिरी पर सबसे महत्वपूर्ण जिज्ञासा जो दर्शकों को मेरे बारे में हो सकती है वह यह कि मेरे कितने घर, कितनी पत्नी और कितने बच्चे हैं, उनका आपस में रिश्ता क्या है और मैं अगर इतनी बकवास लिखने के बाद भी जिंदा हूं, टेंशन फ्री हूं और हर कहानी का प्लाट झट से लिख देता हूं तो कैसे? अभी मैंने कहा कि मैं आत्मकथा लिख रहा हूं तो पहली बात आत्मकथा लिखने में झूठ लिखने की मनाही होती है, तो मेरे प्यारे दर्शकों, यहां मैं जो भी लिखूंगा सच लिखूंगा, सच के सिवा कुछ नहीं लिखूंगा क्योंकि एक राइटर का दीन-ईमान होता है, वह सरस्वती की असीम अनुकम्पा से लिखता है। अगर वह झूठ बोलेगा तो लिखने की शक्ति समाप्त हो जाएगी।

यहां यह सब मैं इसलिए लिख रहा हूं कि आपको मेरी कही हुई बात पर यकीन हो जाए, सच तो यह है कि मैं उत्तर प्रदेश के एक छोटे से कस्बे का रहने वाला हूं। एक गरीब परिवार मे मैं पैदा हुआ। पैदा होते ही मैंने 'कहानी घर-घर की' देखी, और देखा मैंने सास को जो कभी बहू थी, देखता रहा मैं बचपन से कि कैसे जब सास बहू थी तो अपनी जान बचाती फिरती थी और कैसे वही सास बहू लाने के बाद अपनी ही बहू को अपने पुराने दिन भूलकर गैस और स्टोव से दहेज के लिए जलाने को आतुर हो गई। मैंने देखा कि हर परिवार की कहानी में घरवाली को अपनी होने वाली सौत का डर सताता रहता है, शक करना तो उसका जन्मसिद्ध अधिकार है। इसके अलावा मैं जब पढ़ता था तो पढ़ते-लिखते समय घर में हर समय महाभारत का लाइव टेलिकास्ट चलता रहता था। हमारे घर की महाभारत सुलझाने पड़ोसी आते और दोनों को रामायण की प्रतियां भेंट करते, गीता का ज्ञान बांटते। ऐसे में किताब खुली रहती, पढ़ाई भला क्या होती। मैंने भी अपना कंसंट्रेशन बढ़ाने के लिए कोर्स की किताब के बीच जेम्स हेडली चेज और शेरेलाक होम्स के उपन्यास रखकर पढ़ने

शुरू कर दिए। गुलशन नंदा के उपन्यास तो मैं पूरी गर्मी की छुट्टी पढ़ता था।

ऐसे में मेरे कैरियर का क्या हो सकता है यह आप समझ सकते हैं और वह दिन भी आया कि अचानक मुझे विश्वास हुआ कि अगर मुझे अपनी आजीविका चलानी है तो इस कसबे से बाहर निकलना होगा। बस फिर क्या था मैं मुंबई की ट्रेन में बैठ यहां आ पहुंचा। अपने संघर्ष के दिनों में सड़क पर जूते घिसने से लेकर फुटपाथ पर पड़ी बेंच पर सोने तक सब कुछ किया। यहां आकर मैंने ऐसे ही धक्के खाते और तुक्का भिड़ाते-भिड़ाते मैं कोई कपूर जी के ऑफिस जा पहुंचा। वहां मैंने बड़े जतन से सहेज कर रखे अपने कॉलेज मैगजीन में छपे लेख दिखाए। कुछ मेरी हालत पर कुछ मेरे टैलेंट पर उन्हें भरोसा हो गया और मैं उनका दिहाड़ी राइटर बन गया।

अपने गुजारे के लिए मैं तो बस बचपन में पढ़े गए जासूसी उपन्यास, रोमांटिक उपन्यास और मुहल्ले की कहानियां मिक्स कर कपूर जी को दे देता हूं। भगवान जाने वो कौन-कौन से फार्मूले का मिक्सचर बनाकर हमारी कहानी पर्दे पर पेश कर देती हैं। हमें तो यह भी नहीं पता होता कि इस सीरियल में यह सीन हमने कब लिखा था और किस सीरियल का कौन-सा सीन कहां फिट हो गया है। मैं तो यह भी नहीं देखता कि कास्टिंग में राइटर का नाम किसका जा रहा है? जहां तक मेरी पर्सनल लाइफ का सवाल है तो ले दे के मेरी एक ही अर्धांगिनी है- रामप्यारी, जो मेरी मां यानी अपनी सास के साथ गांव में रहती है। हम दोनों को एक-दूसरे पर पूरा विश्वास है। मैं नियमित रूप से उसे मनीआर्डर भेजता रहता हूं और टीवी देखने को उसे मैंने मना कर रखा है। जब भी मेरी फोन पर उससे बात होती है वह पड़ोसियों द्वारा सीरियल की कहानी बताए जाने पर हंसती है और कहती है क्यों जी, तुमने ऐसा लिखा है? घर लौटकर आओ तो खबर लेती हूं। तब मैं उसे प्यार से संमझाता हूं, देखो यहां क्या-क्या होता है तुम्हें पता नहीं है और तुम्हें यह भी नहीं पता कि हमारे देश के दर्शक क्या चाहते हैं। अरे यह सब तो कपूर जी को पता है सब उनका ही किया धरा है, हमारा नहीं। हम तो बस घर चलाने के लिए लिख रहे हैं, तुम मन में कुछ ऐसा-वैसा मत लाना, वह भी खुश और हम भी।

■ मुरली मनोहर श्रीवास्तव

अपने गुजारे के लिए मैं तो बस बचपन में पढ़े गए जासूसी उपन्यास, रोमांटिक उपन्यास और मुहल्ले की कहानियां मिक्स कर कपूर जी को दे देता हूं। भगवान जाने वो कौन-कौन से फार्मूले का मिक्सचर बनाकर हमारी कहानी पर्दे पर पेश कर देती हैं।

व्यंग्य प्रतियोगिता
जीतिए रु. 500 का नोट

उदासी और वैराग्य के माहौल में सार्थक और श्रेष्ठ व्यंग्य लिखना आसान बात नहीं। आपकी कलम में एक धार होनी चाहिए, पैनापन होना चाहिए। यदि आप भी व्यंग्य लिखने में महारत रखते हैं तो इस प्रतियोगिता में जरूर भाग लीजिए। यदि आपका लिखा व्यंग्य चुना गया और पत्रिका में छपा तो आप पाएंगे रुपये 500 का नकद इनाम। व्यंग्य 1000 से 1200 शब्दों के बीच हो। अपना नाम, पता व फोन नंबर जरूर लिखें, तभी आपकी रचना पर विचार किया जाएगा।

हमारा पता है- **गृहलक्ष्मी**
एक्स-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-2,
नई दिल्ली- 110020

शुगर की कमजोरी में विशेष लाभकारी

एनर्जिक-31

कैप्सूल एक फायदे अनेक

एनर्जिक-31 लाल रंग का बडा कैप्सूल है। जिस पर हिन्दी, इंगलिश में एनर्जिक-31 प्रिंट है। यह असली शुद्ध शिलाजीत, बहुमुल्य भस्मों एवं जड़ी-बूटियों के योग से बना बहुउपयोगी विशुद्ध आयुर्वेदिक फार्मुला है, जो शरीर के सभी अंगों की क्रियाशीलता बढ़ाता है, खाया पिया पचाता है, सप्तधातुओं को परिपुष्ट करता है, **सुस्ती, आलस्य, निराशा** को दूर करता है, **शारीरिक कमजोरी** दूर करता है, शरीर को **पुष्ट, सुडोल, सुन्दर** बनाता है, जीवन शक्ति, रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाता है, तनाव मुक्त रखता है।

स्त्री पुरूष दोनों को सामान रूप से प्रत्येक मौसम में लाभदायक है।

खिलाडियों को एनर्जिक-31 कैप्सूल का सेवन किसी भी अन्य मंहगी दवाई से अधिक **स्टेमिना** प्रदान करता है, **दर्द व थकान मिटाता है,** स्फूर्ति ताजगी लाता है। किसी भी प्रकार की टेस्टिंग से चिंतामुक्त रखता है।

जो व्यक्ति कामोत्तेजक दवाईयों के सेवन से या अन्य कारणों से. अपनी शक्ति गवाँ बैठे है, उनको 40 दिन एनर्जिक-31 कैप्सूल का प्रातः एवं रात्रि दूध से नियमित सेवन नव जीवन प्रदान करता है। बिना किसी नुकसान के लम्बे समय तक लिया जा सकता है।

भारत में सभी प्रतिष्ठित मैडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध।

हमारी अन्य औषधियाँ, लिवेक्सोन, जोइन्टैक्स, हार्टो, ल्यूको-एफ, एनीमियाक्योर, पाइलकिलर, ब्रैकस्टोन, ज्वरहन्ता, रक्तनिखार, स्टेविल-एस, एविऔन-7, बोर्नएक्स, शिलाजीत, गैस्ट्रान, पायनियर आदि भी अपने गुणों में विशिष्ट है।

बडे डाक्टर्स, मेडिकल स्टोर्स, स्टाकिस्ट के लिए आकर्षक कमीशन, सम्पर्क करें : आयुर्वेद विकास संस्थान, सी-83, गाँधीनगर, मुरादाबाद-244001 फोन/फैक्स 0591-2491321 मो.: 09359702566 E-mail:avs@sancharnet.in

Required M.R. for all Towns of India

हमारे देश में मुख्य वस्तु से ज्यादा ध्यान उस पर दिया जाता है जो सामान उसके साथ मुफ्त मिलता है। यहां तक कि चुटकुला प्रसिद्ध है कि- जब एक ग्राहक को दुकानदार सामान मुफ्त देने लगा तो उसे लगा कहीं मैं ठगा तो नहीं गया, सो उसने लेने से पहले दुकानदार से कहा मुफ्त में दोगे, तो ले लूंगा। ताजा वाकया यह है कि- शर्मा जी खाने-पीने के बड़े शौकीन हैं और भाभी जी घूमने की। विश्वास मानिए उन्हें आप जब भी टीवी के सामने पाएंगे तो सामने खाना-खजाना चल रहा होगा। जनाब संजीव कपूर के बड़े फैन हैं, अब संजीव कपूर के द्वारा बनाई जाने वाली अधिकतर डिश लास्ट आते-आते माइक्रोवेव तक पहुंच ही जाती है सो शर्मा जी को लगता है कि एक बार माइक्रोवेव आ जाए तो बस घर में व्यंजनों की बहार आ जाएगी। बटन दबाते ही लजीज पकवान तैयार। जब से शर्मा जी को माइक्रोवेव ओवन के गुण पता चले हैं, वे खरीद लाने के फिराक में हैं। उधर भाभी जी तंग आ गई हैं शर्मा जी की आदतों से। रोज नए व्यंजनों की फरमाइश कोई पूरी करे भी तो कैसे, वह भी चूल्हा झोंककर। सो उनका मन पूरी तरह से इस माहौल से उचाट हो गया है, वह कहीं दूर नयी जगह घूमना चाहती है।

अभी कुछ पैसे घर की बचत से बचे हैं और शर्मा जी चाहते हैं घर गृहस्थी के काम की चीज ओवन आ जाए। जबकि उनकी श्रीमती जी कह रही हैं पैसों पर उनका अधिकार है और वे पैकेज टूर का लाभ उठाते हुए घूमने जाएंगी। आप यदि शादीशुदा हैं तो समझ सकते हैं ऐसी स्थिति में क्या हाल हो सकता है। इसी बीच सोने पे सुहागा हुआ एक विज्ञापन छपा कि माइक्रोवेव ओवन के साथ मनाली का टूर पैकेज फ्री, वह भी फाइव स्टार होटल में। वैसे तो शर्मा भाभीजी टूर के साथ ओवन फ्री वाला पैकेज चाहती थी पर ऐसा कोई चांस न देख ओवन के साथ टूर फ्री वाले पैकेज पर ही राजी हो गईं। दोनों प्राणी खुशी-खुशी ओवन खरीदने पहुंच गए। डीलर ने उन्हें प्यार से बिठाया और खूबसूरत ओवन टिका दिया। जब उन्होंने टूर के बारे में पूछा तो पता चला वह बड़े मॉडल के साथ है। मरता क्या न करता, उन्होंने दुगने दाम वाला बड़ा मॉडल खरीदा और लगे टूर के सपने देखने कि पता चला अब आप को एक फार्म भर कर देना है और हर तीन महीने में साल भर तक आप लकी ड्रा में हिस्सा लेंगे अगर जीत गए तो फाइव स्टार होटल में तीन दिन और दो रात फ्री वाला टूर मिलेगा।

उम्मीद पर दुनिया कायम है। घर में रोज पोस्टमैन की बाट जोही जाती है कि क्या पता टूर का लेटर आ ही जाए पर मुआ काहे को टूर का लेटर आए। इसमें भी कहीं सेटिंग होगी, अब इस चक्कर में ओवन तो आ गया पर केक और पुलाव अब तक उस में नहीं बना। भाभी जी का कहना है जिस तरह मैं सैर-सपाटे के सपने देख रही हूं उसी तरह शर्मा जी को भी पुलाव और केक के सपने देखने दीजिए।

नया वाकया है, अभी वर्मा जी को डीवीडी खरीदना था, देखा तो बड़ा टीवी लिए चले आ रहे हैं। पता चला टीवी के साथ डीवीडी मुफ्त था सो उन्होंने सोचा जब कोई सामान मुफ्त मिल रहा है तो पैसे क्यों खर्च करें। अरे आजकल तो छोटे से छोटे सामान पर कुछ न कुछ मिलता है। बस यह समझ लीजिए कि मार्केट में ग्राहक इतना बड़ा राजा हो गया है कि हर कोई उसे लुभाने पर तुला है। आप एक का बजट बना कर जाइए और उसी बजट में दो ले आइए। जैसे एक पाउडर के साथ दूसरा बच्चा डिब्बा मुफ्त, हां एक बात ध्यान से समझ लीजिए आपको लेना दोनो पड़ेगा, अगर आप सोचते हैं कि सामान आधे दाम में मिल जाएगा तो आप भारी भूल कर रहे हैं और अगर आपको यह गलतफहमी हो जाए कि आप मार्केट से सिर्फ मुफ्त वाला माल ले कर खिसक लेंगे तो समझ लीजिए बुरी तरह फंस गए। अभी हमारे पड़ोसी मेहरा जी बाईक लेने गए। अच्छा भला स्कूटर चल रहा था उनका, कि पड़ गए मुफ्त के चक्कर में। कहीं से विज्ञापन देख लिया कि स्कूटर दे कर नई बाईक मुफ्त ले जाइए। जैसे ही वे पहुंचे कि दुकानदार ने स्कूटर अपने कब्जे में ले लिया और नई बाईक पकड़ा दी। बस दो-चार कागज पर साइन कराए, बोला कागजी औपचारिकता पूरी करनी ही पड़ती है। मेहरा जी नई बाईक के सपने में इतना डूबे थे

कि औपचारिकता क्या है, यह देखने की जरूरत ही नहीं समझी। अब रोज बाईक वाले को सुबह उठकर चार बातें सुनाते हैं, क्योंकि पिछले सात महीने से बाईक का इंस्टालमेंट ब्याज सहित भर रहे हैं। अब वह दुकानदार मुस्कुराता है और मेहरा जी रोते हैं। बच्चे भी आजकल मुफ्त के चक्कर से अछूते नहीं हैं। जब चॉकलेट दिलाओ तो देखते हैं कि चॉकलेट के साथ पोकिमान या स्पाइडरमैन है कि नहीं। मैं समझ नहीं पाता, बच्चा चॉकलेट के लिए मचल रहा है या पोकिमान के लिए।

मैने मुफ्त खरीदने वालों से पूछा आपको नहीं लगता कि आप मुफ्त के चक्कर में फंस गए हैं। एक के बाद दूसरा सामान मुफ्त और कर्ज का बोझ बढ़ता जा रहा है। वे हंसे और बोले तुम्हें मुफ्त का मजा नहीं पता। अरे ऐसा लगता है कि जो भी सामान हम इस्तेमाल कर रहे हैं वह हमारी लागत से एक्सट्रा है। मूल तो हम वसूल ही चुके हैं, अब सूद खा रहे हैं। आपको पता है हमने फ्री के चक्कर में एक इसी काम वाला क्रेडिट कार्ड दूसरे एकाउंट के साथ मुफ्त लिया है। अब जो भी मुफ्त खरीदना होता है हम इसी एकाउंट से खरीदते हैं। ऐसा लगता है मुफ्त के पैसे से मुफ्त का माल ला रहे हैं। वाकई मैं उनके दर्शन से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। क्लाईमेक्स तो तब हुआ जब हमने मुहल्ले में शोरी जी की हालत देखी। जनाब मुफ्त के बड़े प्रेमी आदमी हैं, शादी में उस घर को चुना जहां दो सालियां मुफ्त थी। और हुआ भी वैसा ही, शादी होते ही कुछ दिन के बाद दोनों शोरी जी के घर बहना के साथ रहने आ टपकीं। शोरी जी पहले तो बड़े खुश हुए पर जल्दी ही हकीकत से दो-चार हो गए। देखते-देखते उनके घर पर तीनों बहनों का कब्जा हो गया और शोरी जी अपने ही घर में बेगाने हो गए। बहनों में एकता इतनी कि शोरी जी टापते रह गए। पिछले पांच साल से परिवार वहीं का वहीं है। एक को पढ़ा-लिखा कर डोली में विदा कर चुके हैं और दूसरी की तैयारी में लगे हैं।

वैसे मैंने तो मुफ्त के चक्कर को हमेशा ही खतरनाक पाया है। पर भारत में प्रकाशकों के अकाल और लेखकों की बहुतायत देखते हुए इस क्षेत्र में भी कोई योजना आजमानी चाहिए। जैसे प्रकाशक कह सकते हैं, एक पुस्तक प्रकाशित करवाने पर दूसरी पुस्तक का प्रकाशन मुफ्त या लेखक कह सकता है एक रचना के प्रकाशन पर दूसरी रचना मुफ्त भेजने का प्रावधान है। क्या पता इस योजना के बाद कुछ कालजयी लेखक सामने आ जाएं और मुफ्त के चक्कर में घर घर साहित्यिक किताबें दिखने लगे।

■ मुरली मनोहल श्रीवास्तव

व्यंग्य प्रतियोगिता
जीतिए रु. 500 का नोट

उदासी और वैराग्य के माहौल में सार्थक और श्रेष्ठ व्यंग्य लिखना आसान बात नहीं। आपकी कलम में एक धार होनी चाहिए, पैनापन होना चाहिए। यदि आप भी व्यंग्य लिखने में महारत रखते हैं तो इस प्रतियोगिता में जरूर भाग लीजिए। यदि आपका लिखा व्यंग्य चुना गया और पत्रिका में छपा तो आप पाएंगे रु. 500 का नकद ईनाम और एक प्रशंसा प्रमाण पत्र गृहलक्ष्मी की ओर से। व्यंग्य 1000 से 1200 शब्दों के बीच हो। अपना नाम, पता व फोन नं. जरूर लिखें, तभी रचना पर विचार किया जाएगा।

हमारा पता है- **गृहलक्ष्मी**
एक्स-30, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेज-2,
नई दिल्ली-20

डायमंड पॉकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित उर्दू शायरी की श्रेष्ठ पुस्तकें

जां निसार अख्तर
तनहा सफर की रात... 75/-

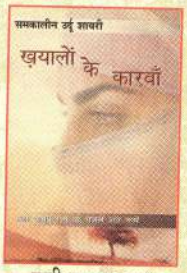

राही मासूम रज़ा
ख़यालों के कारवाँ... 75/-

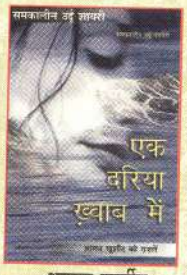

आलम खुर्शीद
एक दरिया ख़्वाब में... 75/-

मंजूर हाशमी
फूलों की कश्तियाँ... 75/-

बेकल उत्साही
लफ्जों की घटाएँ... 75/-

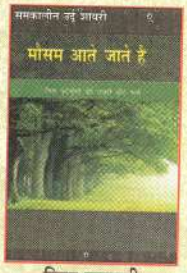

निदा फ़ाज़ली
मौसम आते जाते हैं... 75/-

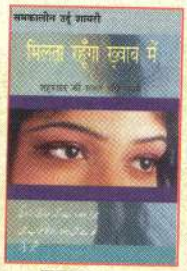

शहरयार
मिलता रहूँगा ख़्वाब में... 75/-

बशीर बद्र
उजालों की परियाँ... 75/-

अहमद फराज
ख़्वाब फरोश... 75/-

नासिर काज़मी
मैं कहाँ चला गया... 75/-

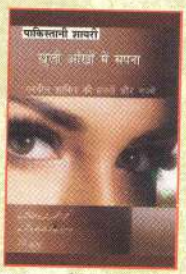

परवीन शाकिर
खुली आँखों में सपना... 75/-

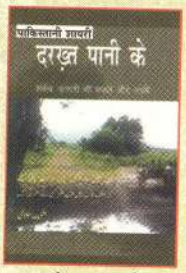

शकेब जलाली
दरख़्त पानी के... 75/-

पुस्तकें V.P.P. से मंगवायें। डाक व्यय प्रति पुस्तक 20/- तीन पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर डाक व्यय फ्री।

डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि., X-30 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली-110020, फोन : 011-51611861, फैक्स : 011-51611866,
ई-मेल : sales@diamondpublication.com, वेबसाइट : www.diamondpocketbooks.com

दिल क्या-क्या है!

बस एक बेचारा दिल ही तो है.... जिसे लेकर जाने क्या-क्या सुनना पड़ता है। इतना सब सुनने-सुनाने के बाद भी लोग उस पर रहम करने को तैयार नहीं। कवि-शायर अपने ढंग से कसर निकालते हैं तो डॉक्टर और वैज्ञानिक अपने ढंग से।

दिल तो पागल है , दिल दीवाना है जैसी बातें सुन यक़ीन हो चुका है कि दिल का मामला बड़ा गड़बड़ है। ढेरों बातें सुन कर दिमाग़ में एक प्रश्न कुलबुलता रहता है। आख़िर दिल क्या-क्या है? कुछ ने लिखा- 'शीशा हो या दिल हो आख़िर टूट जाता है'। तो दिल शीशा भी है। वहीं एक जनाब लिख गए, 'दिल हमारा शीशे के बदले पत्थर का होता, न टूटता न फूटता' अर्थात दिल पत्थर का हो सकता है। हां होता है पत्थर का दिल। तभी तो कहते हैं बडा पत्थर दिल इंसान है। वहीं कभी कभी 'दिल का भंवरा करे पुकार' सुन कर लगता है दिल भौंरा है। मैंने मेडिकल साइंस वालों से मामले का खुलासा करने की ठानी। वे बोले, 'दिल? दिल मींस क्या हार्ट? हार्ट इज़ वेरी सिंपल। इसमें तीन वाल्व होते हैं और यह पूरे शरीर में ब्लड सप्लाई का काम करता है।'

मैंने कहा, 'नो सर! दिल इट्स नॉट सो सिंपल।'

वे बोले, 'मैं हार्ट की बात कर रहा हूं, दिल की नहीं।'

मैंने कहा, 'सर,! जिसे आप अंग्रेजी में हार्ट कहते हैं, वही हिंदी में दिल है।'

वे बोले, 'नहीं बॉस! तुम्हारा हिंदी वाला दिल हमारे अंग्रेजी वाले हार्ट से अलग है।'

मैंने कहा, 'नहीं सर ऐसा होगा तो हिंदी जानने वाला बेचारा ज़िंदा कैसे रहेगा? उसके भीतर का दिल भी हार्ट है; जो धक-धक करता है और ग़रीब आदमी भी उसी के सहारे ज़िंदा रहता है।'

'देखो यहां धक-धक की बात मत करना दिल के धक-धक करने और हार्टबीट बढ़ने में फ़र्क़ है। तुम हिंदी वाले हार्टबीट बढ़ने को भी दिल धक-धक करने लगा कह कर एंजॉय करते हो। जबकि हम लोग इस मामले में बड़े सख़्त हैं। हार्टबीट बढ़ जाए तो पेशेंट को आईसीयू में भेज पूरा चेकअप करते हैं। देखते हैं कि कहीं कोई वॉल्व तो डैमेज नहीं हो गया। ऑपरेशन तो नहीं करना पड़ेगा। जबकि तुम्हारा धक-धक डांस ख़त्म होते ही ठीक हो जाता है।'

'डॉक्टर साहब मेरे दिल को भी हार्ट समझिए, प्लीज़! उसके साथ दोहरा स्टैंडर्ड न अपनाइए।'

'देखना पड़ेगा। वैसे तुम लोगों का केस बड़ा एब्नॉर्मल होता है। तुम हार्ट को सीरियसली नहीं लेते। हथेली पर लेकर घूमते रहते हो और जिसे मन आया उसे देते फिरते हो। ये भी नहीं देखते कि जिसे हार्ट आई मीन दिल दे रहे हो उसका और तुम्हारा कोई मैच भी है या नहीं। हिंदी फिल्में इसी थीम पर हिट हो जाती हैं। मेरी समझ में नहीं आता हार्ट डोनेट करने के बाद हीरो ज़िंदा कैसे रहता है?'

'डॉक्टर साहब, आप इस पचड़े में न पड़ें तो ही ठीक है। हिंदी फिल्म का हीरो तो सौ-पचास गोली खा कर भी तब तक नहीं मरता जब तक डायरेक्टर न चाहे और अगर उसका दिल टूट जाए तो कहो खड़े-खड़े ही जान दे दे।'

मेरी इस बात से डॉक्टर साहब का दिल थोड़ा पसीजा। बोले, 'हां, ये तुमने ठीक कहा। ये बताओ दिल टूटता कैसे है? इज़ इट अ ब्रेकेबल आइटम? एक गाना कहता है- इस दिल के टुकड़े हज़ार हुए...। सो टेल मी थाउज़ैंड्स ऑफ पार्ट्स होने के बाद हीरो ज़िंदा कैसे रहा? वैसे भी मैं तुम्हारे दिल को लेकर हाइली कन्फ्यूज़ हूं। कभी किसी को कह देते हो बड़े दिल वाला आदमी है तो किसी को कहते हो भगवान ने लक्ष्मी तो बहुत दी, पर ख़र्च करने का दिल नहीं दिया। कभी किसी गाने में यह चैलेंज करता नज़र आता है। तो कभी कहता है- और इस दिल में क्या रक्खा है..। और कभी इसे अपने धडकने का सबब ही नहीं समझ आता। गोया दिल न हुआ, फैक्ट्री में बनने वाला प्रोडक्ट हो गया कि जैसा चाहा बनवा लिया। छोटा-बड़ा, मचलने वाला, बहकने वाला या फिर ठोस फ़ौलादी।'

मैंने कहा, 'डॉक्टर साहब आप हमारे दिल को वाक़ई जरा ध्यान से देखिएगा। क्योंकि हमारा दिल मेडिकल साइंस की पकड़ से बाहर की चीज़ है। मुझे तो लगता है आपके रिसर्च हमारे दिल को कभी नहीं समझ पाएंगे। देखिए दिल न हो तो हमारा जीना दूभर हो जाए।'

वे बोले, 'तुम इस समय हार्ट की बात ही कर

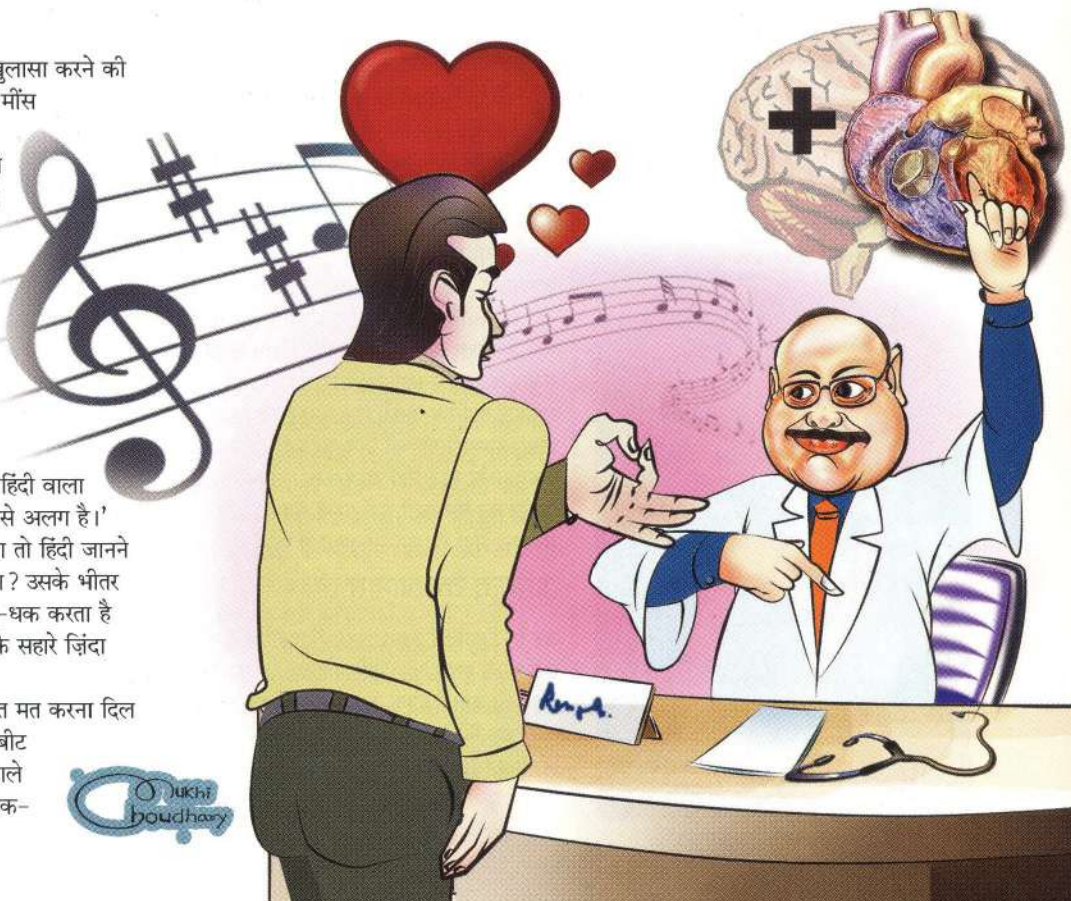

रहे हो न, मैं भी तो यही समझा रहा हूं कि हार्ट न हो तो आदमी ज़िंदा नहीं रह सकता।'
'ओह सर, आप समझिए। मैं दिल की बात कर रहा हूं। आप गहराई में उतरिए। देखिए, हमारे दिल में कितने जज्बात भरे हुए हैं। हम ख़ाली रोमांस और बहकी-बहकी बातें ही नहीं करते। हम तो चाहते हैं कि दुनिया में कहीं दुख-दर्द न रहे। हर तरफ़ ख़ुशहाली हो। यही नहीं, हमारा दिल दूसरे के दुख-दर्द को अपना समझता है और कहीं भी कोई आपदा आए तो वह प्रभावितों के आंसू पोंछने को तड़पता है।'
इस पर वे थोड़े सीरियस हुए, 'बोले सो तो ठीक है, पर दिल का इतना कमज़ोर होना भी ठीक नहीं होता। हार्ट मस्ट भी स्ट्रॉन्ग एंड लव इमोशंस शुड बी इन लिमिट।'
क्या बताऊं, कितना गुस्सा आता है लोगों की इतनी प्रेक्टिकल बातें सुन कर। अगर परिवार में दिल छोड़ कर कंप्यूटराइज़ रिलेशन हो गए तो भला जीने का क्या अर्थ रह जाएगा। पर नहीं, मुझे लगता है मेडिकल साइंस वालों की दुनिया कोई और है। फिर भी मैंने टटोला, 'सर क्या अपके सीने में भी दिल है?'
वे बोले, 'व्हाट अ नॉनसेंस क्वेश्चन? तुम पूछ रहे हो कि मेरे पास हार्ट है कि नहीं?' अब तक

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

पेशे से इंजीनियर मुरली मनोहर श्रीवास्तव वैज्ञानिक दृष्टि संपन्न तो हैं ही। साहित्यिक स्वभाव के साथ वैज्ञानिक नज़रिये का तालमेल उन्हें व्यंग्य के लिए एक अलग धार देता है। एक किताब 'सत्य जीतता है' के अलावा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कई रचनाएं प्रकाशित।

उन्हें भी कुछ डाउट हो चला था। उन्होंने सीने पर हाथ रख कर कन्फर्म किया और मुस्कुराते हुए बोले, 'यस माई हार्ट इज़ विद मी।'
'आर यू श्योर?'
'ओह माई गॉड आएम 200 परसेंट श्योर।'
'ओके सर, यह बता दीजिए आप बिना फीस के किसी मरीज़ को देखना पसंद करेंगे?'
वे नाराज़ हुए, 'देखो अपना कंसेंट्रेशन हार्ट पर करो, मरीज़ पर नहीं। ट्रीटमेंट हमारा प्रोफेशन है, उसका दिल से कोई लेना-देना नहीं है।'
'ओह नो सर, मैं आपके दिल को टेस्ट कर रहा था। हां, हार्ट भले न चेक कर पाऊं, पर दिल के मामले में मुझे कोई धोखा नहीं होता।'
वे बोले, 'ओके-ओके, आई नो इट बट सर्टेन्ली यू आर डूइंग अ गुड जॉब। तुम दिल और हार्ट में रिलेशन बनाकर समाज के लिए अच्छा काम कर रहे हो।'
एक बार फिर से बात को लाइट बनाते हुए मैंने कहा, 'बेसिकली आज के ज़माने में दिल का चैप्टर जीके की बुक में होना चाहिए या फिर किसी रिअलटी शो के बिग बॉस गेम में।'

आदाब अर्ज़ है

चलता है, चलता है

मुल्ला नसरुद्दीन गहरी नींद में थे। उन्होंने सपना देखा कि कोई उन्हें अशर्फ़ियां दे रहा है। वह गिन रहा था, नौ अशर्फ़ियां गिन चुका था और इसके आगे वह कुछ और देने के लिए तैयार नहीं था। उधर मुल्ला दस से कम पर मानने वाले नहीं थे। वे अपनी रट लगाए हुए थे कि एक और दो। तभी गली में ज़ोर का शोर मचा और उनकी नींद टूट गई। चौंक कर उठे और हाथ पर नज़र गई तो पाया कि वह ख़ाली है। मुल्ला बिना कोई देर किए फिर लेट गए। सिर से पैर तक चादर तान ली। आंखें भींच कर ज़ोर से बंद कर लीं और हाथ फैला दिए। फिर बोले, 'कोई बात नहीं यार। चलता है, चलता है, सब चलता है। ऐसा करो तुम हमें केवल नौ ही अशर्फ़ियां दे दो।'

अब वे थोड़ा लाइट हुए और बोले, 'एक बात बताओ एक गाने में जब तुम्हारा हीरो अपील करता है - ओ मेरे दिल के चैन, चैन आए मेरे दिल को दुआ कीजिए... तो एक्ज़ैक्ट्ली इसका क्या मतलब निकलता है?'
इस बार मैं मुस्कुराया, 'बोला सर ये दिल की बातें हैं। जाने दीजिए और आप सिर्फ़ हार्ट पर कंसेंट्रेट कीजिए। मैं जिस दिल की बात कर रहा हूं, वह अलग है।'
अब वो मुस्कुराए, 'मैं भी तो तुम्हें यही बताना चाहता था कि तुम्हारा दिल और हमारा हार्ट अलग-अलग है, पर तुम मेरी बात ही नहीं मान रहे थे। अब तुम ख़ुद कह रहे हो, तुम्हारा दिल और हमारा हार्ट अलग-अलग है।'
मैंने कहा, 'मैं तो बस ये क्लीयर करने आया था कि आपकी नज़र में दिल क्या है? पागल-दीवाना ..... आदि-आदि?'
'यू नो गाना एंड शायरी आर मेंटल केस।'
मुझसे रहा नहीं गया। मैंने कहा, 'डॉक्टर साहब, मामला दिल का है और आप इसे मेंटल केस बता रहे हैं। बंदा दिल से परेशान है और आप हैं कि कह रहे हैं बीमारी दिमाग़ में है!'
वे बोले, 'यू सी दिल और दिमाग़ एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। दोनों को मिलकर काम करना चाहिए और जब दोनों का कनेक्शन टूट जाता है तभी मेंटल केस बनता है।'
मैंने कहा, 'नो सर, जब हीरो का कनेक्शन टूट जाता है, तब मेंटल केस बनता है।'
'तुम फिर गड़बड़ कर रहे हो। मैंने अभी बताया था न कि तुम्हारा दिल और मेरा हार्ट अलग-अलग आइटम है।'
मैंने सहमति में सिर हिलाया। वे बोले, 'अब यह भी समझ लो कि तुम्हारा कनेक्शन टूटना और मेडिकल कनेक्शन फेल्योर अलग-अलग चीज़ है। वैसे ही तुम्हारा मेंटल आदमी शायर-वायर बन जाता है। जबकि मेडिकली कोई मेंटल हो जाए तो भारी पड़ता है।'
मुझे लगा कि ऐसे तो मैं ही उलझ जाऊंगा। सो मैंने ट्रैक बदला। मैंने कहा, 'कोई बात नहीं डॉक्टर साहब, आप अपने एंगल से बता दीजिए आख़िर दिल क्या-क्या है?'
उन्हें शायद लगा कि मैं अब मेडिकल साइंस में इंटरेस्ट ले रहा हूं। वे बोले, 'डोंट बी सिली, बी सीरियस एंड वेरी केयरफुल फॉर योर हार्ट।'
मुझे लगा दिल को सीरियसली लेने की बात कर रहे हैं। मैंने कहा, 'आप ठीक कहते हैं सर। मैं दिल की बात बड़ी सीरियसली लेता हूं। अपना तो पूरा लिखने-पढ़ने का काम ही दिल की बदौलत चलता है। वैसे मैंने पूरे जीवन यही प्रयास किया कि किसी का दिल न दुखाऊं, पर क्या करूं, कभी-कभी गड़बड़ हो ही जाती है। कभी कोई नाराज़ तो कभी कोई। सभी को ख़ुश रखा भी तो नहीं जा सकता।'
'तुम पूरी बात नहीं सुनते, इसीलिए गड़बड़ होती है। मैं फिर कह रहा हूं हार्ट की केयर करो। दिल का ख़याल रखना और बात है, हार्ट की केयर करना दूसरी। देखो सुबह-शाम वाकिंग किया करो। जंक और ऑयली फूड कम खाया करो। कोलेस्ट्रॉल बढ़ने मत दो और टेंशन मत करो।'
'सर, ये तो उपदेश हो गया। आजकल हर किताब में छपता है। आप तो मुझे बस ये बताएं आख़िर ये हिंदी वाला दिल क्या-क्या है?'
वे बोले, 'देखो हार्ट समझ लो वही बहुत है। दिल समझने के लिए तुम्हें किसी लिटरेचर क्लास में जाना पड़ेगा और अपना भला चाहते हो तो इस दिल तो पागल है दिल दीवाना है जैसे चक्करों से दूर रहो। दिल तो दिल है। इसे किसी भी दिन मचलने मत दो। अगर ग़लती से भी इसने तुम्हारा साथ छोड़ दिया तो बुढापे में बड़ा कष्ट होगा।'
उनकी इस धमकी के बाद मुझे समझते देर नहीं लगी कि दिल आई मीन जो मेरे पास है वह हार्ट है और बड़ी ही नाज़ुक चीज़ है। वह सही सलामत चलता रहे, इसके लिए ज़रूरी है कि बढ़ती उम्र में सेहत के साथ खिलवाड़ न किया जाए और जीवन में किसी भी भावनात्मक पंगे से बचा जाए। ■

कहानी

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

मेला

छोटे-छोटे बच्चों का हाथ पकड़े परिवार के परिवार घूम रहे थे और जीवन के हर रंग का आनंद उठा रहे थे. वे जब पांच रुपए का गुब्बारा या सात रुपए की पिपिहरी भी ख़रीदते, तो रुपए-दो रुपए का मोलभाव कर लेते. इसके बाद छोटे-छोटे खिलौनों को बच्चों को सौंपते हुए अजीब-सी तृप्ति की अनुभूति होती उन्हें. बच्चे भी खिलौने पाकर ऐसे ख़ुश होते, जैसे उन्हें मुंहमांगी मुराद मिल गई हो. कितना फ़र्क़ है, इस मेले और शॉपिंग मॉल की भीड़ में, जहां ५०% डिस्काउंट के बाद भी सामान ख़रीदने का कोई सुख नहीं है.

अपने कंप्यूटर के पिक्चर-फोल्डर में क़ैद तस्वीरों को वो ध्यान से देखने लगा. शिमला टूर के बर्फ़ से भरे पहाड़ थे, तो जैसलमेर के रेत भरे छोटे-छोटे टीले. इस फोल्डर में एक तरफ़ मनाली की ख़ूबसूरत वादियां क़ैद थीं, तो दूसरी तरफ़ गोवा के समुद्र तट पर अठखेलियां करती ज़िंदगी की रंगीनियां. एक-एक तस्वीर कहीं न कहीं संपन्न जीवनशैली की गवाह थी. फिर भी जब उन तस्वीरों को ध्यान से देखते, तो लगता सब कुछ होने के बाद भी इनमें सूनापन है.

आदमी की भूख को ख़ूबसूरत नज़ारों, फ़ाइव स्टार होटल के टेबल पर सजे खाने या जीवन की रंगीनियों से नहीं मिटाया जा सकता. सच तो यह है कि आदमी क्या चाहता है, यह वह भी नहीं जानता.

उसने कंप्यूटर बंद कर दिया. उसे एहसास हुआ कि यह खिलौना अब उसे ख़ुशी देने में नाकाम है. बारह घंटे की ड्यूटी में कम से कम सात-आठ घंटे तो वह इस कंप्यूटर से चिपका रहता है. अचानक उसने सोचा, क्या हमारा जीवन आज इतना एकाकी हो गया है कि हमें बातचीत करने के लिए भी अजनबियों की ज़रूरत पड़े?

उसने बैठे-बैठे ही रिवॉल्विंग चेयर पर अंगड़ाई ली और चेंबर के बाहर झांका, तो देखा रामदीन सिर झुकाए खड़ा था.

ओह, तो क्या सात बज गए और घर चलने का समय हो गया? रामदीन का नियम था कि वह सात बजे गाड़ी लगाकर साहब के केबिन के सामने बैठ जाता. कहता कुछ नहीं और शिखर समझ जाता कि काम ख़त्म होने से रहा, अब चलना चाहिए. हां, ज़्यादा ही ज़रूरी होता, तो वह रामदीन को कह देता कि आप घर निकल जाइए, आज मैं ख़ुद ही ड्राइव कर लूंगा, लेकिन ऐसा कभी हुआ नहीं कि रामदीन ने

मेला

शिखर को अकेला छोड़ा हो. वह कहता, ''साहब मुझे भी जल्दी घर जाकर क्या करना है?'' और उसका यह जवाब सुन शिखर मुस्कुरा देता.

शिखर रामदीन से इतने दिनों में काफ़ी घुल-मिल गया था. अचानक शिखर ने रामदीन को इशारा किया, नियम के अनुसार रामदीन ने शीशे का दरवाज़ा खोला, ब्रीफकेस में लंच बॉक्स रखा और एक हाथ में पानी की बोतल और दूसरे हाथ में ब्रीफकेस उठाकर चल पड़ा. इससे पहले कि रामदीन बाहर निकलता, शिखर ने कहा, ''रामदीन क्या आज तुम मुझे कोई नई जगह घुमा सकते हो?'' रामदीन सोच में पड़ गया, ''साहब, इस शहर का कोई भी होटल, शॉपिंग मॉल या क्लब आपसे छूटा नहीं है.''

''तभी तो तुमसे कह रहा हूं कि क्या कोई नई जगह दिखा सकते हो? ऐसी जगह जहां ज़िंदगी सांस लेती हो, क्योंकि होटल हो या शॉपिंग माल, ये सारी जगहें बेजान मशीन की तरह हो गई हैं. इनमें एक-सा स्वाद है. रहे क्लब्स, तो वो भी बस दिखावट के अड्डे भर रह गए हैं. रामदीन तुम उम्र में मुझसे बड़े हो, क्या तुम्हारी ज़िंदगी में भी इतनी कम उम्र में सूनापन आ गया था?''

रामदीन ने शिखर की आंखों में छुपे दर्द को पढ़ लिया था. बोला, ''साहब बड़ी बातें मेरी समझ में नहीं आतीं. हां, आप कुछ अलग देखना चाहें, तो एक जगह है, पर वह आपके स्टैंडर्ड की नहीं है. वहां हम जैसे लोग ही जाते हैं.''

शिखर सोच में पड़ गया. फिर बोला, ''कोई बात नहीं, तुम बताओ तो सही. यह छोटा-बड़ा कुछ नहीं होता.''

रामदीन का साहस थोड़ा बढ़ा. बोला, ''साहब शहर के बाहर रामलीला ग्राउंड में मेला लगा है. आप कहें तो घुमा लाऊं, लेकिन अकेले नहीं. आप मेमसाब को भी लेंगे, तभी घूमने का मज़ा आएगा.''

शिखर मेले के नाम से ही जैसे खो-सा गया. मेले में चर्खी वाला झूला, टोपी से फूल निकालने वाला जादूगर, गुड़ की मिठाइयां... हा हा... वह ज़ोर से हंसा. कितने मेले तो देखे हैं उसने बचपन में. उसके घर के बगल में ही तो था मेला ग्राउंड और गर्मी की छुट्टियों में शाम होते ही जैसे कोई ताक़त उसे मैदान की तरफ़ खींचना शुरू कर देती और जब टिकट के पैसे न होते, तो वह मेले के बाहर ही खड़ा होकर भीतर के नज़ारों को महसूस करता.

शिखर को चुप देखकर रामदीन बोला, ''साहब घर चलिए. वो तो मैंने ऐसे ही कह दिया था. मेला भी कोई घूमने की चीज़ है आज के ज़माने में.''

शिखर गंभीर होते हुए बोला, ''रामदीन सचमुच मेला इस ज़माने में भी देखने की चीज़ है. रुको, मैं फ़ोन कर देता हूं घर पर और आज मेला देखने ही चलते हैं.''

''हैलो, हैलो... सुनो, तैयार हो जाओ, आधे घंटे में पहुंच रहा हूं. आज हम लोग अनोखी जगह घूमने जा रहे हैं और हां, सिंपल कपड़े ही पहनना. क्रेडिट कार्ड और पर्स की ज़रूरत नहीं है. बस, थोड़े पैसे रख लेना, काम चल जाएगा.''

''पहेलियां मत बुझाओ शिखर, ये बताओ हम जा कहां रहे हैं?'' उधर से श्रुति की आवाज़ सुनाई दी. शिखर ने मुस्कुराते हुए कहा, ''आज मैं तुम्हें मेला दिखाने ले जा रहा हूं.''

''तुम भी कमाल करते हो शिखर. अब इस उम्र में मुझे मेला दिखाने ले जाओगे.''

''कहते हैं ज़िंदगी ही एक मेला है, तो इस उम्र में मेला देखने में हर्ज़ क्या है?''

शिखर जब घर के दरवाज़े पर पहुंचा, तो गाड़ी का हॉर्न सुन श्रुति को बाहर निकलते देख चौंक गया. वह एक साधारण-सी सूती साड़ी में अत्यंत सौम्य लग रही थी. उसका यह रूप देख शिखर मुस्कुराए बिना न रह सका.

''क्या भाई, आज मेरी चाय भी मारी गई इस मेले के चक्कर में...?'' कहते हुए शिखर ने कार का दरवाज़ा खोल दिया और भीतर एक हल्की हंसी गूंज उठी.

अब तक रामदीन को जोश आ चुका था. ''साहब आज चाय मैं पिलाऊंगा मुखिया ढाबे की. आप और मेमसाब बस बैठे रहना, मैं गाड़ी में ही ले आऊंगा.'' नोक-झोंक में पता ही न चला कि कब हाई वे छोड़ कस्बे का टर्न आ गया और जब कस्बे के मोड़ पर गाड़ी रुकी तो रामदीन चाय लेने चला गया.

''साहब कहते हैं जिसने मुखिया के ढाबे की चाय नहीं पी, समझो उसने कुछ नहीं पिया.''

शिखर ने चाय ले ली और एक कुल्हड़ श्रुति की ओर बढ़ाते हुए जैसे ही पैसे के लिए पर्स निकाला, रामदीन बोला, ''साहब यह चाय हमारी तरफ़ से. आप हमारे मेहमान हैं.''

शिखर की लाख कोशिशों के बाद भी रामदीन ने चाय के पैसे नहीं लिये. चाय वाकई

मेला

लाजवाब थी और मिट्टी के बर्तन में होने के कारण एक सोंधी ख़ुश्बू उसमें से उठ रही थी, जो भीतर तक शिखर को तरोताज़ा कर गई. रामदीन ने गाड़ी आगे बढ़ाई और दस मिनट में कस्बे के रामलीला ग्राउंड के सामने लाकर रोक दी.

देखकर ही पता चल रहा था कि यह आम आदमी की जगह है. लोगों की अच्छी-ख़ासी तादाद थी, लेकिन उम्मीद के विपरीत धक्का-मुक्की और अव्यवस्था कहीं नहीं थी.

छोटे-छोटे बच्चों का हाथ पकड़े परिवार के परिवार घूम रहे थे और जीवन के हर रंग का आनंद उठा रहे थे. वे जब पांच रुपए का गुब्बारा या सात रुपए की पिपिहरी भी ख़रीदते, तो रुपए-दो रुपए का मोलभाव कर लेते. इसके बाद छोटे-छोटे खिलौनों को बच्चों को सौंपते हुए अजीब-सी तृप्ति की अनुभूति होती उन्हें. बच्चे भी खिलौने पाकर ऐसे ख़ुश होते, जैसे उन्हें मुंहमांगी मुराद मिल गई हो.

कितना फ़र्क़ है इस मेले और शॉपिंग मॉल की भीड़ में, जहां ५०% डिस्काउंट के बाद भी सामान ख़रीदने का कोई सुख नहीं है.

अचानक शिखर ने श्रुति का हाथ पकड़ा, तो वह तंद्रा से जागी, ''छोड़ो भी, कोई देख लेगा तो क्या कहेगा?'' श्रुति ने हाथ छुड़ाते हुए कहा.

शिखर हंसने लगा. ''यहां हमें जानने वाला कौन है? चलो झूला झूलते हैं.''

ज़ोर से हंसी श्रुति, ''और तुम्हें चक्कर आ गया तो?'' ''ओह! मैं तो भूल ही गया था कि मुझे झूले में चक्कर आता है. अरे यहां क्या है?'' वो श्रुति का हाथ पकड़ एक रिंग की स्टॉल की ओर बढ़ते हुए बोला, ''सुनो भैया, एक तरफ़ इनका और दूसरी तरफ़ मेरा नाम लिख दो.''

दुकानदार ने पूछा, ''जी क्या नाम लिखूं?''

तभी एक आवाज़ सुनाई पड़ी, ''क्यों रे कलुआ, तू हमारी मेमसाब को नहीं जानता? लिख श्रुति मेमसाब और बड़े साहब.''

अपना नाम सुनकर श्रुति चौंकी. पीछे देखा तो उसकी कामवाली खड़ी थी. ''अरे तेरी तो तबियत ख़राब थी और तू यहां मेले में घूम रही है?'' श्रुति ने उसे डांटते हुए कहा.

''सारी मेमसाब. हमें क्या पता था कि आप मेले में मिल जाएंगी. अब से ऐसी ग़लती नहीं होगी.''

श्रुति ने हंसते हुए पर्स से पचास रुपए निकाले और देते हुए बोली, ''ले रख इसे और जाकर मेला घूम.''

उधर देखा, तो शिखर अपने और श्रुति के नामवाली रिंग बनवा बेहद ख़ुश था. देखते-देखते श्रुति ने भी मेले से ढेर सारी चीज़ें ख़रीद डालीं. रोज़मर्रा के सस्ते बर्तन, चूड़ी-बिंदी और न जाने क्या-क्या?

शिखर भी मेले के रंग में पूरी तरह डूब चुका था. वो कभी एयर गन से निशाना लगाता, तो कभी बॉल से ग्लास गिराने की कोशिश करता. भरपूर ख़रीददारी के बाद भी देखा, तो ख़र्च सिर्फ़ सात या आठ सौ रुपए हुए थे, जितने में शायद एक ब्रांडेड शर्ट ही आती.

एक-दो घंटा घूम कर जब वे दोनों मेले से बाहर निकले, तो रोज़मर्रा के तनाव से बहुत दूर जा चुके थे. क्या नहीं देखा था उन्होंने मेले में... बोलने वाले सांप से लेकर ताश के जादू तक. भीतर जाने पर सांप के पिंजरे पर लिखा था,''यह अपनी ज़ुबान में बोलता है, आप उसकी ज़ुबान जानते हैं, तो समझ सकते हैं.'' वहीं जादूगर कहता, ''साहब, सब नज़र का फेर है. पकड़ने वाले को पांच सौ का नगद इनाम और फिर बातों में ऐसे उलझाता कि हाथ की सफ़ाई कोई पकड़ ही नहीं पाता.

जब वे गाड़ी में बैठे, तो सोचने लगे कि हम अपनी सरल ज़िंदगी को दिखावे के चक्कर में कितना भारी बना लेते हैं. पूरी गाड़ी छोटे-छोटे सामानों से भर गई और रामदीन दोनों की ख़ुशी देखकर गदगद हुए जा रहा था. अगली सुबह संडे था और जब शिखर बरामदे में आया, तो देख कर हैरान रह गया कि श्रुति कल के लाए सामानों को आसपास छोटा-मोटा काम करनेवालों में बांट रही थी. किसी को खिलौना देती, तो किसी को चूड़ी-बिंदी. वह एक-एक चेहरे की ख़ुशी देखती और निहाल हो जाती. सच है, जो सुख बांटने में है, वह संग्रह करने में नहीं और जब उसने पीला कुर्ता रामदीन की ओर बढ़ाया, तो उसकी आंखें छलक आईं.

''जुग-जुग जीयो बेटी, भगवान तुम्हें लंबी उमर दे.'' भर्राये गले से रामदीन बोला. उसे पहली बार एहसास हुआ कि वह केवल ड्राइवर भर नहीं, इस घर के किसी सदस्य की तरह है.

और फिर बोला, ''बेटा, तुमने आज मेले के सही अर्थ को समझा है, यदि बाहरी मेले से हम हृदय में उमंग और ख़ुशी के असली मेले को जगा सकें, तो समझो घूमना-फिरना सफल हो गया, वरना पहाड़ पर घूम आओ या शॉपिंग माल में, सब निरर्थक है.'' और अब शिखर रामदीन की सरल भाषा में कही हुई बात का ज़िंदगी के मेले के संदर्भ में गूढ़ अर्थ ढूंढ़ने लगा था.

हाय रे एक छुट्टी

कुछ लोग वक़्त-ज़रूरत पर छुट्टी लेते हैं तो कुछ मौज-मज़े के लिए। कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो बात-बेबात छुट्टी लेते रहते हैं और कुछ ऐसे भी जो ले ही नहीं पाते। ऐसे लोगों के लिए मुसीबत छुट्टी के आगे-आगे चलती है।

आपसे क्या बताएं कि इस ज़माने में एक छुट्टी कितनी क़ीमती है! यही नहीं, जब खुद को छुट्टी न मिले, दूसरों को छुट्टी लेकर ऐश करते देख कितनी कोफ्त होती है! छुट्टी से बड़ी बात है इसे लेने का हुनर। जो जानते हैं, वे चाहे जितनी लें और जो नहीं जानते, उनकी सीएल तक लैप्स हो जाती है। तब तो कोफ़्त और बढ़ जाती है, जब श्रीमती जी बताएं कि कैसे मेहरा जी बची छुट्टियों में संडे जोड़ सपरिवार सात दिन टूर के बाद आठवें दिन आराम कर नेक्स्ट मंडे ऑफिस गए।

पटोले के साथ यही हुआ। मेहरा के सुख से वह नितांत दुखी था, तभी एक दिन श्रीमती जी बोलीं, 'सुनो जी, क़ल की छुट्टी ले लेना। मुझे किटी पार्टी में जाना है।'

पटोले को लगा, हर हाल में उसे छुट्टी मैनेज करनी ही है। सुबह पहुंचते ही उसने बॉस को बड़े प्यार से नमस्ते की और काम में जुट गया। थोड़ी देर में दो चाय मंगा कर एक क्लैरिफिकेशन के बहाने बॉस को अपनी सीट पर बुला लिया। जैसे ही बॉस ने चाय का घूंट भरा, पटोले ने बात छेड़ी, 'सर कल एक ज़रूरी काम था। आप कहें तो...'

इससे पहले कि पटोले 'छुट्टी' शब्द भी बोल पाता, बॉस बोला, 'पटोले छुट्टी छोड़ के कुछ भी मांग लो, मैं दे दूंगा।'

वह समझ तो गया कि बॉस बड़ा घाघ है और वह खुद अभी मेहरा की तरह एक्सपर्ट नहीं हुआ। उसे लगा कि वह फंस गया है। छुट्टी न ली तो घर से छुट्टी और ले ली तो बॉस खा जाएगा। उसने सोचा, सांप भी मारना है और लाठी भी नहीं तोड़नी। फ़ैसला कर लिया कि इस बार बीमारी के हिट फॉर्म्युले का प्रयोग करेगा। शाम होते-होते शक्ल पर पूरे बारह बजाते हुए बॉस के आगे बैठ गया। देखते ही बॉस समझ गया। बोला, 'आओ-आओ पटोले क्या हुआ? बड़े सुस्त दिख रहे हो।'

'हां सर! तबीयत भारी हो रही है। लगता है, सर्दी लग गई है। सिरदर्द हो रहा है।'

'हां, हो जाता है। मौसम का असर है,' बॉस ने सिंपैथी दिखाई और तुरंत ड्रार से तीन टैब्लेट देते हुए बोला, 'ये रख लो। एक अभी खा लेना, एक रात में और एक कल सुबह खाकर ऑफिस आ जाना।'

उधर घर पहुंचते ही श्रीमती जी ने पूछा, 'क्यों जी, कल की छुट्टी पक्की है ना?'

'अ आं हां,' जैसे कुछ शब्द बोलता पटोले कपड़े बदलने चला गया।

'क्या हुआ, तुम साफ़ बोलते क्यों नहीं? बॉस से कहा ही नहीं होगा तुमने। पता नहीं कहां जाती हैं तुम्हारी छुट्टियां!'

पटोले के बर्दाश्त के बाहर हो गया, 'सुनो कैसा भी पहाड़ टूटे, मैं ऑफिस नहीं जा रहा। कल मैं बीमार हो रहा हूं, समझी!'

अब श्रीमती जी ने बहुत प्यार से देखा, 'हाय तुम सच में छुट्टी ले आए? मेरी किटी की अहमियत समझी। देखना, कल मिसेज़ मेहरा को न चिढ़ाया तो कहना! वो क्या समझती है, उसके पति को ही छुट्टी लेनी आती है?'

ख़ैर, रात कटी, सुबह हुई और 11 बजते ही मोबाइल की रिंगटोन घनघना उठी। बॉस का नाम चमक रहा था। पटोले फ़ोन लेकर श्रीमती जी की ओर भागा, 'ज़रा बॉस को बोल दो कि मैं सो रहा हूं। कल से तेज़ बुख़ार है, बदन जल रहा है।'

श्रीमती जी ने नमस्ते के साथ वही वाक्य

दुहरा दिए और अपनी तरफ़ से जोड़ दिया, 'भाई साहब क्या बताएं, कितना समझाती हूं कि ध्यान रखा करो, पर ये ऑफिस के आगे कुछ सोचते ही नहीं।'

बॉस ने कहा, 'कोई बात नहीं, उन्हें आराम करने दीजिए। उठें तो बात करा दीजिएगा।'

पटोले को तसल्ली मिली कि फॉर्म्युला काम कर गया। श्रीमती जी किटी में चली गईं तो पटोले ने सोचा कि इस दो-तीन घंटे को खूब मस्ती से जी ले, पर होनी को कुछ और मंजूर था। खुशी सेलब्रेट भी नहीं कर पाया था कि टोन फिर बजी। मोबाइल उठाया तो बॉस ने छूटते ही बोला, 'तो पटोले तुम आख़िर आज बीमार हो ही गए। क्या हुआ है तुम्हें?'

'अ अ... कुछ नहीं सर, वो कल सर्दी लग गई थी, बुख़ार आ गया।'

'मैंने कल गोली दी थी, खाई नहीं क्या?'

'सर मैं खाने ही चला कि देखा एक्सपायरी डेट निकल चुकी है। मैं डर गया कहीं रिएक्शन कर गई तो क्या करूंगा?'

सुनते ही बॉस का रंग बदल गया, 'ओह, डोंट वरी, आराम करो और हां ये गली के डॉक्टर का चक्कर छोड़ो। मैं आ रहा हूं, मल्टीसिटी में दिखा दूंगा तुम्हें।'

'अरे सर, आप क्यों तकलीफ़ करेंगे?'

'तकलीफ़ कैसी यार! यह तो हमारा फ़र्ज़ है।'

पटोले की सांस अटक गई। इससे अच्छा था साफ़ बता देता कि छुट्टी नहीं मिली तो शायद आफ़त न आती। दिमाग़ ने काम करना बंद कर दिया। श्रीमती जी को मोबाइल लगाया तो उन्होंने उठाया नहीं। तभी कॉलबेल बजी। काम वाली खड़ी थी। पटोले की आंखें चमक गईं, 'आ जाओ।'

'साहब, आप कैसे? मेम साहिब कहां है?'

'सुन कमला,' पटोले ने हाथ जोड़ते हुए कहा, 'देख, मेरी एक मदद कर दे और हां जो कह रहा हूं वो करेगी तो तुझे सौ रुपये दूंगा।'

पहले तो उसने शंकित नेत्रों से देखा पर जब पटोले की हवाइयां उड़ती देखीं तो उसे लगा ज़रूर मामला सीरियस है। बोली, 'बोलो साहेब, क्या काम करना है?'

'कमला बस थोड़ी देर के लिए तू ये साड़ी डाल ले। मेरे साहब आने वाले हैं। तू बस हल्का सा परदा करके ये ट्रे उनके सामने रख कर नमस्ते बोल के चली जाना और हां, जितने लोग हों, उतनी चाय बना देना बस।'

पटोले ने सौ का नोट निकाला और हाथ जोड़ के खड़ा हो गया। इधर साहब के आने का खटका हुआ, उधर वह कंबल ओढ़ बेड पर पड़ गया। कॉलबेल बजते ही कमला ने दरवाज़ा खोला, नमस्ते किया। पटोले कांखता हुआ बिस्तर से उठा और ड्राइंग रूम में किसी तरह रोनी सूरत लेकर बैठ गया।

बॉस सिर पर हाथ रखते हुए बोला, 'ओह पटोले सचमुच तुम्हें तो हरारत है। कहो तो मल्टीसिटी में दिखा दूं, गाड़ी है मेरे पास।'

पटोले खांसते हुए बोला, 'थैंक्स सर, ज़्यादा नहीं है, कुछ आराम लग रहा है। कल तक ठीक हो जाऊंगा।' तभी कमला ने ट्रे में सेट सामान लाकर टेबल पर रख दिया।

'पटोले ख़याल रखा करो। ख़ैर, अब तैयार हो जाओ, तुम्हें दिखाने ले चलता हूं।'

'ओह सर, आप कुछ लीजिए तो!'

बॉस के साथ उसका पीए भी था जो फटाफट नमकीन बिस्किट पर हाथ साफ़ कर रहा था। तभी पटोले को सूझा, 'सर अभी मैं बेहतर फील कर रहा हूं। आज भी आराम नहीं मिला तो कल ज़रूर दिखाएंगे मल्टीसिटी में।'

'दैट्स गुड, आई वांट टु सी यू फिट,' बॉस ने चाय सुड़कते हुए कहा। बॉस को बाय कह कर पटोले कमरे में बैठा ही था कि कॉलबेल फिर बजी। सामने श्रीमती जी खड़ी थीं। वह चौंका, 'तुम, तुम तो तीन बजे आने वाली थी न, अभी कैसे?'

उनका पारा तुरंत चढ़ गया, 'मेरा घर है, कभी आऊं, कभी जाऊं। ऐसे क्यों चौंक रहे हो?'

तभी पीछे खड़ी कमला पर नज़र पड़ी, 'अरे कमला तू आज कैसे? तुझे तो मैंने कल ही बताया था कि आज काम नहीं है। मैं घर में नहीं रहूंगी, फिर यहां कैसे?'

'वो मेमसाहिब मैंने सोचा क्या पता आप घर पर हों, तो देख लूं।'

'तुझसे तो बाद में निपट लूंगी। पहले इनसे तो निपट लूं,' श्रीमती जी के तेवर देखते ही पटोले का गला सूख गया।

'वो क्या है कि बॉस का फ़ोन आ गया कि वो पहुंच रहे हैं मुझे देखने तो ...'

'अरे चुप करो, झूठ की भी हद होती है। बॉस को क्या पड़ी कि तुम्हें देखने आ जाएं?'

'मेम साहिब आप सुनो तो सही...' कमला ने समझाने की कोशिश की, पर श्रीमती जी ने डांट दिया, 'तू चुप कर, तुझसे कुछ नहीं कहना। यहां तो अपना सिक्का ही खोटा है।'

पटोले ने फिर समझाना चाहा, 'तुम बात को ग़लत डायरेक्शन में ले जा रही हो। भरोसा करो। अभी बॉस यहां से होकर गए हैं।'

'अच्छा जी, मुझे इतना बेवकूफ़ समझा है कि जो तुम कहोगे मैं आंख बंद करके मान लूंगी और जो दिखाई दे रहा है, वह सब झूठ है।'

मामला अंतहीन चलता कि अचानक एक नई रिंगटोन सुनाई दी। पटोले की जान में जान आई, टोन पहचानी हुई थी बॉस के मोबाइल की। वह लपका साहब का मोबाइल बज रह था। पटोले ने उठाया, 'हलो!'

'कौन?' उधर से आवाज़ आई।

'ओह सर, आपका मोबाइल मेरे घर ही छूट गया है। मैं पटोले बोल रहा हूं।'

'ओह पटोले थैंक्स, अच्छा हुआ मोबाइल तुम्हारे पास छूटा। वरना मुझे लगा कि आज तो मेरा प्यारा मोबाइल गया हाथ से।'

पटोले ने मोबाइल को गले से लगाया। वाक़ई बहुत लकी मोबाइल है। ये न होता तो आज जाने क्या होता। उसने श्रीमती जी को देखा जैसे अपनी बेगुनाही का सबूत दिखा रहा हो, 'अब तो भरोसा हो गया न मेरा कि बॉस आए थे और यह उनका ही मोबाइल है।'

श्रीमती जी ने ग़ुस्सा कम करते हुए कहा, 'तुम जैसे आदमी पर भरोसा-वरोसा क्या होगा। हां, बॉस का मोबाइल घर पर छूटा है तो ठीक है। संभाल कर रखो। कल वापस कर देना।'

पटोले को लगा कि जान बची और लाखों पाए। ऐसी छुट्टी से तो बेहतर था कि ... ✦

ज्ञान की बातें

जब तक मेरी शादी नहीं हुई, मैं जानता ही नहीं था कि खुशी क्या चीज होती है... लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

केवल जानें, आजमाएं नहीं।

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

पेशे से इंजीनियर मुरली मनोहर श्रीवास्तव वैज्ञानिक दृष्टिसंपन्न तो हैं ही। साहित्यिक स्वभाव के साथ वैज्ञानिक नजरिये का तालमेल उन्हें व्यंग्य के लिए एक अलग धार देता है। एक किताब 'सत्य जीतता है' के अलावा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कई रचनाएं प्रकाशित।

एनटीपीसी NTPC

न्यूजपेपर का नाम :

Name of the Newspaper:

नेशनल दुनिया

शुक्रवार • 09 अगस्त 2013

प्रेस क्लिपिंग्स

दिनाक / Date -

कविता

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

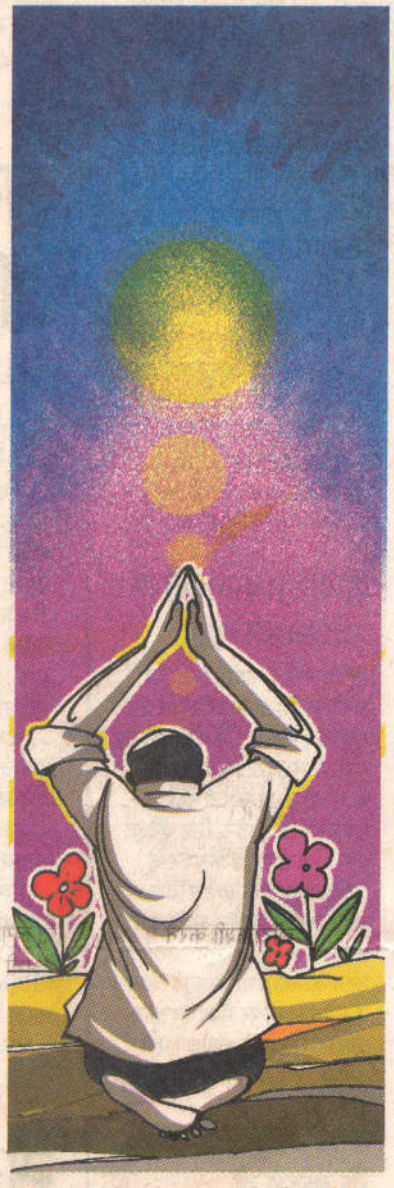

वरदान

हे प्रभु तुम्हारे द्वारा
नित दी जा रही नई चुनौतियां
और मुझे दर्द की कसौटी पर कसने का सिलसिला

हर बार मुझे पीड़ा के बाद
अहसास दिलाता है कि
तुमने मुझे
बस
ऐसे ही सरल जीवन दे कर नहीं भेजा है

और जैसे जैसे मैं जीवन में कष्ट के रहस्यवाद को
समझने की कोशिस करता हूं
तुम मुस्कराते हो
और तब मुझे लगता है
तुम मुझे बार बार दर्द की कसौटी पर
यह देखने के लिए परखते हो कि
कहीं जीवन जीने के लिये
तुम्हारी दी हुई अनेक क्षमताएं कम तो नहीं हो गयी हैं

हर बार कुछ विचित्र और अनोखा
दर्द से निकल कर बाहर आता है
जीवन जीने की नई प्रेरणा और रास्ता बन कर
और जब तुम्हारे शब्द
भीतर से बाहर आते हैं तो दर्द पिघलता है
यह अहसास दिलाने के लिए
कि तुम्हारा मिलना जिस प्रक्रिया से होकर गुजरता है
वह दर्द पीड़ा कैसे हो सकता है

और जब उस दर्द में
पीड़ा नहीं आनंद का अहसास जागता है
तब तुम
पुनः मुस्कराते हो
इसलिये कि
यही तो तुम चाहते थे कि

तुम पीड़ा और आनंद के अंतर को मिटा कर
उस बिंदु पर खड़े हो जाओ
जहां जीवन के सब भेद समाप्त होते हैं
मैं न पीड़ा का सृजनकर्ता हूं और न आनंद का

मैं भावना, संवेदना और इंद्रियों से परे जाकर ही
तो अनुभूत हो सकूंगा
यदि तुम पीड़ा और आनंद के बीच उलझ गये
तो मुझे कैसे जान सकोगे

और तुम्हारी इस मुस्कान के पीछे
छुपे ज्ञान के रहस्य को जान मैं
स्वयं को कृत कृत्य पाता हूं
तब मुझे गहन पीड़ा
वरदान प्रतीत होती है
वह पीड़ा परमानंद नहीं तो और क्या है
जो मुझे तुमसे मिला देती है

बुरा न मानो होली है

होली का कन्फ्यूजन

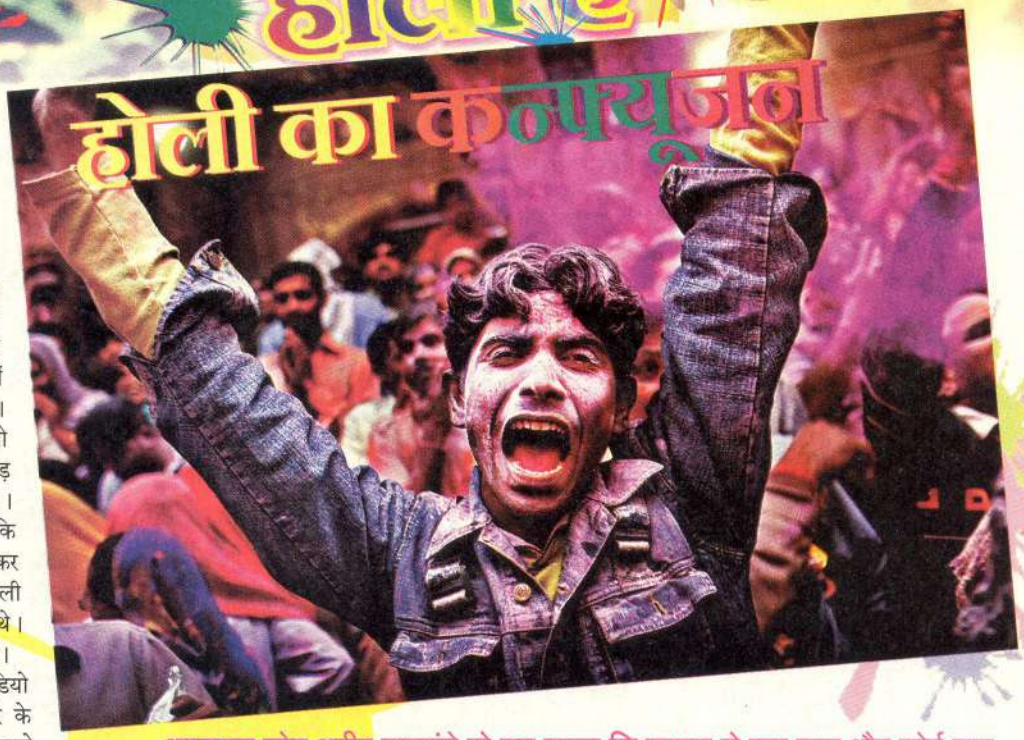

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

भाई साहब आपसे क्या बताएं ये होली तो बस ऐसे लगती है जैसे किसी ने धक्का दे दिया हो कि जा भैया पूरी सर्दी नहीं नहाए थे सो अब नहा लो । आजकल लोग रंग भी लगाते हैं तो ध्यान रखते हैं कि कहीं शर्ट पर न पड़ जाए या फिर गाल न गंदे हो जाएं। अबीर लगाएंगे तो बस इतना कि रुमाल से झड़ जाए और कोई मना कर दे तो ऐसे सहम जाएंगे जैसे होली खेलने नहीं, कोई खून करने जा रहे थे।

अमां यार यह भी कोई होली है ।

उधर टीवी वाले बेमतलब स्टूडियो में दो-चार कलाकार मेकअप कर के बिठा देते हैं और बैक ग्राउंड में चिल्लाते हैं – सा रा रा रा... । कभी गुझिया की ट्रे दिखाते हैं तो कभी पापड़ । कभी सफेद बुर्राक कुर्ते पर दो-चार छींटे हरे-पीले और लाल रंग के डाल देते हैं । साथ में बड़ी सी पिचकारी लिए कोई बंदा खड़ा करके शो करते हैं, होली चल रही है जबकि कपड़े देख कर साफ लगता है किसी डिजायनर से होली स्पेशल शो के लिए डिजाइन कराया गया है ।

उधर गवैए और नाच-गाने वाले भी किसी डांस इंडिया डांस या सा रे गा मा पा वाले शो से बुला लिए जाते हैं जो होली के नाच-गाने और फिल्मी लटके-झटके में कोई फर्क ही नहीं समझते, जहां सिर हिलाना चाहिए वहां कमर मटकाते हैं और जहां नैन लड़ जैहें में ठुमका लगाना चाहिए वहां सालसा दिखाते हैं । कुछ चैनेल वाले लाइव के नाम पर बरसाने की होली या फिर वृंदावन की कुंज गली का नजारा पेश करने का दावा करते हैं लेकिन उसमें फिल्म और ग्लैमर का तड़का लगाने के लिए अपने स्टूडियो में एडिट कर मजा किरकिरा कर देते हैं । यही हाल आजकल चुटकुलेबाजों का हो गया है, बासी और पुराने चुटकुले कुछ फुलझड़ी, कुछ फुहार होली के नाम पर ठेल दो, पकड़े गए तो गिरगिट की तरह रंग बदल लेंगे । गुझिया-पापड़ का आलम यह है कि किसी के सामने रखने पर डर लगता है कि कहीं असली खोया और देसी घी का माल खाकर इसकी तबीयत न खराब हो जाए । आजकल कोलेस्ट्रॉल वालों ने इतना डरा रखा है कि अच्छी सेहत वाला भी मिठाई और पापड़ बस चख कर रख देता है । पूए-पकवान, कटहल की सब्जी-पूरी और दही बड़ा तो भूल ही जाइए । ऐसे में कुल मिला कर मुझे आजकल होली नहीं, होली का कन्फ्यूजन होता है । अरे होली तो वह होती थी और होती है कि जहां सोचने और बुरा मानने के लिए जगह ही न हो । एक हमारे जमाने में होली का तगड़ा इंतजार रहता था, आजकल की तरह नहीं कि भैया किसी तरह यह त्योहार कट जाए। हमें पता रहता था कि होली वाले दिन हमारी असली आजादी है । सुबह से शाम तक न कोई पूछने वाला और न पहचानने वाला । रंग का आलम यह कि जान न पहचान किसी पर डाल दो और बोलो बुरा न मानो होली है । सड़क पर डंडा लगा कर चंदा उगाहो और होली जलाओ । किसी की टोपी उड़ा दो, किसी का गमछा । कहीं धागे में सिक्का बांधकर सड़क पर रख दो और उठाने वाले का हाथ आते ही उसे सरका दो जब तक उसे ठिठोली का पता चले तब तक बात मुहल्ले में आम हो जाती कि भैया फलाने का जुलूस निकल गया । झुका भी तो एक चवन्नी के लिए ।

आजकल लोग अबीर लगाएंगे तो बस इतना कि रुमाल से झड़ जाए और कोई मना कर दे तो ऐसे सहम जाएंगे जैसे होली खेलने नहीं कोई खून करने जा रहे थे

उसके बाद लाउडस्पीकर पर नॉनस्टाप कई-कई दिन तक बजते गाने और उस पर गली-गली, मुहल्ले-मुहल्ले बेधड़क नाचते नचैए, क्या किसी कृष्ण-कन्हैया से कम नजर आते ! सुबह का खुमार उतरता नहीं कि शाम और रात का चढ़ जाता और रंग ऐसा कि हफ्ते से पहले अगर किसी की शक्ल साफ दिख गई तो लानत है । इसके बाद उमंग का जो रंग चढ़ता वह पिछले सालो साल के मलाल भुला देता । मजाल है कि कोई दुश्मनी साल भर चले या पुराने से पुरानी रंजिश अगर होली में न मिटी तो त्योहार का अर्थ ही क्या । कोई भाई किसी भाई से कितना भी दूर क्यों न हो होली के दिन दिल जरूर मिल जाता । आज भाई-भाई पास रहकर भी दिल नहीं मिला पाते । और फिर शुरू होता होली मिलन समारोह जो शाम होते ही कनात में ठंडाई के साथ गुझिया-पापड़ और गुलाल के साथ रंग जमाता । इस मौके पर जो पुराने जमे कलाकार होते वे तो माइक तोड़ते ही, नई पीढ़ी भी हास्य के रंग से माइक फोड़ने से बाज नहीं आती । इस मौके पर उम्र का भेदभाव तो जैसे तिरोहित ही हो जाता । अब भी दिल न भरा हो तो जवाबी कव्वाली की चैला फाड़ कव्वाली की रात बाकी है, जाइए और जीवन का लुत्फ उठाइए ।

जिन्हें लगता हो कि होली फूहड़ त्योहार है उनके लिए बता दूं कि इलाहाबाद में हर होली पर महालंठ सम्मेलन की प्रथा है जहां सभी सम्मानित इंटिलेक्चुअल सादर आमंत्रित हैं । विश्वविद्यालय के कुलपति से लेकर लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकार तक और जिसे महालंठ का सम्मान मिलता है वह स्वयं को साल भर तक गौरवान्वित महसूस करता है । हां, विद्वता के साथ जो हास्य और व्यंग्य का स्तर होता है वह टीवी के लाफ्टर से मंजिलों ऊपर होता है । सो भैया इस बनावटी दुनिया से बाहर उठिए, होली होने के कन्फ्यूजन को दूर कीजिए, जीवन में होली के रंग को समझिए और उमंग में खो जाइए ।

murlimanohars@yahoo.com

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

हुजूर कभी तो पद के भार से मुक्त होइए और काम का बोझ उठाइए ताकि आम आदमी का कुछ भला हो

वर्क लोड बनाम पद का भार

आजकल हालात यह है कि जिसे देखिए वह भयंकर बिजी है। किसी से मिलने-जुलने जाने से पहले कई बार सोचना पड़ता है। इतना ही नहीं, टाइम लेकर मिलने चले भी गए तो जरूरी नहीं कि वे मिल पाएंगे। यदि आप किसी के सामने बैठ कर चाय पीने को मिलना-जुलना बोलते हैं तो शायद महीने दो महीने में वह मुलाकात संभव है पर मिलना तो कतई पॉसिबल नहीं है। मैंने देखा है आप मिल रहे हैं और वे मेल चेक कर रहे हैं। आप बोलते रहिए, वे सुनते रहेंगे। बीच बीच में कुछ ऐसे निरर्थक शब्द निकाल देंगे कि आपको लगेगा जैसे आपसे ही बात चल रही है जबकि दिमाग मेल की रिप्लाई (जवाब) देने में लगा होगा।

रेखांकनः मनीष वर्मा

सबसे ज्यादा कष्ट मिलने में तब होता है जब आपके मिलने के समय में किसी मोबाइल कॉलर का अनचाहा प्रवेश हो जाता है। गेट के बाहर तो आप दूसरे को रोक सकते हैं कि भैया पहले वाले के मिलने का प्रोग्राम अभी पूरा नहीं हुआ पर मोबाइल इंटरफियरेंस रोकना बड़ा मुश्किल है। आप मिले पंद्रह मिनट और मोबाइल वाला पी गया बारह मिनट इफेक्टिव मुलाकात बस दो मिनट एक मिनट उठने बैठने और हाथ मिलाने का लगा लीजिए। तब दो मिनट में क्या कहेंगे और क्या पूछेंगे। फिर जवाब वबाब को मारिए गोली अपना दुखड़ा शुरू हो जाएगा यार क्या बताऊं जब से इस सीट पर पहुंचा हूं तब से टाइम ही नहीं मिलता।

आप हां में हां मिलाते हुए कहेंगे, सो तो है वैसे भी इस पोस्ट तक आते-आते वर्क लोड बहुत बढ़ जाता है। और आपके इतना कहते ही उन्हें मुंह मांगी मुराद मिल जाएगी। तुम देखो आज कंपटीशन कितना बढ़ गया है। इस साल बस तीस परसेंट रिजल्ट रहा प्रमोशन का वैसे भी तुम देखो डीजीएम बनना कितना मुश्किल काम है।

इसके बाद जब रहन-सहन हाव-भाव और चाल-चलन देखेंगे या फिर बातचीत का अंदाज तो ऐसा लगेगा पद के भार से महानुभाव कितना दबे हुए हैं। घर से निकलते समय लंच बाक्स से लेकर शर्ट की प्रेस तक और जूते के पॉलिश से लेकर वीआईपी बैग तक हर चीज का मुयायना करेंगे और कहेंगे क्या भाई कुछ तो खयाल रखो मैं डीजीएम हूं कोई देखेगा तो क्या कहेगा। चपरासी अगर साधारण कप में चाय दे गया तो टोकते देर नहीं लगेगी, अरे राम दीन मेरी नहीं तो कुर्सी की इज्जत कर लिया करो। पब्लिक प्लेस में चलेंगे तो कहीं आम आदमी या मजदूरनुमा प्राणी दिख गया तो उससे ऐसे बचने की कोशिश करेंगे जैसे वह किसी और ग्रह का प्राणी हो। वैसे ही सड़क पर पैदल चलना पड़ जाए या बिना ऐसी की गाड़ी में बैठना पड़े तो लगेगा जैसे उनके पद की तौहीन हो रही है। ऐसे लोग पद के प्रति हर समय और हर जगह इतने कॅन्सस रहते हैं कि पूछिए मत शादी-ब्याह या रिश्ते-नाते में जाएंगे तो हर समय वी वी आई पी ट्रीटमेंट की उम्मीद करेंगे। दो-दो मोबाइल और लैपटॉप विद इंटरनेट से चिपके रहेंगे। किसी से बात भी करेंगे तो हर समय अपने पद की जिम्मेदारी और व्यस्तता का राग अलापते।

ऐसे में इनसे मिलते समय या तो आप अंडर प्रेशर आ जाएंगे या फिर इन्फिरियॉर्टी काम्प्लेक्स से घिर जाएंगे। इनकी बातें सुन कर लगेगा लानत है यार हम भी कोई काम करते हैं लाइफ है तो इनकी। कभी किसी मीटिंग में तो कभी किसी होटल में टाइम इतना कीमती कि बाथरूम तक में मोबाइल ले कर जाते हैं।

ऐसे में अगर कोई यह पूछ ले भाई साहब आप करते क्या हैं तो उनके मुंह का स्वाद बिगड़ जाता है सच पूछिए तो दिन भर काम नाम की चाज ही नहीं है इनके पास ये तो बस पद के बोझ से दबे जा रहे हैं और इस हद तक दबे हैं कि खुद भी त्रस्त हैं और परिचितों तक को तंग करके रखे हुए हैं।

मैं तो इनसे बस इतना कहना चाहता हूं, हुजूर, इस गरीब और लोकतांत्रिक देश में कभी तो पद के भार से मुक्त होइए और काम के बोझ को उठाइए जिससे देश के आम आदमी का कुछ भला हो सके।

murlimanohars@yahoo.com

राजेंद्र उपाध्याय

इस बरस मैं तुम्हें

पिछले बरस मैंने तुम्हें कुछ नहीं दिया

इस बरस मैं देना चाहता हूं वो सब
जो पैसे से नहीं खरीदा जा सकता
जो कभी चुराया नहीं जा सकता
मैं देना चाहता हूं तुम्हें वो सब
जो कभी किसी ने किसी को न दिया होगा।

इस बरस मैं वो सब देना चाहता हूं
जो पिछले बरस
और उससे पिछले बरस नहीं दे सका था
जो अगले बरस
और उससे अगले बरस नहीं दे पाऊंगा।

इस धरती के सब फूल छोटे-बड़े
असंख्य तारागण
नदियों और समुद्र में छिपे रत्न, मोती, सीपियां
असंख्य फसलें असंख्य खेतों की
सब दे जाऊंगा।

एक ऐसा कैलेंडर
जिसे कभी दीवार से उतारा न जाएगा
जो बरसों बरस तुम्हारे साथ रहेगा।

बरसों बरस तुम्हारे साथ रहेगा वो सब
उम्र भर
तब भी जब मैं नहीं रहूंगा।

इस बरस मैं तुम्हें दे जाऊंगा वो सब
जो बैंक में नहीं मिलता
जो हाट बाजार में नहीं बिकता
जिसका 'ऑर्डर' नहीं दिया जा सकता
जो किसी पेड़ पर, किसी खेत में नहीं मिलता
जिसे 'डाउनलोड' नहीं किया जा सकता।

rajendra.upadhyaya58@gmail.com

दफ्तर जाने के लिए

पूरन सरमा

दफ्तर में तो कैसे भी जाओ बाकी सोसाइटी में दिखाओ जो भी जलवे दिखाने हैं

दफ्तर जाने के लिए मुझे बहुत सी तैयारियां करनी पड़ती हैं। दफ्तर जाने का मतलब यह तो है नहीं कि साबुन से नहाओ भी मत या रोजाना शेव मत बनाओ। दफ्तर में मेरे कई साथी हैं। वे इसे वेस्टेज मानते हैं। उनका तर्क यह है कि दफ्तर कोई निजी कार्य या सगे संबंधी का काम तो है नहीं जो रोज एक रुपया का ब्लेड खराब करो, साबुन खराब करो, चेहरे को चमकाने के लिए क्रीम लगाओ, बाल काले करो अथवा मूंछों की करीने से कटाई-छंटाई करो। जबकि मेरा मानना है कि दफ्तर से वेतन मिलता है, घर चलता है और वहां महिलाएं काम करती हैं इसलिए थोड़ा शऊर से ही जाना चाहिए। मेरे साथी कहते हैं, 'भाई शर्मा, क्या तुम्हें कोई एक्स्ट्रा इन्क्रीमेंट मिलेगा जो इतना सज-धज कर आते हो। क्यों बेकार में धन और समय का अपव्यय करते हो।'

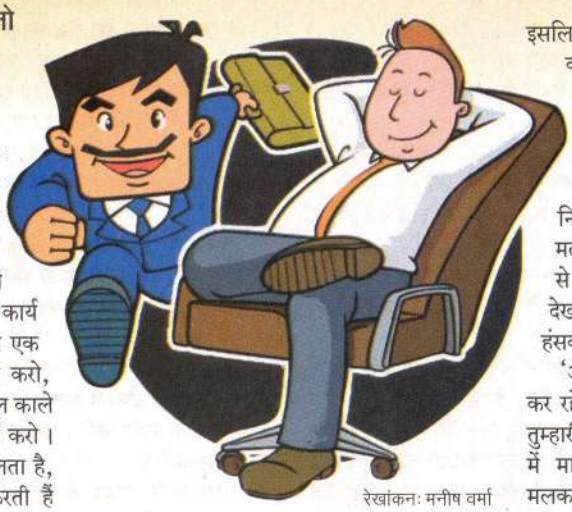

रेखांकनः मनीष वर्मा

मैं कहता हूं, 'यारो, क्या सीधे बिस्तर से निकल कर कुर्सी पर आ बैठते हो। कभी मिसेज मलकानी के बारे में भी सोचा है, जो आप लोगों से बात करना तो दूर, पल भर को नजर भरकर भी देखती तक नहीं। एक मैं हूं जिससे वह घंटों हंस-हंसकर बतियाती हैं।'

'ओह तो शर्मा यह सब मिसेज मलकानी के लिए कर रहे हो। भाभी जी को पता चल गया न तो वे तुम्हारी यह सारी सजावट को तेल लेने भेज देंगी। घर में माथाफोड़ी करते हो और दफ्तर में मिसेज मलकानी को अपनी बत्तीसी दिखाते हो। हम मलेच्छों को देखो जो पांच पैसे अपने ऊपर इस दफ्तर के लिए खर्च नहीं करते और शाम को रिश्वत के तीन सौ रुपए और मार ले जाते हैं। पैसा हो तो भैया हर समस्या का समाधान है। एक साथी बोला।

मैंने कहा, 'ईमान, धर्म और सिद्धांत भी तो जीवन में कोई मायने रखते हैं। साफ-सुथरे ढंग और सलीके से दफ्तर आना मैं गलत नहीं मानता। किसी का काम न करना और करना तो रिश्वत खाकर, यह मेरी समझ से परे है।'

दूसरा साथी बोला, 'पहले तो अपने पर जो शऊर से आने का जो इन्वेस्टमेंट कर रहे हो, उसे बंद करो ताकि हजार- दो हजार की यह बदखर्ची तो बचे। रही बात मलकानी की तो भैया उसे कैंटीन में डोसा तुम्हीं खिलाते हो, वह तो कभी पेमेंट नहीं करती। उम्रदराज हो गए, चेहरा सारी असलियत बता रहा है तो क्यों यथार्थ से कतराते हो ?'

'इसका मतलब दफ्तर जाने के लिए मैं दाढ़ी से भरा चेहरा, रूखे बाल और टाटंबरी कोट पहनकर आऊं। पांवों में हवाई चप्पल और छकड़ा साइकिल लेकर मैं दफ्तर जाऊं। तुम कहना क्या चाहते हो ?' मैंने कहा तो वर्मा जी ने अपनी पूरी बत्तीसी निकाली और कहा, 'अच्छा भैया, पत्थर से दिल लगाया और दिल पर चोट खाई। नहीं समझो तो मत समझो लेकिन अपना फलसफा रखो अपने पास। हमें हमारे हाल पर छोड़ दो। कभी ब्याज पर रुपया उधार लेना हो तो संकोच मत करना। बता देना, हमारे पास कालाधन बहुत है। हम तो सिर्फ इतना सा समझा रहे थे कि भाई दफ्तर में तो कैसे भी यानी हमारी तरह आ जाओ। बाकी सोसाइटी में दिखाओ जो भी जलवे दिखाने हैं।' इतना कहकर वे सब चले गए लेकिन मुझे विचार विमग्न कर गए।

pooransarma@gmail.com

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

कमी

मैं उस शहर में हूं
जहां सांसें गिरवी हैं
और जुबान कैदखाने में
आस-पास की वह भीड़
जो बैसाखियों पर टिकी है
जिंदगी की रेस जीत चुके
योद्धाओं को असहाय चुनौती देती है
वर्तमान युग में
अधूरी सत्ता उनके पास है
जो बस नौटंकी में
ढोल पीट सकते हैं
और वे जो
कुछ कर सकने की सामर्थ्य रखते हैं
जंजीरों में बांध
कैदखाने में फेंक दिए जाते हैं
बस एक कमी के कारण कि
वे सही को सही और गलत को गलत
बोलने का साहस दिखाते हैं।
तमाम बंदिशों के बावजूद

वह जो तुम दे देते

हे प्रभु
वह जो हम तुमसे मांगते हैं
और जो तुम दे देते हो हमेशा
एक सा नहीं होता
जब तुम्हारा दिया हुआ
ज्यादा होता है हमारी उम्मीद से
तो हम खुश होते हैं इतने
कि भूल जाते हैं धन्यवाद देना तक
और जब यह हमारे मांगे हुए से कम होता है
तो तुम्हें याद करते हैं कसक के साथ
जब तुम्हारा दिया हमारे मांग से विपरीत होता है
तो हम सह नहीं पाते और तड़प उठते हैं
यही वह रहस्य है
जहां तुम जीतते हो
और मैं हार जाता हूं
क्योंकि समय के साथ
जब उसकी सार्थकता आती है सामने
तो होता है अहसास कि
जब कभी जो मांगा
वह तुम दे देते तो
हम कब का
नष्ट कर चुके होते
भस्मासुरी प्रवृत्ति से
स्वयं को।

murlimanohars@yahoo.com

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

'जब तक बिका न था, कोई पूछता न था, तुमने मुझे खरीद कर अनमोल बना दिया'

बिकने का हुनर

आजकल यह देश मुझे सिर्फ बाजार नजर आता है। वह जमाना गया जब हम सोचते थे यह देश गरीब, सपेरों और मदारियों का है। अब तो यह भी नहीं कह सकते कि हमारा देश खेतिहर और मजदूरों का है। इस देश में अब बचा है तो सिर्फ बाजार। भावना प्रधान भी नहीं रहा यह देश क्योंकि अब सेंटिमेंटस की मार्केटिंग भी खुले आम होने लगी है, यह दबी-छुपी बात नहीं रही। अर्थ यह कि देश सिर्फ बाजार है और बाजार के अपने नियम कानून होते हैं, इसका अपना जोड़-घटाव होता है और बाजारू चिंतन भावना से आगे का खेल है।

एक बार आप देश के बाजार से सहमत हो जाइए तो जीवन सरल हो जाता है और विश्वास मानिए बीपी जैसी बीमारी इस कॉन्सेप्ट को समझते ही दूर हो जाएगी। दरअसल, हमारी समस्या की जड़ चिंतन से सत्य के संघर्ष में छुपी है। जैसे-जैसे हम सत्य स्वीकारते जाते हैं जीवन में आतंरिक संघर्ष मिटता जाता है और जब चिंतन के स्तर पर झगड़ा निपट जाता है तो एक अजीब सी मानसिक शांति का अनुभव होता है। चिंतन कुछ और कहता है और बाजार के सत्य कुछ और। चिंतन में हमारे अपने संस्कार छुपे होते हैं जबकि बाजार में बस लेन-देन खरीद-फरोख्त। जब देश एक बड़े बाजार में तब्दील हो चुका है तो निश्चित ही इस देश में बस दो काम होंगे। वह हैं बेचने और बिकने का। जहां सामान को बेचना पड़ता है वहीं आदमी की कीमत बिकने का हुनर सीखने के बाद आती है। एक शेर है- 'जब तक बिका न था, कोई पूछता न था, तुमने मुझे खरीद के अनमोल बना दिया।'

जरा गौर से देखिए कि बिकने वालों कि क्या वैल्यू है। बिकता कौन है जो रात-दिन मीडिया में नजर आता है। मार्केट वैल्यू किसकी है जिसने अपने आपको ब्रांड बना दिया। यदि आपने बिकने का हुनर सीख लिया तो समझ लीजिए पांचों उंगलियां घी और सिर कढ़ाई में है। चाहे आप 'लाफ्टर चैलेज' के स्कीनिंग राउंड से बाहर हो चुके हों या वाह-वाह में बस एक बार ताली बजाते दिखे हों। अगर अपनी मार्केटिंग कर सकते हैं तो इस देश के बाजार में उतर जाइए-याद रखिए बिकने का हुनर आपको डेवलप करना पड़ेगा। चौंकिए मत बिकने का हुनर छोटे से बड़े हर स्तर पर पाया जाता है बस आप अपनी आंख पर चढ़े भावनात्मक चश्मे के कारण इसे देख समझ नहीं पाते। जैसे कि किसी ऑफिस में जाइए और कोई काम हो तो पीए से पीयोन तक सब कुछ अंदाज में बात करते हैं अरे साहब काम थोड़ा मुश्किल है पर हो जाएगा हम हैं ना। अगर आप समझदार हैं तो इशारा समझ लीजिए। वैसे ही किसी काम के लिए जब आप किसी की टेबिल पर पहुंचिए और वह कहे चलिए चाय पी कर आते हैं तो काम की गंभीरता के हिसाब से समझ लीजिए कि कहने का अर्थ क्या है ? यानी चाय ढाबे पर पीने भर से काम चल जाएगा या किसी बड़े रेस्तरां में हाई टी देंनी पड़ेगी। कई बार इशारे कुछ और कह जाते हैं जैसे साहब यह काम अपने लेवल का नहीं है पर आप कहिए तो आगे किसी से बात करूं बाकी जो खर्चा-पानी आएगा वह देख लीजिएगा। यह मल्टी लेवल पर खुद को बेचने का मामला है जहां दोनों तरफ से कुछ न कुछ मिलने का स्कोप छुपा हुआ है कई बार तो टूर और गिफ्ट के लिए मार्केटिंग करनी पड़ती है जब कहा जाता है मीटिंग रखनी ही है तो किसी हिल स्टेशन पर बड़े होटल में रख लो। बिकने के हुनर में थोड़ा कॉपी राइट और बेस्ट सेलर बुक का तड़का लगाना हो तो कहिए अगर फिल्म का गाना हिट होता तो गीतकार भी बिकता है। देखने वाली बात यह है कि गीत जब किताब में रहता है तो उसकी सौ किताब भी नहीं बिकती और जब सीडी में आ जाता है तो गली-गली गूंजने लगता है। तब देखते-देखते सेल लाखों में पहुंच जाती है। वैसे ही जब बेस्ट सेलर बन कर बिकने की बात आती है तो राइटर को बिकने के लिए कहीं न कहीं घोर विवाद खड़ा करना पड़ता है चाहे किसी महापुरुष के चरित्र पर लांछन ही क्यों न लगाना पड़े। एक बार यदि आपने अपने देखने का नजरिया बाजारवादी बना लिया तो फिर इमोशनल होने का खतरा नहीं रहेगा और आप अपने आदर्श के बारे में कही जा रही उल्टी-सीधी बात के कारण सेंटिमेंटल होने से बच जाएंगे।

murlimanohars@yahoo.com

रेखांकन: मनीष वर्मा

महबूब इल्हाम

शरारा ...

बहुत दिन हुए
फूल देखा नहीं
ओस चखी नहीं
सुबह सोए रहे
रोज ही दोपहर बाद
दफ्तर में काम आ पड़ा
शाम से मिलने भागे नहीं
रात जागे नहीं
उफ ! बहुत दिन हुए

बहुत दिन हुए
दिल के पाताल में तारा टूटा नहीं
हम से सब खुश रहे
कोई रूठा नहीं
एक लम्हा भी हमने अकेले गुजारा नहीं
आईनों ने भी हम को पुकारा नहीं
क्या हमारी बुझी राख में
कोई जिंदा शरारा नहीं ?

बाग में सैर करते हुए

एक से दिन हैं सब रातें भी एक सी शाम
के धुंधलके में फरिश्ते कहीं रोज खो जाते हैं
राहों में
बिखरे पत्तों को चुप-चुप हवा देखती है,
गुजर जाती है
बाग में सैर करते हुए सोचता हूं मैं ये
नीले आकाश पर देर से ठहरे मटमैले बादल
किसी तौर छट जाते, इस दिल को थोड़ी उदासी
किसी तरह मिल जाती...

mahboobelham@gmail.com

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

मुझे मोबाइल एक अलादीन के चिराग-सा महसूस हुआ। यह पल भर में आम को खास बना सकता है

मोबाइल
क्या-क्या कर सकता है

रेखांकनः मनीष वर्मा

मेरे एक नए ज्वाइनी को मेरे मोबाइल फोन से बड़ी शिकायत है। एक दिन उससे रहा नहीं गया और वह बोला, 'आप अपना मोबाइल बदल क्यों नहीं देते। आजकल तो यह मॉडल बनना ही बंद हो गया है।'

'क्या करना है काम तो चल ही रहा है। रही कॉल रिसीव करने और बातचीत होने की तो उसमें मुझे कोई परेशानी नहीं है। एसएमएस भी चला जाता है और आ भी जाता है।' वह बोला, 'इसकी मेमोरी कितनी है और क्या इसमें मीडिया प्लेयर, सोशल नेटवर्किंग, एमएमएस, पीडीएफ रीडर, मेल चेक करने की फैसिलिटी, डुअल सिम और कैमरा जैसी फैसिलिटी है।' मैंने कहा, 'इसमें मेमोरी तो कहीं दिखाती नहीं, रहा कैमरा और मीडिया प्लेयर तो इन सबका क्या करना है।' वह बोला, 'यही तो प्रॉब्लम है आप जमाने के साथ चलना ही नहीं चाहते और फिर जनरेशन गैप की बात करते हैं। आपको पता भी है मोबाइल क्या कर सकता है।' मैं भी कहां चुप रहने वाला था, 'तुम मुझे इतना भी अनाड़ी मत समझो मोबाइल की रिंग टोन बदलना नहीं आता तो क्या मैं टीवी भी नहीं देखता। अरे एक दो तीन डायल करो और फिर देखो मोबाइल क्या-क्या कर सकता है। रही लाइव डेमो की बात तो मेरा अनुभव जरा विकट है।' मोबाइल गाने सुनवा सकता है। फ्रेंड सर्किल में गप्पे लड़वा सकता है। वह बोला, आप लोगों की प्रॉब्लम यही है कभी भी विज्ञापन का सही अर्थ नहीं समझते। मोबाइल क्या-क्या कर सकता है। वन टू थ्री डायल कर रेसिपी पूछना एक सिंबॉलिक रिप्रेजेंटेशन है इसका अर्थ यह है कि यह आपके लिए बहुत कुछ कर सकता है यहां तक कि यह लाइफ बदल सकता है। आज आप थ्रीजी की मदद से हजारों मील दूर बात कर रहे व्यक्ति का चेहरा और हाव-भाव देख सकते हैं आज मोबाइल में इतने बढ़िया फीचर आ रहे हैं कि लैपटॉप फेल है आप कंप्यूटर पर मेल पढ़ने के साथ ही भरपूर इंटरटेनमेंट का आनंद उठा सकते हैं।' आपसे क्या बताए कि नई पीढ़ी के एंटरटेनमेंट का अर्थ क्या है पर मुझे सचमुच मोबाइल एक अलादीन के चिराग-सा महसूस हुआ। तभी मुझे मोबाइल के कुछ और प्रयोग नजर आए। मोबाइल एक छोटे से मिस्त्री को ठेकेदार और टू लेट सर्विस देने वाले को प्रॉपर्टी डीलर बना सकता है। मोबाइल किसी नेटवर्क से जुड़कर आपको बड़ा डीलर बना सकता है। अरे आज के जमाने में मोबाइल क्या नहीं कर सकता।

खैर मैंने उसे आगाह किया देखो मोबाइल पावर को लाइटली मत लो आज मनी ट्रांसफर तक मोबाइल पर होने लगी है यह मुझे पता है पर एक चीज जो मोबाइल की शक्ति के बारे में तुम्हें नहीं पता होगी वह मैं बता देता हूं। इस बार वह चौंका भला मुझ सा अज्ञानी इस कंप्यूटर युग में गैजेट की पावर के बारे में नई पीढ़ी को क्या बता सकता है। फिर भी उसने कहा चलिए जो मैं नहीं जानता वह आप बता दीजिए। इस बार मैं मुस्कराया यदि मोबाइल को सही तरीके से हैंडल न किया जाए तो यह जीवन में भूचाल ला सकता है। कैरेक्टर पर दाग लगा सकता है और बड़ी से बड़ी कुर्सी से उतारकर सड़क पर बैठा सकता है सो भैया अपन बिना नेट कैमरा और मीडिया प्लेयर के सिंपल मोबाइल से खुश हैं, हमें मोबाइल क्या-क्या कर सकता है जानने के लिए वन टू थ्री नहीं डायल करना है। अपने लिए तो कस्टमर केयर का नौ नंबर ही काफी है जिस पर हम बिल ज्यादा आने की शिकायत भर कर सकें।

वाकई आज उसे भी मेरे सिंपल मोबाइल रखने का लॉजिक इंप्रेस कर रहा था इस हाई-फाई जमाने में इज्जत बची रहे वही क्या कम है।

एनटीपीसी लिमिटेड, आर एंड ई बिल्डिंग, ए 8 ए, सेक्टर-24, नोएडा-201301

आ जा हंस लें!

बंता दुकानदार से : यह क्या चीज है ?
दुकानदार : यह थर्मस फ्लास्क है।
बंता : यह किस काम आता है ?
दुकानदार : यह गर्म चीज को गर्म और ठंडी चीज को ठंडा रखता है।
बंता : मैं एक खरीद लेता हूं।
अगले दिन वह अपने ऑफिस थर्मस लेकर जाता है।
उसके बॉस ने पूछा : यह क्या है तुम्हारे हाथ में ?
बंता : यह थर्मस फ्लास्क है।
बॉस : यह किस काम आता है ?
बंता : यह गर्म को गर्म और ठंडे को ठंडा रखता है
बॉस : वाह ! तुम क्या लाए हो इसमें ?
बंता : दो कप कॉफी और एक बोतल पेप्सी।

तीन आदमी बंता के साथ प्लेन में बैठे थे तभी बंता ने एक आदमी से पूछा आपके देश ने क्या किया है?
पहला आदमी : हमने आसमान में बहुत ऊपर उड़ने वाले प्लेन बनाए हैं।
बंता : क्या सच में ?
पहला आदमी : बहुत ज्यादा नहीं थोड़ा सा नीचे।
बंता ने दूसरे से पूछा आपके देश ने क्या किया है?
दूसरा आदमी : हमने आसमान छूती इमारतें बनाईं।
बंता : क्या सच में ?
दूसरा आदमी : बहुत ज्यादा नहीं थोड़ी सी नीची।
दोनों ने बंता से पूछा आपके देश ने क्या किया है ?
बंता : हमने लोगों को नाक से खाना खाने में सक्षम बनाया है।
दोनों ने पूछा : क्या सच में ?
बंता : नहीं, बस उससे थोड़ा नीचे !

चयन : झरना सरियाल

चुटकी

नेटवर्किंग और वर्चुअल होली

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

नकली पिचकारी से रंग कंप्यूटर स्क्रीन पर उभरते देखे और मुस्करा लिए मानो होली हो गई

राम-राम भैया कैसे हो? चलो हमने मान लिया जवाब मिल गया है। होली का मौका है तो थोड़ा बौरान से हो गए हैं वरना आजकल के जमाने में चलन तो एक्सट्रा कॉन्शस होने का है। हम अपने जमाने को समेट कर होली और सामाजिक ताने-बाने पर फोकस ही कर रहे थे कि दिल बोला आजकल सामाजिक ताना-बाना जैसा शब्द समझ से बाहर है। इसे सोशल नेटवर्किंग कहो तो जल्दी समझ आएगा। सामाजिक ताने-बाने को सोशल नेटवर्किंग लिखने में मुझे थोड़ी झिझक तो हुई पर बात सटीक लगी। होली और सोशल नेटवर्किंग में गहरा साम्य नजर आया मुझे। यह अलग बात है कि आज सोशल नेटवर्किंग एवरग्रीन और बड़ी दुनिया की ओर इंगत करता है। अर्थ यह कि होली सोशल नेटवर्किंग के आगे फीकी है। जब हमारा सबसे कलरफुल फेस्टिवल ही फीका पड़ जाए तो जीवन में रंग कहां से भरेंगे। आज की सोशल नेटवर्किंग हमारे जमाने के सामाजिक ताने-बाने को छू भी नहीं सकती। हां, वर्चुअल अहसास जरूर दिला सकती है और तभी मुझे भांग का दौरा पड़ा। भीतर से आवाज आई – अबे ई होली है। इसमें दिमाग नहीं लगाते। जितना दिल को दौड़ा सको और इधर-उधर की फेंक सको उतना मजा है। वैसे भी बुरा न मानो होली है तो आज भी चलता है। इतना सुनते ही कॉन्शस माइंड बोला, 'ठीक-ठीक बोल कि कहना क्या चाहता है चिरकुट।'

वह बोला, 'बेटा तुम चुप रहो हमें आज छलांग लगाने दो। तुम्हारे लिए आज का दिन नहीं है। अगर इंटलेक्चुअली ही सोचना है तो होली छोड़ दो और होली मनानी है तो दिमाग किनारे लगा दो। विश्वास मानिए इसके बाद मेरा वैचारिक ट्रांसफॉर्मेशन हो गया और दिल ने कहा होली हमारे जमाने में सामाजिक ताना-बाना बुनने का काम करती थी और सोशल नेटवर्किंग इस जमाने का सामाजिक ताना-बाना बुन रही है। नतीजा यह कि जैसे नेट वर्चुअल वर्ल्ड है, वैसे ही हमारे रिश्ते-नाते और त्योहार भी वर्चुअल हो गए हैं। कहां पहले हफ्तों होली की तैयारी चलती थी। आने-जाने वालों के लिए गुझिया-पापड़ बनते और कई-कई दिन पहले से किसे और कैसे रंगना है, इसका प्रोग्राम बनता। वही आजकल घर गंदा होने और त्योहार में मिलने-जुलने वालों के लिए तरस जाता है। कारण सब कुछ वर्चुअल हो गया है। सुबह होते ही सौ पचास एसएमएस टपका दिए और कुछ संदेश पढ़ लिए तो हो गई होली। कुछ साफ-सुथरे लोग सुबह से ही नहा-धो के इंटरनेट पर बैठ गए। थोड़ी होली की शुभकामना वाली मेल देखी, कुछ नकली पिचकारी से नकली रंग कंप्यूटर स्क्रीन पर उभरते देखे और मुस्करा लिए मानो होली के हंसगुल्ले पूरे हो गए। कुछ ने पेपर में छपे चुटकले पढ़े, कुछ रंगीन पॉलिटिकल खबरें पढ़ कर साफ-सुथरी होली का मानसिक आनंद उठा रहे हैं। भाई साहब यह वर्चुअल होली नहीं तो और क्या है। इसमें आपको किस कोने से होली की एसेंस नजर आती है, न फाग है, न ठिठोली, न रास-रंग, न गवैयों की टोली, न भांग है, न ठंडई। न गले मिलने का रिवाज बचा और न बिना पूछे रंगने की हिम्मत। बाकी बची-खुची कसर बच्चों के इम्तहान ने निकाल दी है। शाम को जमने वाला होली मिलन समारोह भी लाउडस्पीकर पर बैन के कारण फीका हो गया है। न गाना, न बजाना, ज्यादा शौक है तो मोबाइल पर रेडियो मिर्ची सुन लो। मिल गई एंकर की तरफ से शुभकामना! वैसे भी इस देश में अब मुखौटा लगा कर शुभकामना बांटने और चिंता जाहिर करने के अलावा होता ही क्या है!

सभ्य लोग होली टीवी स्क्रीन के आगे बैठ कर मनाते हैं। रंग खेलना असभ्यता की निशानी हो गई है। गोया हमने एक झटके में अपने पूर्वजों को असभ्य घोषित करने में देर नहीं लगाई। वर्चुअल दुनिया में जीते-जीते हम कुछ ज्यादा ही सभ्य हो गए हैं। इस सभ्यता की चादर में हंसना-बोलना, मिलना-जुलना, ठहाके लगाना घोर असभ्यता की निशानी है। सो होली जैसे त्योहार बस एसएमएस तक ठीक हैं और मेल-जोल नेटवर्किंग तक। आपसे अनुरोध है कि अपने जमाने के पुराने साथियों के साथ गले मिलते पुरानी रंगी-पुती फोटो ड्राइंग रूम में जरूर टांग दीजिए जिससे आने वाली पीढ़ी को घर वाले बता सकें कि हमारे घर भी रीयल होली मनाई जाती थी और रिश्ते सोशल नेटवर्किंग साइट के बाहर भी पाए जाते थे।

एनटीपीसी लिमिटेड, आर एंड ई बिल्डिंग, ए 8 ए, सेक्टर-24, नोएडा – 201301

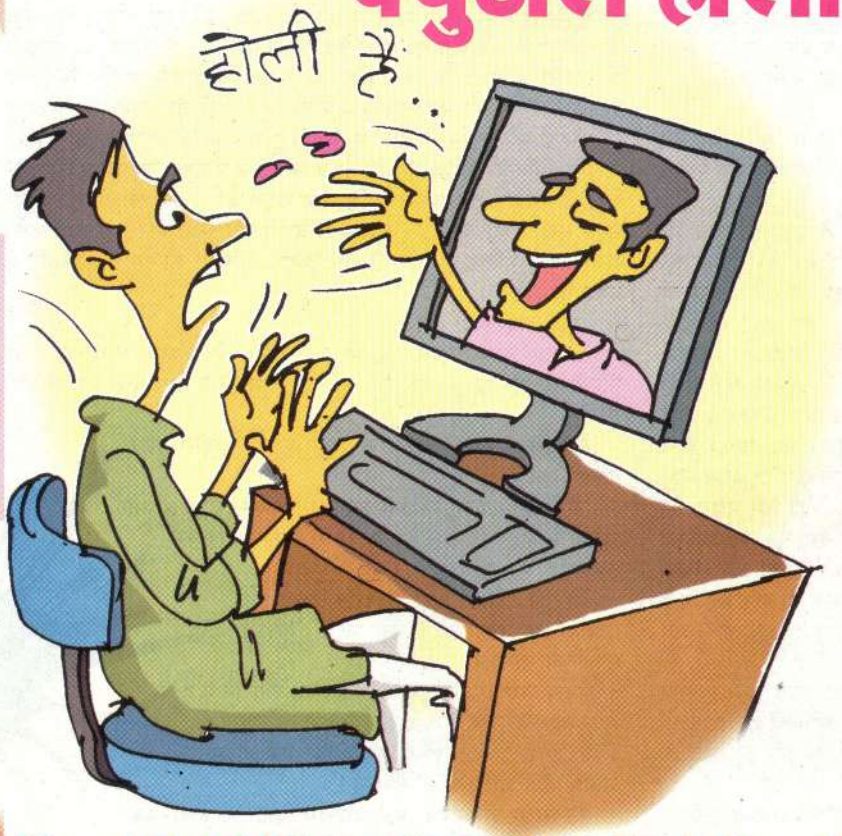

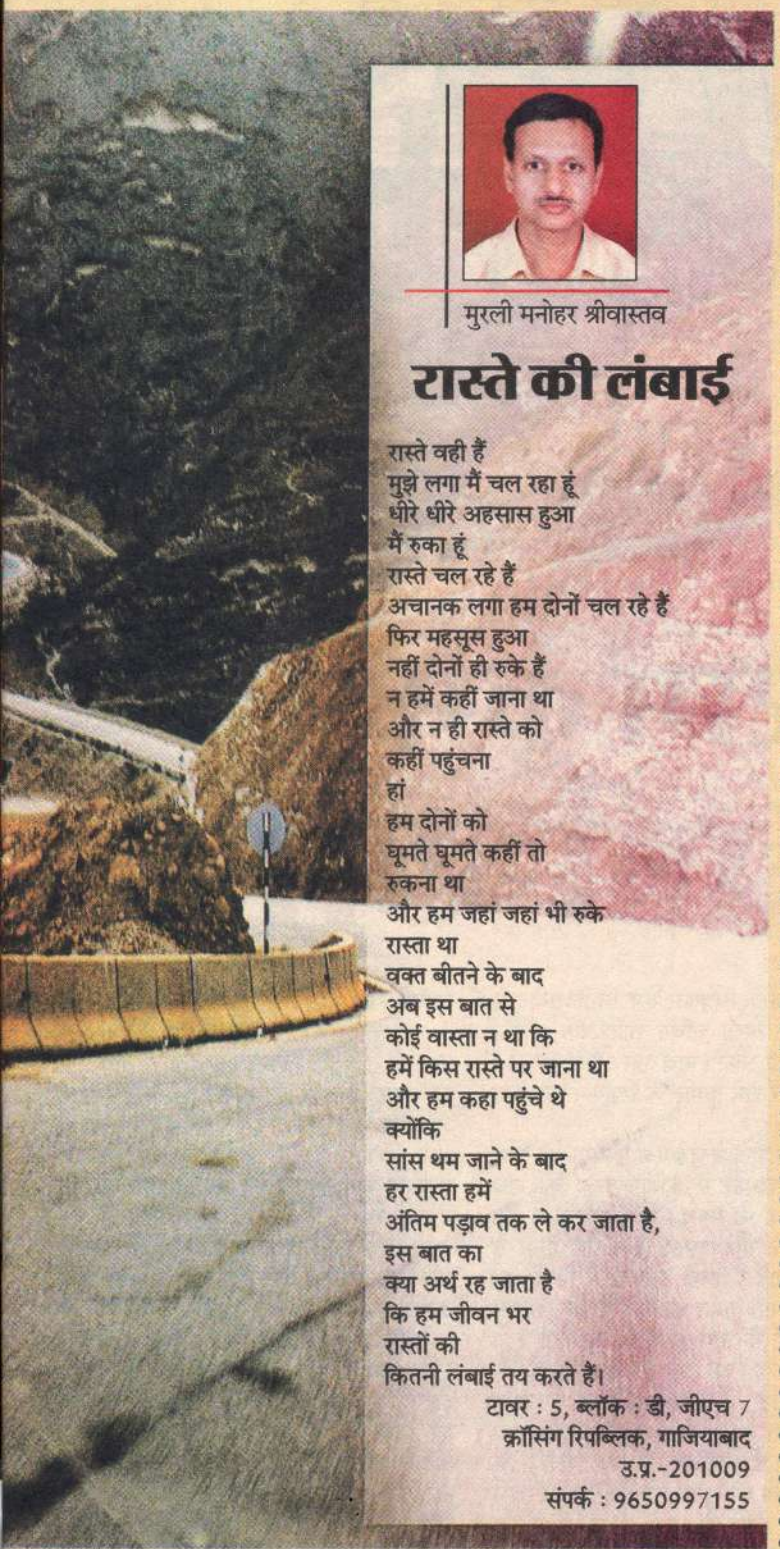

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

रास्ते की लंबाई

रास्ते वही हैं
मुझे लगा मैं चल रहा हूं
धीरे धीरे अहसास हुआ
मैं रुका हूं
रास्ते चल रहे हैं
अचानक लगा हम दोनों चल रहे हैं
फिर महसूस हुआ
नहीं दोनों ही रुके हैं
न हमें कहीं जाना था
और न ही रास्ते को
कहीं पहुंचना
हां
हम दोनों को
घूमते घूमते कहीं तो
रुकना था
और हम जहां जहां भी रुके
रास्ता था
वक्त बीतने के बाद
अब इस बात से
कोई वास्ता न था कि
हमें किस रास्ते पर जाना था
और हम कहा पहुंचे थे
क्योंकि
सांस थम जाने के बाद
हर रास्ता हमें
अंतिम पड़ाव तक ले कर जाता है,
इस बात का
क्या अर्थ रह जाता है
कि हम जीवन भर
रास्तों की
कितनी लंबाई तय करते हैं।

टावर : 5, ब्लॉक : डी, जीएच 7
क्रॉसिंग रिपब्लिक, गाजियाबाद
उ.प्र.-201009
संपर्क : 9650997155

संतोष कुमार झा

मेरे भीतर एक इंसान अभी बाकी है

सच बोलने को ललक जिंदा है अभी
झूठ को सच कहने में जबान लड़खड़ाती है
जुल्म को देखकर लहू उबलता है अब भी
बेबसी पर किसी की, आह निकल जाती है
एहसास की गहराई में तूफान अभी बाकी है
मेरे भीतर एक इंसान अभी बाकी है।

खुद्दारी पर नाज होता है अब भी
मायूसी में अब भी चीख निकल जाती है
ईमान की फतह पर अब भी फख होता है
नाइंसाफी पर आग सी लग जाती है
शायद मेरे अंदर का ईमान अभी बाकी है
मेरे भीतर एक इंसान अभी बाकी है

खुदा की कसम का अब भी खौफ होता है
मजलूमों को देख आंख भीग जाती है
दिल की आवाज अब भी सुनाई पड़ती है
उम्मीदों की सदाएं जेहन में गुनगुनाती है
कटे बाजुओं में ही सही काफी उड़ान बाकी है
मेरे भीतर एक इंसान अभी बाकी है।

उम्मीद कों के सपने आंखें अब भी देखती हैं
नाउम्मीदी पर शर्म-सी आ जाती है
इबादत में अब भी यकीन होता है
दुआएं आज भी सुकून लाती है
जिंदगी जीने का अरमान अभी बाकी है
मेरे भीतर एक इंसान अभी बाकी है।

पी-76, पी ब्लॉक, रेलवे अधिकारी आवास
बधवार पार्क, कोलाबा,
मुंबई-400005
Jhasantosh_kumar@yahoo.com